मुक़द्दस रसूल

बजवाब

रंगीला रसूल

लेखक

शैख़ुल इस्लाम अल्लामा अबुल वफ़ा सनाउल्लाह अमृतसरी

प्रकाशक

अल किताब इंटरनेशनल

मुरादी रोड, बटला हाउस, जामिया नगर,

नई दिल्ली-110025

पुस्तक का नाम	:	मुक़द्दस रसूल बजवाब रंगीला रसूल
लेखक	:	शैख़ुल इस्लाम अल्लामा अबुल वफ़ा सनाउल्लाह अमृतसरी
संख्या	:	एक हज़ार
प्रकाशन	:	2011
मूल्य	:	
प्रकाशक	:	**अल-किताब इन्टर नेशनल** जामिया नगर, नई दिल्ली-110025
कम्पोज़िंग	:	NANO COMPUTECH, Delhi-110032
मिलने का पता	:	**S. N. PUBLISHERS** P. O. BOX NO. 9728 JAMIA NAGAR, NEW DELHI-110025 **Phone:** 9312508762, 9310008762, 9310108762, 26986973 **E-mail:** al-kitabint@yahoo.com

प्रकाशक

अल किताब इंटरनेशनल

मुरादी रोड, बटला हाउस, जामिया नगर,
नई दिल्ली-110025

विषय सूची

रिसाला "मुक़द्दस रसूल" पर उलमा-ए-किराम की राएं

कहती है तुझको ख़ल्क़े ख़ुदा ग़ायबाना क्या

आर्य समाजी जब कभी उचित जवाब पाते हैं तो कहा करते हैं कि यह जवाब सिर्फ़ उत्तरदायी की राए है। और उलमा-ए-इस्लाम इस जवाब के क़ायल नहीं। इसलिए इस जवाब पर उलमा-ए-किराम की राएं भी ली गईं हैं जो निम्न हैं :

हज़रत उलमा-ए-देवबन्द - ज़िला सहारनपुर

"रंगीला रसूल" छाप कर आर्य समाज ने जो नमूना सभ्यता और आर्यों की सच्चाई का पेश किया है, वह हक़ीक़त में समाजी लिट्रेचर की मशहूर विशेषताएं दिल दुखाना, सख़्त बातें, झूठ बोलना और अंधे पक्षपात का एक ऐसा पूर्ण संग्रह है, जिसमें समाज के पहले अध्यापक (स्वामी दयानन्द) की नैतिक शिक्षा के विचार पूरी सफ़ाई और स्पष्टता से नज़र आ रहे हैं।

ऐसी गन्दी और दुर्गन्ध तहरीर किसी आर्य की तरफ़ मन्सूब हो तो हमें कुछ भी हैरत नहीं हां हैरत अगर है तो मुसलमानों के अत्यन्त दर्जे के धैर्य पर कि आज अपने पाक रसूल की शान में ऐसे गन्दे और कमीने हमले देखकर भी उनमें कोई हरकत पैदा नहीं होती।

فَيَا لَيْتَنِيْ مِتُّ قَبْلَ هٰذَا وَكُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا ۝

हक़ तआला अच्छा बदला दे मौलवी अबुल वफ़ा सनाउल्लाह साहब अमृतसरी को जिन्होंने "मुक़द्दस रसूल" लिखकर ऐसी गन्दगी का जवाब बड़ी पवित्रता से, अंधेरे का उजाले से और असभ्यता का बड़ी सभ्यता से दिया और साबित कर दिया कि उस रसूल करीम सल्ल० के नाम लेने

वाले जिनके आगमन की मन्शा ही यह थी।[1] इस गई गुज़री हालत में भी दुनिया के बड़े बड़े सभ्यता के दावेदारों से बढ़कर सभ्य हैं। सच यह है कि मौलवी साहब ने अपने ख़ास रंग और संक्षिप्त वाक्यों में रंगीले महाशय का सारा ताना बाना बिखेर दिया है और अपने क़लम की हरकत से झूठ व नफ़रत के वे सब गन्दे पर्दे एक दम चाक कर दिए हैं जिनके नीचे रंगीले महाशय ने उस मुक़द्दस रसूल की पाक ज़िंदगी को नंगा करना चाहा था।

खुदा तआला मौलवी साहब की इस ख़िदमत को क़ुबूल फ़रमाए और हमें काम करने की हिम्मत प्रदान करे।

جزاہ اللہ عن سائر المسلمین جزاء حسنًا و وفقہ وایانا لما یحب ویرضٰی

(हस्ताक्षर उलमा-ए-किराम)

(मौलाना) मौलाना शब्बीर अहमद उसमानी (मौलाना) सिराज अहमद (मौलाना) हबीबुर्रहमान। (मदरसा देवबन्द)

नोट : दस प्रतियां क़ीमतन भेज दें। (हबीबुर्रहमान)

मौलाना मुरतज़ा हसन साहब

मैंने रिसाला "मुक़द्दस रसूल" देखा। पक्षपाती आर्य की असभ्य आपत्तियों का बड़ी संजीदगी से जवाब दिया है। अल्लाह तआला आर्य समाज को हिदायत दे और मुसलमानों को दृढ़ता प्रदान करे। मौलवी सनाउल्लाह साहब की कोशिश प्रशंसनीय है।

جزاہ اللہ تعالٰی عنی وعن سائر المسلمین خَیرُ الجزاء وصلی
اللہ علٰی خیر خلقہ سیدنا وآلہ وصحبہٖ الٰی یَوم الجزاء۔

—बन्दा मुरतज़ा हसन (देवबन्द)

1. मैं इसलिए रसूल होकर आया हूं कि उच्च आचरण को पूरा करूं। हुज़ूर अलैहिस्सलाम का फ़रमान है। (लेखक)

मौलाना ऐज़ाज़ अली साहब

मैंने रिसाला "मुक़द्दस रसूल" का अध्ययन किया। मौलाना सनाउल्लाह साहब के जवाबात आर्यों के मुक़ाबले में हमेशा सकारात्मक साबित हुए हैं और वह संक्षिप्त शब्दों में बहुत से जवाबात स्पष्ट और कुछ इशारों में देते हैं। इसमें भी उन्होंने ज़माना के नए पन और घटनाओं की तहक़ीक़ से काम लिया है और अकसर मौक़ों पर आरोपित जवाब देकर इस्लाम के बचाव का फ़रीज़ा अदा किया है।

मैं दुआ करता हूं कि ख़ुदावंद आलम इस रिसाले को मक़बूल और इस्लाम और अहले इस्लाम को इससे लाभान्वित करे। आमीन

मुहम्मद ऐज़ाज़ (देवबन्द)

8 सफ़र, 1343 हि०

उलमा दारुल हदीस मदरसा रहमानिया दिल्ली

किसी आर्य ने एक रिसाला "रंगीला रसूल" लिखा है। जिसमें मुसलमानों के दिल दुखाने का कोई पहलू नहीं छोड़ा, मुसलमानों के इत्मीनान व तसल्ली के लिए मौलाना अबुल वफ़ा सनाउल्लाह साहब अमृतसरी ने इसके मुंह तोड़ जवाब में बड़ी नर्मी और सभ्य स्वर से एक रिसाला लिखा है जिसका नाम "मुक़द्दस रसूल" है। मैंने इस रिसाले को ध्यान से देखा, हर मज़मून का जवाब इसका बड़ा सच्चा और न्यायी और हर वाक्य शोध पूर्ण और सभ्य है। उत्तरदायी को यह हक़ था कि जवाब तुर्की-ब-तुर्की उसी स्वर के साथ देते जो रंगीला महाशय ने अपनाया है मगर बहुक्म 'व जादिलहुम बिल्लती हि-य अहसन' जो हमारे रसूल करीम सल्ल० की शिक्षा है, बड़ी नर्मी और सभ्यता के साथ दिया है, और एक शब्द भी असभ्य इस्तेमाल नहीं किया है।

والسلام على من اتبع الهدى ورشد واهتدى

हस्ताक्षर उलमा-ए-किराम दिल्ली

(मौलाना) अबू ताहिर बिहारी, (मौलाना) अहमद मऊ ज़िला आज़मगढ़, (मौलाना) अबू इरफ़ान अब्दुर्रहमान (मदरसा रहमानिया, दिल्ली)

हज़रत ख़्वाजा हसन निज़ामी साहब दिल्ली

मैंने रिसाला "मुक़द्दस रसूल" लेखक जनाब मौलाना सनाउल्लाह साहब अमृतसरी को प्रकाशित होने से पहले पढ़ा। वह ठीक समय पर ज़रूरत के तहत लिखा गया है और उसमें जितने लेख हैं वे सब तर्क संगत और तहक़ीक़ करने वाले को सन्तुष्ट करने वाले हैं।

मौलाना की सारी ज़िंदगी इस्लाम की सेवा में गुज़री, इस्लाम दुशमनों के हर हमले का तुरन्त जवाब उनकी तरफ़ से प्रकाशित होता है। यह रिसाला भी जिन असभ्य किताबों के जवाब में है, उन्होंने मुसलमानों को बड़ा उत्तेजित कर रखा है।

मुझे उम्मीद है कि मुसलमान इस रिसाले की कापियां ख़रीद कर मुफ़्त तक़्सीम करेंगे और मैं भी क़ीमत मालूम होने के बाद पचास कापियां इसकी ख़रीद कर तक़्सीम करूंगा। इंशाअल्लाहु तआला!

हसन निज़ामी

2 सितम्बर, 1924 ई०

मौलाना अब्दुल बारी साहब लखनवी

मौलाना मुकर्रम, अस्सलामु अलैकुम। मैं शुरू ही से आपकी किताबों का जो आर्य के तोड़ में लिखी गई हैं अध्ययन करता रहा हूं। और इस फ़िरक़े के हालात की हमेशा आप ही के लेखों से मुझे जानकारी होती है। मुझे आपकी इस किताब "मुक़द्दस रसूल" से आशा के अनुकूल लाभ हुआ, यह बहुत मुनासिब रिसाला है "रंगीला रसूल" रिसाला का ज़िक्र सबसे पहले मैंने गांधी की ज़बान से सुना था। वह पंजाब के हिन्दुओं की पत्र पत्रिकाओं के बड़े उत्सुक थे और उनके तोड़ के भी जो मुसलमानों

की तरफ़ से थे। शिकायत करते थे, मुझे तो यह ख़्याल था कि जिस रिसाले को गांधी ने मुसलमानों का दिल दुखाने वाला बताया था, उसको मुसलमान जिस हद तक दिल दुखाने वाला समझते वह कम है। कहीं इसका जवाब कोई बिगड़े दिल तुर्की ब तुर्की न दें तो इस्लामी शिक्षा के विरुद्ध है। यह ख़्याल ग़लत निकला और आपने इस ख़िदमत को अंजाम दिया जो विद्वानों के शायाने शान है। मुझे आपके शुक्रिये की ज़रूरत नहीं सिर्फ़ इतना कहना काफ़ी है।

फ़क़ीर मुहम्मद अब्दुल बारी

2 सफ़र, 43 हिजरी

मौलाना हाफ़िज़ इबराहीम साहब, सियालकोटी

اَلْحَمْدُ للهِ وَسَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى۔ اما بعد!

हाल ही में आर्यों ने एक किताब "रंगीला रसूल" प्रकाशित की है। इसके लेखक ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक ज़ात के बारे में बहुत बकवास की है। इसके जवाब में शेरे इस्लाम, सरदार अहले हदीस जनाब मौलाना मुकर्रम मौलवी सनाउल्लाह साहब मौलवी फ़ाज़िल अमृतसरी ने यह किताब "मुक़द्दस रसूल" लिखी है। जवाब की ख़ूबी, उसकी संजीदगी और बयान की ख़ुश उस्लूबी की मोहताज नहीं, क्योंकि ख़ुदा तआला ने जनाब मौलाना साहब को इसकी ख़ास योग्यता प्रदान की है। मैं तो उनकी इस किताब का नाम "मुक़द्दस रसूल" रखने ही पर क़ुरबान हूं। अल्लाह तआला जनाब मौलाना को इसका अच्छा बदला दे और उनके अमल को क़ुबूल फ़रमाए, आपकी उम्र में तरक़्क़ी व बरकत दे और लोगों को इससे लाभान्वित करे। (सियालकोट, 6 सितम्बर 1924 ई०)

मौलाना मुहम्मद मुबारक हुसैन साहब, मेरठ

आर्यों की तरफ़ से जो किताब "रंगीला रसूल" के नाम से प्रकाशित हुई उसका जवाब लिखने की तरफ़ मैंने क़लम को कष्ट दिया था। मगर

आज (3 सितम्बर, 1924 ई०) की डाक से शेरे पंजाब मौलाना सनाउल्लाह साहब का भेजा हुआ रिसाला पहुंचा, रिसाला देखने के बाद मैंने विचार rChhy[1] कर दिया कि अब ज़रूरत बाक़ी नहीं रही। मौलाना ने जिस ख़ूबी से रिसाला लिखा है और आर्य के ज़हरीले असर और बेजा हमलों का जिस योग्यता और तहक़ीक़ से बचाव किया है। वह बयान का मोहताज नहीं। मैं दुआ करता हूं कि अल्लाह तआला मौलाना सनाउल्लाह साहब की इज़्ज़त की ज़िंदगी में वृद्धि करके इस्लाम को उनसे लाभ पहुंचाए। आमीन!

ख़ादिमुल उलमा मुहम्मद मुबारक हुसैन महमूदी मुदर्रिस अव्वल व नाज़िम मदरसा दारुल उलूम

जामा मस्जिद, मेरठ शहर

3 सितम्बर, 1924 ई०

जनाब सय्यद ग़ुलाम भीक साहब नाज़िम जमीअत मर्कज़िया तब्लीग़ इस्लाम, शहर अंबाला

आर्य समाज के कार्यकर्त्ता और प्रचारक इस्लाम अहले इस्लाम और पैग़म्बर इस्लाम अलैहिस्सलातु वस्सलाम के बारे में जो ज़हर उगलते रहते हैं उसकी ताज़ा मिसालों में वह किताब भी है जिसका नाम "रंगीला रसूल" रखा गया है। और जिसके लेखक को अपना नाम लिखने का नैतिक साहस भी नहीं हुआ। मौलाना अबुल वफ़ा सनाउल्लाह साहब अमृतसरी मुनाज़िरा के मैदान के पुराने खिलाड़ी हैं यह कब हो सकता था कि मौलाना इस किताब का जवाब न लिखते। चुनांचे आपने उसका जवाब लिखा और "मुक़द्दस रसूल" नाम रखा। इस जवाब में गुमनाम व नक़ाबपोश आपत्तिकर्त्ता के हथकंडों की ख़ूब पोल खोली गई है। इस

1. आप भी जवाब लिखिए बल्कि और उलमा भी लिखें। क्या इस्लाम छोड़ने के अनेक जवाब न हुए थे। (लेखक)

जवाब का अंदाज़े बयान दिलचस्प है और चूंकि गुमनाम आपत्तिकर्त्ता का मक़सद लोगों को धोखा देना है। इस वास्ते मौलाना ने भी जवाबात ऐसे लिखे हैं जो बड़े ही सरल हैं। ऐसे ज़हर का तोड़ ऐसा ही होना चाहिए था।
ज़्यादा नियाज़ वस्सलाम

बन्दा ग़ुलाम भीक नेयरंग, मुम्बई

8 सितम्बर, 1924 ई०

मौलाना मुहम्मद अबुल क़ासिम सैफ़ मुहम्मदी बनारसी

कुछ दिनों पहले हिन्दू मुस्लिम एकता ने वह पेड़ उगा दिया था कि पक्षपात व मतभेदों का नाम व निशान बाक़ी न रहा था। खुदा जाने इस मुबारक पेड़ को किसकी नज़र बद लगी कि बिगाड़ शुरू हो गया और गांधी के कथनानुसार "आर्य समाज की आदत लड़ाई व तंगनज़री है" आर्यों के पूजनीय श्रद्धानन्द जी ने जेल से बाहर आते ही शुद्धी संगठन के ज़हरीले पेड़ की खेती शुरू की जिसने आपसी मेल मिलाप के मुबारक ज़माना को सपनों में बदल दिया और उस पेड़ के कड़वे फल किताब "रंगीला रसूल" और "विचित्र जीवन" आदि की शक्ल में बाज़ार में आए। खुदा भलाई प्रदान करे मौलाना शेरे पंजाब को कि उन्होंने सबसे पहले इस हमले का जवाब दिया और क्या ख़ूब जवाब दिया। माशाअल्लाह इस्लाम विरोधियों के जवाब में आपका जवाब भारी है और फिर तर्ज़े तहरीर बड़ा सहज जिसमें सख़्त कलामी का अंश तक नहीं है और यह कुछ इसी रिसाला के साथ ख़ास नहीं है बल्कि आपकी सारी किताबें इसी तरह दिल दुखाने से पाक हैं।

جزاہ اللہ خیرا۔ ؎

دعائك يا فخر الافاضل واجب علیٰ کل ذی فضل بدھر مظلم

—मुहम्मद अबुल क़ासिम, बनारसी

मौलाना अब्दुल माजिद साहब क़ादरी बदायूंनी

रिसाला "मुक़द्दस रसूल" लेखक अल्लामा अबुल वफ़ा खत्म होने से पहले पृ० 64 तक पढ़ा। आर्यों की बकवास पर ख़ामोशी बेहतर लेकिन उनके हमले बेशक कभी कभी जवाब दिए जाने योग्य हैं कि शायद कोई भली रूह निकले जो इन बकवासों और आरोपों का जवाब देकर हक़ व सच्चाई के क़ुबूल करने की तड़प दिखाए। 'वमा ज़ालि-क अलल्लाहि बि-अज़ीज़' और कभी कभी अ परिचित व ग़ैर मुस्लिमीन को उनके जवाब से सत्य व हक़ीक़त का पता चल जाता है। हिन्दुस्तान के मशहूर मुनाज़िर आर्य अल्लामा अबुल वफ़ा अमृतसरी ने जिस सहजता, संजीदगी व तहक़ीक़ से रिसाला "मुक़द्दस रसूल" लिखा, वह प्रशंसनीय व सन्तोषजनक है।

मेरे ख़्याल में इसको जन सामान्य और देहाती आबादी के मुसलमानों तक अधिकता से पहुंचाया जाए और इस सेवा और प्रकाशन कार्य को तमाम तब्लीग़ी अंजुमनें अंजाम दें। और इस काम का सवाब हासिल करें।

मैं समझता हूं कि विरोधियों की आपत्ति और आरोप में यह रिसाला पाक पत्नियों का संक्षिप्त इतिहास भी है और पाक पत्नियों की संख्या के फ़लसफ़े का बेहतर जवाब व नमूना भी। फ़क़त वस्सलाम

(फ़क़ीर अब्दुल माजिद क़ादरी बदायूंनी)

जनाब मौलाना मुहम्मद किफ़ायतुल्लाह साहब
जमीअत उलमा, दिल्ली

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم ۔ الحمد للہ رب العالمین والصلوٰۃ
والسلام علی رسولہ سید المرسلین والعاقبۃ للمتقین ۔ اما بعد!

मैंने किताब "मुक़द्दस रसूल" के कुछ पृष्ठ अध्ययन किए यह किताब जनाब फ़ाज़िल अल्लामा मौलाना मौलवी अबुल वफ़ा मुहम्मद

सनाउल्लाह साहब अमृतसरी ने एक आर्य महाशय की किताब "रंगीला रसूल" के जवाब में लिखकर न सिर्फ़ क़ौमी और इस्लामी काम पूरा किया है, बल्कि मुसलमानों पर एक ताज़ा एहसान किया है। मौलाना ने इससे पहले भी इस्लाम विरोधियों की बहुत सी किताबों के जवाब दिए हैं जो मुल्क में प्रकाशित और लोकप्रिय हो चुके हैं। किताब के अध्ययन से मुझे बहुत खुशी हुई। एक, इसलिए कि जवाब बड़े माक़ूल और सतर्क लिखे गए हैं। दूसरे, यह कि शैली बड़ी ही सभ्य है इस्लामी आचरण व इस्लामी सभ्यता का पूरा ध्यान रखा गया है। तीसरे, इसलिए कि अपरिचितों के लिए धोखा खाने का मौक़ा न रहा और 'वल्लाहु ला यहदिल ख़ाइनीनं' का चरितार्थ हो गया।

अल्लाह से दुआ है कि मौलाना को तमाम मुसलमानों की तरफ़ से भलाई प्रदान करे और उनकी निष्ठापूर्ण कोशिश को सराहे और किताब "मुक़द्दस रसूल" को मंक़बूल और मुसलमानों को उससे लाभ पहुंचाए और तालिबीने हक़ के लिए उसको ज़रिया हिदायत बनाए। आमीन रब्बुल आलमीन! (ख़ाकसार मुहम्मद किफ़ायतुल्लाह)

मौलाना अब्दुश्शकूर साहब

सम्पादक रिसाला "अलनज्म" लखनऊ लिखते हैं, इस हक़ीर ने किताब "मुक़द्दस रसूल" को देखा आर्यों की तरफ़ से जो दिल ख़राश किताब "रंगीला रसूल" प्रकाशित हुई थी और उसमें बड़े असभ्य तरीक़े से बेहतरीन अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक ज़िंदगी पर दिल दुखाने वाले हमले किए गए थे। इस किताब में मौलाना अबुल वफ़ा सनाउल्लाह साहब ने उसी का जवाब लिखा है।

हक़ीक़त यह है कि 'इदफ़अ़ बिल्लती हि-य अहसनु' पर पूरा अमल हुआ है। आर्यों की तल्ख़ कलामी का जवाब मीठे शब्दों में दिया है और उनकी आपत्ति के तहक़ीक़ी जवाब देने के साथ आरोप के तौर पर उनके

मज़हब की हक़ीक़त भी दिखाई है। आप सल्ल० के बहु पत्नि विवाह पर विरोधी की छींटा कशी का उचित जवाब देकर आप सल्ल० के पाक दामन को सारी आपत्तियों से पाक होना अच्छी तरह दिखलाया गया है। उनके झूठे हवाला पर भी आलोचना की है और सबसे पहले आर्यो की शरारतों का सतर्क और इक़रारी सुबूत दिया है।

मौलाना हाफ़िज़ अहमद सईद साहब

नाज़िम जमीअतुल उलमा-ए-हिन्द लिखते हैं : मैंने किताब "मुक़द्दस रसूल" का कुछ जगह से अध्ययन किया, यह किताब "रंगीले रसूल" के जवाब में लिखी गई है। किताब की ख़ूबी मात्र इतनी ही बात से ज़ाहिर हो जाती है कि इस किताब को मौलवी सनाउल्लाह साहब अमृतसरी ने लिखा है। मौलाना ने झूठे धर्मों के मुक़ाबले में जो सेवा की हैं वह मोहताजे बयान नहीं, आपकी ज़ात के साथ इसकी निस्बत इस बात के लिए काफ़ी ज़मानत है कि यह किताब "रंगीले रसूल" का मुकम्मल जवाब है। नबी करीम सल्ल० की पाक ज़िंदगी पर बड़ी ही शोध पूर्ण बहस की है "रंगीला रसूल" के लेखक की बकवास का इस ख़ूबी से जवाब दिया है कि उसकी बेइमानी को बिल्कुल खोल कर रख दिया है।

एक न्यायप्रिय और सच्चे की नज़र में तमाम भ्रम व सन्देहों के ज़हरीले कीटाणुओं के लिए यह किताब अच्छे उपचार और अकसीर आज़म है। मुझे मुसलमानों की मज़हबी भावना से पूरी आशा है कि इस किताब के प्रकाशन में पूरा पूरा हिस्सा लेंगे। खुदा तआला इस किताब को क़ुबूलियत का दर्जा प्रदान करे और मौलाना के लिए बाक़ियातुस्सालिहात में एक और इज़ाफ़ा फ़रमाए।

मौलाना अब्दुल हलीम साहब सिद्दीक़ी

नायब नाज़िम जमीअतुल उलमा-ए-हिन्द फ़रमाते हैं : एक महाशय जी ने "रंगीला रसूल" के नाम से एक किताब प्रकाशित की। जिसमें

हमारे आक़ा सय्यदना मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक ज़िंदगी पर बड़े नापाक हमले किए और ताजदारे मदीना की शान में गुस्ताख़ाना शब्द इस्तेमाल किए। जिसको कोई मुसलमान एक क्षण के लिए भी बर्दाश्त नहीं कर सकता। और उस किताब की हिमायत व प्रकाशन में आर्य प्रेस ने अपनी पूरी ताक़त लगा दी।

ज़रूरत थी कि उन अनुचित आरोपों का बड़ा संजीदा जवाब दिया जाता। खुदा का शुक्र है जिसने 'इन्ना लहू लहाफ़िज़ू-न' का इज़्हार फ़रमाया। इस ज़रूरत को पूरा फ़रमाया। और उस क़लम से जो मानो इसी काम के लिए पैदा हुआ है। अर्थात इमामुल मुनाज़िरीन मौलाना अबुल वफ़ा मुहम्मद सनाउल्लाह अमृतसरी ने इस गन्दे रिसाले का जवाब "मुक़द्दस रसूल" तहरीर फ़रमाया। हम तमाम मुसलमान इस क़लमी जिहाद के लिए मौलाना के आभारी हैं।

हक़ीक़त तो यूं है कि मौलाना ने "मुक़द्दस रसूल" लिखकर चौदहवीं सदी में इस फ़र्ज़ को पूरा किया है। जिसको अहदे नुबुवत में शायर रसूलुल्लाह सय्यदना हस्सान बिन साबित रज़ि० मिम्बर पर खड़े होकर मुश्रिकीन की हुजू के जवाब में अदा फ़रमाया करते थे और जिसके बदले में 'अजिब व म-अ-क रूहुल क़ुदुसि' के प्रतिष्ठित ख़िताब से सरफ़राज़ फ़रमाए जाते थे।

रिसाला "मुक़द्दस रसूल" की संदीदा शैली और सभ्य वाक्य इस पर गवाह हैं कि फ़रीज़ा हस्सानी की समानता ने मौलाना अबुल वफ़ा को भी ताईद रूहुल क़ुदुस से सुशोभित कर दिया। और मौलाना इस गुस्ताख़ समाजी को बेहतर जवाब देने में कामयाब हुए।

فلله الحمد على ذالك كثيرا كثيرا۔

"मुक़द्दस रसूल" का अध्ययन करने वालों को महसूस होगा कि आक़ाए नामदार सय्यदना मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० की जनाब में इस

पाखंडी महाशय की ओर से जो गुस्ताख़ियां व अनादर किया गया, उनको ख़त्म करने और जवाब देने में खुद सरकारे रिसालत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के निर्धारित बचाव के उसूलों से पीछे नहीं हटा गया।

उत्तरदायी ने मक़ामे मुनाज़िरा में 'व जादिलहुम बिल्लती हि-य अहसनु' की रौशनी को सामने रखा। और जवाब देते हुए 'ला यजरिमन्नकुम श-न-आनु क़ौमिन अ़ला अल्ला तअ़्दिलू' को रौशनी का मीनार क़रार दिया। हक़ीक़त में ''रंगीला रसूल'' जैसी नापाक किताब का जवाब ''मुक़द्दस रसूल'' अपनी बेहतर विशेषताओं के लिहाज़ से असत्य वादियों के लिए एक ख़ुली चोट है।

وَلَوْ كَانُوا يبصرون۔ فَلِلّٰهِ دَرُّ مولف

اصاب ما شاء فاجادوا افاد وجازاه عنا وعن المسلمين

خَيرًا جزاء۔

तमाम मुसलमानों का फ़र्ज़ है कि ''मुक़द्दस रसूल'' में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक ज़िंदगी के पाकीज़ा हालात पढ़ें। मेरी इच्छा है कि हर एक मुस्लिम घर में कम से कम एक एक प्रति 'मुक़द्दस रसूल'' की ज़रूर रहे।

जिस जमाअत ने ''रंगीला रसूल'' जैसी गन्दी किताब प्रकाशित करके दुनिया के सामने ईमानदारी व संजीदगी को बेनक़ाब किया है। उसको भी चाहिए कि ''मुक़द्दस रसूल'' का अध्ययन करे, ताकि उसको मालूम हो सके कि खुदा के जिस आख़िरी और सच्चे रसूल की मासूम ज़िंदगी पर ख़तरनाक हमले किए गए हैं। उस रसूल के मानने वाले चौदह सदियां गुज़र जाने के बाद भी उत्तेजित हुए बिना किस तरह अपने पाक मज़हब की शानदार परम्परा को क़ायम रखते हैं।

وَحَسْبُكُمْ هٰذَا التَّفَاوُتُ بَيْنَنَا

وَكُلُّ اِنَاءٍ بِالَّذِىْ فِيْهِ يَنْضَحُ

जनाब मौलवी अब्दुल क़य्यूम साहब
वकील प्रथम दर्जा हैदराबाद दक्किन

रिसाला "मुक़द्दस रसूल" पहुंचा। उसी समय से मैंने इसका अध्ययन शुरू किया और जब तक कि मैंने उसको ख़त्म नहीं कियां कोई काम नहीं किया। हर हर वाक्य पर दिल आपको दुआ देता है। क़ुदसी अलैहिर्रहमा का शेअर है :

रोज़े क़यामत हर कसे दर दस्त गीरद व नामा
मन नीज़ हाज़िरी शवम तस्वीर जानां दर बग़ल

आपने हुज़ूर (सल्ल०) की जो तस्वीर वास्तविक व ज़ाहिरी सहीह इस रिसाले में खींची है। ख़ुदा करे कि क़यामत के दिन आपके वास्ते इस शेअर का मिस्दाक़ हो जाए और आपको ख़ुदाए तआला ऊंचा दर्जा प्रदान फ़रमाए।

जनाब मौलवी मुहम्मद उसमान साहब
मुबल्लिग अंजुमन अहले हदीस सिकन्दराबाद दक्किन

الحمد لله الرّشيد الهادي ذي المنّة الكبرىٰ على العباد
وبعد فاعلم ذلك السفر الجلي لأبي الوفاء الفاضل الحبر العلي
الناقد المتوقد العريف الماهر المتجر العطريف
متمسك بصحيح خير محمد كصنع فضلاء الزمان مجد
سمّاه تبيانا مقدس رسول وهذّبه كتهذيب الفحول !
مزّق شرورها انتد كلّ منتقي وحرق ما في بابه المعلق
لله درّ أبي الوفاء الفاضل يفصل بين الحق وبين الباطل
أبقاه ربّ الأرض والسماء مغلاق أهل الشر والشحناء
تالله لم ترَ مثله العيون دامت له المسرات والشئون

نثنی علیک الخیر یا مولانا ونشرک المجھود یا اولٰنا
ونعوذ باللہ من زمان لم تکن فی حیا یا ذا الشان
یا حامد ادع اللہ لابی الوفاء دام لہ الثناء بخیر البقاء
زندہ باشی کیصد و سی سال خوش خضر صورت سید اہلحدیث

जनाब महाराजा सर किशन प्रसाद
यमीन सल्तनत हैदराबाद दक्किन

''मुक़द्दस रसूल'' को फ़क़ीर ने अच्छी तरह देखा। आर्य समाज ने ''रंगीला रसूल'' छाप कर जो अपनी सभ्यता व आचरण का नमूना पेश किया है। वह समाजी लिट्रेचर की दिल दुखाने वाली, कठोर स्वर की विशेषताओं में है। इससे आर्य के संस्थापक (स्वामी दयानन्द) की नैतिक शिक्षा पर धब्बा लगता है। यह फ़क़ीर नहीं समझता कि उनके अनुयायी अपने संस्थापक की बदनामी के क्यों इच्छुक हैं :

आर्य समाज की गुस्ताख़ी और सख़्त कलामी पर अहले इस्लाम ने जिस सब्र व ख़ामोशी से काम लिया वह हज़रत रसूले अकरम सल्ल० की ज़बान 'लि तम्मि-म मकारिमल अख़्लाक़' की पूरी पूरी आज्ञा का पालन है। आपने ''रंगीला रसूल'' का जवाब जिस सभ्यता व संजीदगी से लिखा है वह पैग़म्बरे इस्लाम के आचरण का उच्च नमूना है। आपने झूठ और पक्षपात व नफ़रत के वे पर्दे चाक कर दिए, जिनके पीछे रंगीले महाशय ने पाक रसूल सल्ल० की पाक और स्वच्छ ज़िंदगी को पोशीदा करना चाहा था। आपने वाक़ियात की तहक़ीक़ में अपनी जिस व्यापक मालूमात से काम लिया है। हक़ तो यह है कि यह आप ही का काम था। आपने इस्लाम का वह फ़र्ज़ अदा किया है, जिसकी सख़्त ज़रूरत थी, बल्कि मुसलमानों पर एहसान किया है। जवाब की ख़ूबी, लेखनी की संजीदगी और बयान की स्वच्छता बयान से उच्च है। आर्य साहिबों के बेजा हमलों का जिस योग्यता से जवाव दिया है वह क़ाबिले इत्मीनान व लायक़े

इम्तिनान है। हक़ तआला आपकी इस इस्लामी कोशिश को कुबूल और किताब "मुक़द्दस रसूल" को लोकप्रिय और अहले इस्लाम को इससे लाभान्वित करे और आपकी इज़्ज़त व ज़िंदगी में वृद्धि करे। आमीन!

इस्लामी समाचार पत्रों की राएं "मुक़द्दस रसूल" पर

दैनिक "ज़मींदार" लाहौर

अबुल वफ़ा मौलाना सनाउल्लाह साहब अमृतसरी को ग़ैर मुस्लिमों की मज़हबी आपत्तियों के मुंह तोड़ और ठीक ठीक जवाब देने में जो ख़ास शोहरत हासिल है वह मोहताजे बयान नहीं। निःसन्देह यह दावा किया जा सकता है कि मौलाना ने उस समय तक ईसाइयों, आर्यों और दूसरे गुमराह सम्प्रदायों के मुक़ाबले में सत्य धर्म की जो महान सेवा की हैं, उनकी इस महान सेवा का हिन्दुस्तान के मुसलमान इन्कार नहीं कर सकते। पाठकों को मालूम होगा कि पिछले दिनों एक आर्य महाशय ने "रंगीला रसूल" के नाम से एक सख़्त दिल तोड़ने वाली किताब प्रकाशित की थी। जिसमें इस कायनात के महत्वपूर्ण इंसान अर्थात हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक ज़ात पर अत्यन्त सख़्त और असभ्य आपत्तियां की गयी थीं। मौलाना सनाउल्लाह साहब ने "मुक़द्दस रसूल" में इस किताब का बड़ा सन्जीदा, उचित, शोधपूर्ण और ठीक जवाब दिया है और सबसे प्रमुख और क़ाबिले ज़िक्र बात यह है कि यह जवाब किताब के अंदाज़े तहरीर की सख़्त अनुचित शैली के बावजूद मौलाना ने 'जादिलहुम बिल्लती हि-य अहसनु' के रिश्ता इन्सानियत को हाथ से नहीं छोड़ा और उलमाए किराम देवबन्द के कथन के मुताबिक़ "गन्दगी का पवित्रता से, अंधेरे का उजाले से और बदतमीज़ी का संजीदगी से" जवाब दिया है। "मुक़द्दस रसूल" 130 पन्नों पर मौजूद

है। लेकिन इस सार के बावजूद हर आपत्ति का बड़े अच्छे अंदाज़ और दिल नशीं तरीक़े से खंडन किया गया है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि इस किताब का मुसलमानों में ज़्यादा प्रकाशन हो ताकि वे समाजियों और दूसरे विरोधी सम्प्रदायों की बेकार, बेहूदा और अनुचित आपत्तियों से ठीक तरीक़े से पूरे तौर पर परिचित हो जाएं। किताब की लिखाई छपाई और काग़ज़ बड़ा ही अच्छा है। (22 जनवरी, 1925 ई०)

दैनिक "सियासत" लाहौर

आर्य समाज के एक अयोग्य और छुपे मुनाज़िर ने किताब "रंगीला रसूल" प्रकाशित करके जिस रंग में मुसलमानों के दिलों को घायल किया था उसका अंदाज़ा वही लगा सकते हैं, जिनको बदक़िस्मती से उसके अध्ययन का इत्तिफ़ाक़ हुआ। उसके जवाब में रईसुल मुनाज़िरीन, मौलाना मौलवी सनाउल्लाह साहब शेरे पंजाब सम्पादक "अहले हदीस" ने उक्त किताब लिखी है। मौलाना के लिए यह अजीब सौभाग्य की बात है कि अगर स्वामी दयानन्द जी संस्थापक आर्य समाज ने अपनी "सत्यार्थ प्रकाश" में श्रीमान लाला लाजपत राय के कथनानुसार सुनी सुनाई बातों पर भरोसा करके इस्लाम पर एक सौ उन्सठ (159) आपत्तियां कीं तो उसका जवाब सबसे पहले[1] मौलाना ही ने दिया। उसके बाद पूर्व धर्मपाल वर्त्तमान ग़ाज़ी महमूद साहब बी.ए. ने अगर तर्क इस्लाम, नख़्ले इस्लाम, तहज़ीब इस्लाम आदि किताबें लिखीं तो उनके जवाब में भी सबसे पहले मौलाना ही ने क़लम उठाया इसलिए क़ुदरती बात थी कि "रंगीला रसूल" का जवाब भी सबसे पहले आप ही लिखते। चुनांचे ऐसा ही हुआ, जैसी कि आशा थी। आपने जवाब लिखा किताब की बेहतरी के बारे में इतना ही कह देना काफ़ी होगा कि उसके लेखक मौलाना सनाउल्लाह साहब हैं। हिन्दुस्तान के नामी उलमा ने इस लाजवाब किताब पर बड़ी अच्छी समीक्षा

1. बल्कि किसी और ने नहीं दिया। (लेखक)

की हैं। उलमा व फ़ुज़ला जिस रिसाला नाफ़िआ की प्रशंसा में व्यस्त हों। उसके बारे में हमारा कुछ लिखना शायद गुस्ताख़ी करना होगा। हम हर इस्लामी अंजुमन से ज़ोरदार अपील करते हैं कि इस मुफ़ीद किताब की यथा सौभाग्य प्रतियां ख़रीद कर तब्लीग़ी हल्क़ों में तक़्सीम करे। इसके अलावा हर मुसलमान को चाहिए कि इस किताब का अध्ययन ज़रूर करें। (11 अक्टूबर, 1924 ई०)

"सुल्तानुल अख़्बार" मुम्बई

"मुक़द्दस रसूल" इसके लेखक मौलाना सनाउल्लाह साहब सम्पादक अख़्बार "अहले हदीस" अमृतसर में यह किताब आर्यों की किताब "रंगीला रसूल" (जिसमें रसूल अरबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान में अपमान जनक बातें लिखी गई हैं उस) के जवाब में लिखी गई है। वास्तव में लेखक ने "रंगीला रसूल" का जवाब बड़ी पाकीज़गी के साथ दिया है। (28 सफ़र, 1343 हि०, 28 सितम्बर, 1924 ई०)

"मुस्लिम राजपूत" अमृतसर

"रंगीला रसूल" और "विचित्र जीवन" आर्य समाज की सभ्यता व आचरण का बेहतरीन नमूना हैं। उनमें पैग़म्बर इस्लाम (सल्ल०) पर बड़े नापाक और अनुचित और गन्दे हमले किए गए हैं। मौलाना अबुल वफ़ा सनाउल्लाह साहब ने इन दोनों किताबों का जवाब "मुक़द्दस रसूल" में दिया है जो हाल में प्रकाशित हुई है। मौलवी साहब को आर्यों के लिट्रेचर पर पूर्ण महारत है। और "रंगीला रसूल" का जवाब उन्होंने मुंह तोड़ घटनाओं व तर्कों से दिया है। हमारे ज्ञान में यह जवाब है, जो उलमाए हिन्द की तरफ़ से "रंगीला रसूल" के सम्पादक की सख़्त दिली का दिया गया है, और बड़े सभ्य अन्दाज़ में दिया गया है। किताब 80 पृष्ठों के साथ टाइटिल, लिखाई, छपाई काग़ज़ आकर्षक। (1 अक्टूबर, 1924 ई०)

दैनिक "आलमगीर" अमृतसर

रसूल मक़बूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की निस्बत "रंगीला रसूल" (उर्दू) और "विचित्र जीवन" (नागरी) के लेखक ने जिस अनैतिकता और बकवास का सुबूत दिया है। उसने मुसलमानों के दिलों को टुकड़े टुकड़े कर दिया है। रहमतुल लिल आलमीन की ज़ात पर इस प्रकार के बेहूदा आरोप मुसलमानों की भावनाओं को चोट पहुंचाने के लिए लगाए हैं। वरना रसूले मक़बूल सल्ल० के अच्छे आचरण की एक दुनिया क़ायल है। दोस्त तो दोस्त, दुश्मन तक मानते हैं कि आप सल्ल० की ज़ात उच्च गुणों व अच्छे आचरण का नमूना थी और आपके वजूद से दुनिया की सभ्यता ने बड़े लाभ हासिल किए। लेकिन पंडित काली चरण ने आपकी शान में जो गुस्ताख़ाना रवैया अपनाया है, उससे मुसलमानों को सबक़ हासिल करना चाहिए। अमृतसर के मशहूर मुनाज़िर मौलाना सनाउल्लाह साहब ऐडीटर "अहले हदीस" ने हर दो किताबों के जवाब में "मुक़द्दस रसूल" नामी एक रिसाला प्रकाशित किया है। जिसमें उन तमाम आरोपों का जवाब दिया गया है जो पंडित काली चरण आदि ने नबी सल्ल० पर लगाए हैं। इसमें यह विशेषता है कि मौलाना ने पंडित काली चरण की तरह कहीं भी सभ्यता व आचरण को हाथ से नहीं जाने दिया, बल्कि हर पहलू पर तर्कों व तथ्यों की रौशनी में बहस की है। इस रिसाले के प्रकाशन से मौलाना ने जहां आरोपों के परख़च्चे उड़ाए हैं जो पंडित काली चरण आदि ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर लगाए हैं वहीं नंगी सभ्यता और इस्लामी सभ्यता का व्यवहारिक मुक़ाबला करके दिखाया है और बेहूदा लोगों का जवाब संजीदगी से देकर आर्य समाज के सामने एक अनुसरण योग्य नमूना पेश कर दिया है। बहरहाल यह रिसाला शोधकर्त्ताओं के लिए एक बड़ा लाभकारी तोहफ़ा है जो अपनी बातिनी ख़ूबियों के साथ ज़ाहिरी हुस्न से भी माला माल है।

(10 अक्टूबर, 1924 ई०)

दैनिक "वकील" अमृतसर

"मुक़द्दस रसूल" इस नाम का एक रिसाला (मौलवी फ़ाज़िल) हज़रत मौलाना अबुल वफ़ा सनाउल्लाह साहब अमृतसरी ने आर्य समाजियों के रिसाला "रंगीला रसूल" के जवाब में लिखा है। आपको मुनाज़िरा के फ़न में महारत हासिल है। इस्लाम विरोधियों का कोई ऐसा हमला नहीं जिसका जवाब मौलाना की ओर से न दिया गया हो। और जवाब भी बेहद बेहतर और मुंह तोड़। जिस क़दर "रंगीला रसूल" उत्तेजित, अशलील और सभ्यता से परे है, उसी क़दर "मुक़द्दस रसूल" बड़ी सहनशीलता संजीदगी और शालीनता को लिए हुए है। हम हज़रत ख़्वाजा निज़ामी देहलवी की राए से सहमत हैं कि धनवान मुसलमानों को इस रिसाले की कापियां ख़रीद कर मुफ़्त तक़्सीम करनी चाहिएं।

रिसाला वास्तविक ख़ूबियों के अलावा ज़ाहिरी गुणों से भी सजा धजा है। अर्थात काग़ज़ लिखाई और छपाई के हिसाब से भी कुछ कम सराहनीय नहीं। (2 सितम्बर, 1924 ई०)

"वतन" लाहौर

"मुक़द्दस रसूल" लेखक मौलवी फ़ाज़िल हज़रत मौलाना अबुल वफ़ा सनाउल्लाह साहब अमृतसरी पर "वकील" ने जो समीक्षा की है इससे "वतन" को भी पूरी सहमति है। यह रिसाला आर्य समाजियों के रिसाला "रंगीला रसूल" के जवाब में लिखा गया है। आपको मुनाज़िरा में महारत हासिल है। इस्लाम विरोधियों का कोई ऐसा हमला नहीं जिसका जवाब मौलाना की ओर से न दिया गया हो और जवाब भी बड़ा ही मुंह तोड़, जिस क़दर रंगीला रसूल उत्तेजना भरा, अशलील और सभ्यता से परे है उसी क़दर "मुक़द्दस रसूल" बड़ी सहनशीलता, संजीदगी और शालीनता को लिए हुए है। हम हज़रत ख़्वाजा निज़ामी देहलवी की राए से सहमत हैं कि हैसियत वाले मुसलमानों को इस रिसाले की कापियां ख़रीद कर मुफ़्त तक़्सीम करनी चाहिएं।

रिसाला वास्तविक ख़ूबियों के अलावा ज़ाहिरी गुणों से भी सजा धजा है। अर्थात काग़ज़ लिखाई और छपाई के हिसाब से भी कुछ कम सराहनीय नहीं। (10 अक्टूबर, 1924 ई०)

"अलमुस्लिम" बैंगलौर

"मुक़द्दस रसूल" का बोल बाला। वह जिसने दुनिया की अंधियारी मिटाई, वह जिसने मानव जाति को सर्वकालिक यातना से निजात दिलाई।

"मुक़द्दस रसूल" मौलवी फ़ाज़िल सरदार अहले हदीस, अल्लामा हज़रत मौलाना अबुल वफ़ा सनाउल्लाह साहब अमृतसरी ऐडीटर अख़्बार "अहले हदीस" के क़लम से यह किताब आर्य समाजियों के पलीद रिसाला, "रंगीला रसूल" के जवाब में लिखी गई है। जिसके लेखक ने न सिर्फ़ अपने नाम पर पर्दा डालने की शर्मनाक कोशिश की है, बल्कि हुज़ूर अनवर हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बहुपत्नी विवाह पर अटकल पच्चू आपत्तियां करते हुए दिल दुखाने, बेइमानी और बदज़बानी की कोई कसर उठा नहीं रखी है।

हज़रत मौलाना ने जिस संजीदगी, से "रंगीला रसूल" झूठ के पर्दा को जिसके नीचे उसके लेखक ने पैग़म्बर इस्लाम की पाक और शीशे की तरह चमकने वाली ज़िंदगी को छुपाना चाहा था, तार तार किया है। वह इस्लामी लिट्रेचर की मृद भाषा का बेहतर नमूना है। इसके देखने से यक़ीनन आर्य समाजियों की आंखों को तारे दिखाई देंगे। और ज़मीन पांव के नीचे से सरक जाएगी। और फिर वे कभी इस्लाम और पैग़म्बरे इस्लाम सल्ल० के बारे में ज़हर उगलकर अपने प्रति विनाश में न डालेंगे।

इस किताब में उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब रज़ि० के निकाह के के बारे में तंग नज़र व ना समझ जमाअतों में सालों साल से जो बेअसल और बेबुनियाद कहानियां चली आती हैं उनकी ख़राबी इस तर्ज़ से साबित की गई है, जिससे बढ़कर तहक़ीक़ व तसदीक़ की मिसाल नहीं मिल सकती, जहां कहीं हज़रत ज़ैनब रज़ि० के निकाह का ज़िक्र आया है वहां

बड़ी बड़ी विश्वसनीय इतिहास की किताबों के हवाले से इस्लाम दुश्मनों के हथकंडों की अच्छी तरह क़लई खोली गई है। हमें यक़ीन है कि आगे किसी मुख़ालिफ़ को ऐसी पोच और लचर आपत्तियां करने की हिम्मत न पड़ेगी। क्योंकि यह उम्मुल मोमिनीन की आत्म कथा की एक बेमिसाल तारीख़ है और इस्लाम दुश्मनों के बेजा हमलों की तहक़ीक़ व जांच से भरी हुई सुरक्षा।

इस किताब के शुरू में हर सम्प्रदाय के उलमा किराम की समीक्षाएं दी गयी हैं। तमाम के तमाम इस बात पर सहमत हैं कि हिन्दुस्तान के कुल मुसलमान, क्या मर्द क्या औरत, क्या जवान क्या बूढ़े, सब इसको अत्यन्त बहुमूल्य नेमत जानकर ख़रीदें और पढ़ें। और हम हज़रत ख़्वाजा निज़ामी देहलवी की इस राए से सहमत हैं कि हैसियत वाले मुसलमानों को इस किताब की कापियां ख़रीद कर मुफ़्त तक़्सीम करनी चाहिएं।

यह किताब वास्तविक गुणों के अलावा ज़ाहिरी विशेषताओं से भी सजी धजी है। अर्थात लिखाई छपाई आकर्षक काग़ज़ बेहतर।

(25 अक्टूबर, 1924 ई०)

''आर्य धर्म प्रकाश'' लाहौर

''मुक़द्दस रसूल'' एक किताब का नाम है जो अमृतसर के मशहूर मुनाज़िर मौलवी सनाउल्लाह साहब ने ''रंगीला रसूल'' के जवाब में लिखी है।

हां वही ''रंगीला रसूल'' जिसके ख़िलाफ़ मुसलमान समाचार पत्रों ने इतना शोर मचाया है कि आख़िरकार गवर्नमेंट को इसके प्रकाशक के ख़िलाफ़ मुक़दमा करना पड़ा। हम मौलवी साहब की इस किताब का दिल से स्वागत करते हैं। यह है मज़हबी मैदान में तबीयत का ज़ोर दिखाने का असली ढंग। यह है इस्लाम को अन्य धर्मों के ख़िलाफ़ सच्चा साबित करने का तरीक़ा।

(17 सूज, 22 सितम्बर, 1924 ई०)

بسم الله الرحمن الرحيم

نحمده ونصلي على رسوله الكريم

ख़ुदा की बारगाह में दुआएं

ऐ ख़ुदा! ऐ आसमान व ज़मीन के मालिक! ऐ ज़मीन व आसमान बनाने वाले! ऐ ज़ुल इंतिक़ाम क़ुद्दूस ख़ुदा! ऐ सच्चों के हामी और मददगार ख़ुदा! तेरे विश्वसनीय पाक रसूल सल्ल० की तौहीन और अपमान हो रहा है तू अपनी रहमत से पर्दापोशी कर रहा है। हम जानते हैं कि आख़िरकार तू अपने प्यारों की मदद और इज़्ज़त ज़ाहिर करेगा। जैसी कि तू हमेशा करता आया है और जैसा तेरा वायदा है, 'इन्ना ल-ननसु-रु रुसु-ल-ना वल्लज़ी-न आमनू' ऐ क़ादिर तवाना ख़ुदा! हमारा ईमान है कि असल मदद और हिमायत वही है जो तू करेगा। हम कमज़ोर हैं। तू जानता है कि हम कमज़ोरों से यही हो सकता है कि हम क़लम उठाकर (वह भी तेरी ही मदद से) जवाब लिखें (वह भी तेरे समझाने से) ला हव-ल वला क़ुव्व-त इल्लाह बि-क।

तो हमारी दुआ है कि इस मुक़द्दस काम में हमारी मदद कर और इस तुच्छ की सेवा को क़ुबूल फ़रमा और अपने बन्दों को इससे फ़ायदा पहुंचाकर गुमराही से बचा।

ربنا تقبل منا إنك أنت السميع العليم

अबुल वफ़ा सनाउल्लाह, अमृतसरी

मुहर्रम 1343 हि० अगस्त 1924 ई०

भूमिका

पहले मुझे देखिए

आर्यों की दिल दुखाने वाली तहरीर व तक़रीर सुनकर लोग हैरान हैं कि ये लोग मज़हबी गुफ़्तुगू में क्यों इतनी तेज़ मिज़ाजी और सख़्त कलामी करते हैं। हमारे नज़दीक इसका जवाब यह है कि जिस तरह बाप का असर बच्चे की जिस्मानी हालत पर होता है, उसी तरह उस्ताद, गुरु और पीर का असर आचरण और आध्यात्मिकता पर होता है। स्वामी दयानन्द ने किताब सत्यार्थ प्रकाश आदि में जो रविश अपनाई है, उसके तीन नमूने हम बताते हैं। पाठको! ख़ासकर अपक्षपाती पाठक ध्यान से पढ़ें।

क़ुरआन मजीद की निंदा में स्वामी जी ने अपनी किताब सत्यार्थ में एक ख़ास अध्याय लिखा है। जिसमें बिस्मिल्लाह से लेकर वन्नास तक आपत्तियां करते गए हैं। उन आपत्तियों के बारे में हुज़ूर सय्यदुल अंबिया अलैहिस्सलाम बल्कि स्वयं ख़ुदा का ख़ास शब्दों में ज़िक्र करते हैं। अतएव फ़रमाते हैं :

1. वाह वाह देखो जी मुसलमानों का ख़ुदा शोबदाबाज़ों की तरह खेल रहा है।
2. वाह जी मुहम्मद साहब! आपने तो गोकुलिये गोसाइयों की समानता कर ली।
3. साबित होता है कि मुहम्मद साहब बड़े वासना वाले थे। (अल्लाह अपनी पनाह में रखे)

(सत्यार्थ प्रकाश, अध्याय 14, नम्बर 43, 86, 127)

स्वामी जी की सख़्त कलामी सिद्ध है। यहां तक कि उनकी आत्मकथा वाले चेलों को भी तस्लीम है। अतएव उनकी आत्मकथा उमरी

कलां की भूमिका में लिखा है :

एक दिन व्याख्यान (तक़रीर) में श्री स्वामी (दयानन्द) जी महाराज पुराणों की असम्भव (नामुम्किन) बातों का खण्डन (रद्द) करते करते उनकी नैतिक शिक्षा का खण्डन करने लगे। उस समय पादरी स्कॉट मिस्टर रेड कलेक्टर ज़िला और मिस्टर ऐडवर्ड साहब कमिश्नर क़िस्मत पंद्रह बीस अंगेज़ों सहित मौजूद थे। स्वामी जी ने पुराणिकों की पंच कुवारियों का ज़िक्र करते हुए एक एक गुण बयान करना शुरू किए। और पुराणिकों (हिन्दुओं) की अक़्ल पर अफ़सोस किया कि द्रोपदी को पांच पति कराके उसे कुमारी क़रार देना और इसी तरह कुनती तारा मन्दूरी आदि को कुमारी कहना पुराणिकों की नैतिक शिक्षा को दोषपूर्ण साबित करता है। स्वामी जी की शैली ऐसी हास्य वाली थी कि श्रोता थकने का नाम नहीं जानते थे। उस पर साहब कलेक्टर और साहिबे कमिश्नर आदि अंग्रेज़ हंसते और ख़ुशी व्यक्त करते रहे। लेकिन उस लेख को ख़त्म करके स्वामी जी महाराज बोले, पुराणियों की तो यह लीला है। अब करानियों की लीला सुनो, "यह ऐसे भ्रष्ट (नापाक) हैं कि कुमारी के बेटा पैदा होना बतलाते हैं और फिर दोष (गुनाह) स्वर्गीय शुदा स्वरूप परमात्मा (निर्दोष ख़ुदा) पर लगाते हैं और घोर पाप करते हुए तनिक भी लज्जित नहीं होते।" इतना कहना ही था कि साहब कलेक्टर और साहब कमिश्नर के चेहरे मारे ग़ुस्से के सुर्ख़ हो गए। लेकिन स्वामी जी ने व्याख्यान इसी ज़ोर व शोर से जारी रखा। उस दिन ईसाई मत के व्याख्यान के ख़ात्मे तक खण्डन करते रहे दूसरे दिन सुबह को ही ख़ज़ान्ची लक्ष्मी नारायण की साहब कमिश्नर बहादुर की कोठी पर तलबी हुई। साहब बहादुर ने फ़रमाया कि अपने पंडित साहब को कह दो

कि बहुत सख़्ती से काम न लिया करें। हम ईसाई लोग तो सभ्य हैं, हम तो वाद विवाद में सख़्ती से नहीं घबराते, लेकिन अगर जाहिल हिन्दू और मुसलमान क्रोधित हुए तो तुम्हारे स्वामी पंडित के व्याख्यान बन्द हो जाएंगे।''

(सुवानेह उमरी कलां दीबाचा पृ० 6)

इसलिए आर्य समाजी आजकल जो कुछ सख़्त कलामी करते हैं वह स्वामी की ज़हरीली शिक्षा के असर से करते हैं क्यों?

मा मुरीदां रू बसूए सुलह चूं आरेम चूं
रू बसूए फ़ितना व पैकार दारद पीरमा

स्वामी जी की तेज़ मिज़ाजी और कड़वे स्वर की कड़वाहट हम मुसलमानों ही को महसूस नहीं, बल्कि हिन्दुस्तान के लोकप्रिय लीडर सूफ़ी मशरब मरन्द व मरन्जां का नमूना महात्मा गांधी ने भी स्वामी दयानन्द की किताब (सत्यार्थ प्रकाश) के बारे में लिखा है :

''स्वामी दयानन्द ने इस्लाम और अन्य धर्मों की ग़लत तस्वीर दिखाई है उनकी किताब सत्यार्थ प्रकाश बड़ी निराशाजनक है।''
(यंग इंडिया 29 मई 1924 ई० अनुवाद साभार आर्य अख़्बार प्रताप लाहौर 4 जून 1924 ई०)

स्वामी जी दयानन्द के अलावा गांधी जी ने मौजूदा आर्यों के बारे में राए व्यक्त की कि :

''आर्य समाजी तंग नज़री और लड़ाई की आदत की वजह से या तो अन्य धर्मों के लोगों से लड़ते रहते हैं और अगर ऐसा न कर सकें तो आपस में एक दूसरे से लड़ते झगड़ते रहते हैं।''

(प्रताप 4 जून, 1924 ई०)

बस फिर क्या था जो दावा गांधी जी ने ज़बानी किया था। आर्यों ने की दलील बयान कर दी। अर्थात समाज की चारों तरफ़ से महात्मा

गांधी पर आवाज़ कसी गई। वेदिक धर्म से जाहिल मुसलमानों को खुशामदी आदि कहा गया। इसके बाद हिन्दुस्तान के एक विशिष्ठ अर्ध सरकारी अंग्रेज़ी अख़्बार पानीयर में एक नोट निकला जिसका अनुवाद यह है :

मिस्टर गांधी और आर्य समाज के आपसी मतभेदों का हवाला देते हुए टाइम्स ऑफ़ इंडिया लिखता है कि मिस्टर गांधी ने यह एक आम सच्ची बात कही है, कि आर्य समाजी इस क़ौमी विवाद के जो अब देश में फैल रहा है। बड़ी हद तक ज़िम्मेदार हैं और उसने दो एक समाजियों के नाम भी लिए हैं। जिन्होंने इस तहरीक में रहनुमाई की है। हर एक आदमी यह जानता है कि मिस्टर गांधी ने अपने बयान में असली मामले से ज़्यादा नहीं कहा। झगड़े की बिना तहरीक शुद्धी से शुरू होती है जो समाजियों ने यूपी, आगरा आदि में एक साल पहले आरंभ की थी और लगभग सब झगड़ों में जो दोनों क़ौमों के बीच हुए, समाजियों के कारनामों की खोज मिलती है। कुछ समाजी जैसे स्वामी दयानन्द कहते हैं कि वह मुसलमानों के ख़िलाफ़ कुछ नहीं करते बल्कि सिर्फ़ हिन्दुओं की हालत को मज़बूत करते हैं ताकि हिन्दू और मुसलमान दोनों बराबर की हालत में निर्भय रहें। दूसरों ने खुलकर मुसलमानों के ख़िलाफ़ तक़रीरें कीं। चाहे समाजी रहनुमाओं का मक़सद मुसलमानों को डराना या उनको मुहब्बत से आज्ञा पालक बनाना हो। यह हर एक को मालूम है कि उनकी इस जद्दोजहद से मुसलमान सख़्त नाराज़ हुए और इस बात से समाजी भी परिचित हैं। मिस्टर गांधी के बयान ने छींटा कशी का एक तूफ़ान खड़ा कर दिया है। तमाम हिन्दुस्तान में समाजी मिस्टर गांधी के ख़िलाफ़ बड़े ज़ोर से विरोध कर रहे हैं। मगर उनका यह विरोध दिखावा और ख़ालिस नहीं मालूम

हुआ। क्योंकि समाजी और अन्य हर एक को इस बात का पता है कि इनका यह तब्लीग़ी काम मुस्लिम हल्क़ों में किस तरह देखा जाता है।" (पानीयर इलाहाबाद, 23 जून, 1924 ई०)

जब इस पर भी समाजियों का जोश ठण्डा न हुआ तो अल्लाह ने

شَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ اَهْلِهَا

आर्यों में एक विश्वसनीय गवाह पैदा कर दिया। जिसने महात्मा गांधी जी की अर्थात पंजाब के बहुत बड़े लीडर लाला लाजपत राय जी ने स्विज़रलैण्ड (यूरोप) से एक लेख अपने अख़्बार "वन्दे मातरम" लाहौर में प्रकाशित कराया जिसका टुकड़ा यह है :

"मैं 1882 ई० के नवम्बर में आर्य समाज का मिम्बर बना और 1920 ई० में मैंने अपना संबंध उससे पूरी तरह ख़त्म कर लिया। मैं अपने 38 साल के अंदरूनी अनुभव से यह कह सकता हूं कि महात्मा गांधी ने आर्य समाजियों पर जो आलोचना की है वह उनकी मुहब्बत पर दलालत करती है। इसमें बहुत कुछ सच्चाई है आर्य समाजियों पर वाजिब है कि नाराज़गी के रेज़ुलेशन पास करने के बजाए शान्ती और ठण्डे दिल से उस पर ग़ौर करें।" (साभार आर्य गज़ट लाहौर, 7 अगस्त 1924 ई०)

गांधी जी ने नहले पर दहला चोट यह की कि यह भी लिख दिया कि :

इस्लाम छोटा नहीं है, हिन्दुओं को भक्ति के साथ उसका अध्ययन करना चाहिए। फिर वे उसके साथ मुहब्बत करेंगे। जिस तरह मैं करता हूं। (अनुवाद यंग इंडिया प्रताप, 4 जून 1924 ई०)

---

1. घर के भेदी ने गवाही दी।

बस फिर क्या था आर्यों ने गांधी जी से फ़ुरसत पाकर इस्लाम और पैग़म्बरे इस्लाम पर हमले शुरू कर दिए। उन हमलों में से एक हमला किताब की सूरत में यह है, जिसका नाम "रंगीला रसूल" है। इस किताब में हज़रत सय्यदुल अंबिया अलैहिस्सलाम के घरेलू हालात ऐसे बुरे तरीक़े और दिल दुखाने वाले अंदाज़ से लिखे हैं कि मुल्क में धूम गच गई। यहां तक कि महात्मा गांधी जैसे नम्र स्वभाव और सहनशील बुज़ुर्ग ने भी उस किताब पर नफ़रत व्यक्त की। गवर्नमेंट ने उस किताब को आपत्तिजनक जाना। मगर चूंकि बुज़दिल लेखक ने उस पर अपना नाम दर्ज नहीं किया था इसलिए गवर्नमेंट ने उस किताब के प्रकाशित करने वाले पर मुक़दमा चलाया। गवर्नमेंट का जो फ़र्ज़ था, उसने अदा किया। असल लेख का जवाब देना हुकूमत का काम नहीं, बल्कि हम मुसलमानों का है। इसलिए जिस तरह गवर्नमेंट ने अपना फ़र्ज़ अदा किया है। हम भी अपना मज़हबी फ़र्ज़ अदा करते हैं। अर्थात जवाब देते हैं ताकि मुसलमानों के दुखी दिलों पर मरहम लगकर राहत मिले और मुल्क में चैन व शान्ति पैदा हो।

पक्षपात और अनुचित हिमायत

बावजूद यह कि किताब बहुत ही असभ्य और दिल को चोट पहुंचाने वाली है। लेकिन आर्य अख़्बार इसकी प्रशंसा में अपना सारा ऐड़ी चोटी का ज़ोर लगा रहे हैं। अतएव आर्य समाज की हिमायत का एक मात्र ठेकेदार अख़्बार प्रताप लाहौर लिखता है :

"रंगीला रसूल" पर बेकार की चीख़ व पुकार

मालूम होता है कि हमारे मुसलमान दोस्त महात्मा गांधी को आर्य समाज के ख़िलाफ़ भड़काने में ऐड़ी चोटी का ज़ोर लगा रहे हैं। अतएव उन्होंने एक बड़ी उचित किताब "रंगीला रसूल" के ख़िलाफ़ कि जिसमें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी पर सरसरी नज़र डाली गई है। महात्मा गांधी से घोषणा निकलवायी है। हम दावे से कहते

हैं कि इस किताब (रंगीला रसूल) की शैली ऐसी शरीफ़ाना और उचित है कि किसी अपक्षपाती आदमी को इस पर आपत्ति नहीं हो सकती।

(प्रताप 26 जून, 1924, पृ० 2)

इस्लामी अख़्बारों ने उल्लिखित किताब पर जब नफ़रत व्यक्त की तो इसी आर्य समाजी अख़्बार ने इस प्रकार की ग़लत किताब लिखने की वजह अपना हक़ बताया कि :

"अगर बुद्ध, ईसा, नानक और दयानन्द पर आलोचना की जा सकती है तो कोई वजह नहीं कि मुहम्मद (सल्ल०) उससे उच्च हो। कोई भी हिन्दू या आर्य हज़रत के बारे में किसी प्रकार का अनादर अपने ज़ेहन में नहीं ला सकता, हां वह इस उसूल के लिए लड़ेंगे कि हज़रत की ज़िंदगी आलोचना से उच्च नहीं। मुसलमानों को कोई हक़ नहीं कि जब कभी ग़ैर मुस्लिम इस लेख पर क़लम उठाए तो वे आपे से बाहर होकर उसे कुचलने की कोशिश करें।"

(प्रताप 12 जुलाई, 1924 ई० पृ० 2, कॉलम 2)

शायद इसी उसूल से देव समाजियों ने लाहौर से दयानन्द जी के हालात पर पूरी आलोचना करने को कुछ ट्रैक्ट (आर्य समाज के संस्थापक दयानन्द की ज़िंदगी आदि लेखक अमर सिंह प्रकाशन अक्टूबर 1916 ई० आदि) प्रकाशित किए थे। जिसका जवाब आर्यों से न दिया जा सका। या हमने नहीं देखा, हमारा हक़ था कि इसी उसूल के मातहत हम उनमें से नमूना दिखाते। मगर हम मजबूर हैं। इसी रसूल की शिक्षा की पाबन्दी में जिसने हमें फ़िरऔन जैसे दुश्मन को तब्लीग़ करते हुए हुक्म दिया है :

قَوْلًا لَهُ قَوْلًا لَيِّنًا

"तब्लीग़े दीन में सख़्त तरीन दुश्मन के सामने भी नम्र स्वभाव से

बात किया करो।''

अब हम रंगीले लेखक का रवैया बताने को एक मिसाल पेश करते हैं। जिससे इसके हिमायतियों को मालूम हो सके कि उल्लिखित लेखक ने हुज़ूर अलैहिस्सलाम की ज़िंदगी के हालात पर सिर्फ़ नुक्ताचीनी नहीं की बल्कि आरोप लगाने का भी काम लिया है। जिससे आर्य लेखक और उसके हामियों की सभ्यता और न्याय का हाल मालूम हो सकेगा। महाशय जी हज़रत ख़दीजा रज़ि० के निकाह की बाबत लिखते हैं :

> ''मुहम्मद (सल्ल०) बचपन में यतीम हो गए थे। बहुत समय तक मां की ममता का सुख न देखा था। उस उम्र दार औरत (ख़दीजा) से बियाह कर लेने से दोनों मुरादें (मां और बीवी की) हासिल हुईं।'' (पृ० 11)

पाठक गण! इन सभ्य लोगों की सभ्यता का अंदाज़ा लगाएं कि किन दिल तोड़ने वाले शब्दों में नबी सल्ल० की बीवी हज़रत ख़दीजतुल कुबरा रज़ि० को एक मायना से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मां बताया है। यह है आर्यन सभ्यता का नमूना और यह है उनकी हिमायत हक़ की मिसाल जिस पर हमें यह कहने का हक़ हासिल है :

न पहुंचा है न पहुंचेगा तुम्हारी ज़ुल्म केशी को
बहुत से हो चुके हैं गरचे तुमसे फ़ितना गर पहले

समाजियो! तुम तो अपने मुंह से बड़ी सभ्यता के दावेदार हो और कहा करते हो कि हम वही बात कहते हैं जो इस्लामी किताबों में दर्ज है, क्या इस बेहूदा मिसाल का सुबूत भी तुम किसी इस्लामी किताब में दिखा सकते हो?

दूसरा रिसाला

रंगीला रसूल के अलावा इस प्रकार का ज़हरीला एक रिसाला विचित्र जीवन लेखक पंडित काली चरण नागरी में प्रकाशित हुआ। जिसका उल्लेख भी मौक़ा-ब-मौक़ा होगा।

मुसलमानों से ख़िताब

बिरादराने इस्लाम! आज कल जो कुछ ग़लत बातें आप लोग इस्लाम और पैग़म्बरे इस्लाम अलैहिस्सलाम की शान वाला शान में सुनते हैं और उनसे दुखी होना लाज़मी है, मगर एक मायना से यह ख़ुशी की बात भी है। वह यूं कि विरोधियों की बुरी बातों और दिल तोड़ने से क़ुरआन मजीद की एक भविष्यवाणी की पुष्टि होती है। तो आप ध्यान से सुनिए इरशाद है :

وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَذًى كَثِيْرًا۔

तुम लोग इस्लाम विरोधियों और इन्कारियों से सख़्त सख़्त बातें सुनोगे।
(पारा 10, रुकूअ 4)

अर्थात इस्लाम विरोधी तुम्हारे और तुम्हारे मज़हब के हक़ में सख़्त से सख़्त बुराई करेंगे। जो तुम हमेशा सुनोगे। तो यह है भविष्यवाणी। मगर तुम मुसलमानों का उस समय फ़र्ज़ क्या होगा। वह भी सुन लो :

وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ۔
پارہ ٹ رکوع ۴

अगर तुम मुसलमान (उनकी सख़्त बातें सुनकर) सब्र करोगे और ख़ुदा से डरते रहोगे तो यह खुदा के निकट पसन्दीदा काम होगा।

तो बिरादराने इस्लाम! आप लोगों को जो ऐसी सख़्त बातों से दुख होता है तो उस दुख में उस ख़ुदाई हुक्म को अपना उद्देश्य बना लिया करो। और सख़्त बातें करने वालों को ख़ुदा के हवाले कर दिया करो। सच तो यही है :

आर्य लेखक का बात करने का ढंग

जब से स्वामी दयानन्द ने आर्यों को सख़्त बात करने और दिल दुखाने की घुट्टी दी है। आर्य समाजी उस रंग में रंगे गए हैं। ख़ास कर हमारे सरदार हज़रत मुहम्मद सल्ल० की शान वाला शान में उनकी यह हालत है कि सिर्फ़ एक वचन के कलिमे से याद करते हैं। जैसे मुहम्मद आया। मुहम्मद आ गया, मुहम्मद बोला आदि। हालांकि किसी मामूली राजा नवाब बल्कि किसी समाज के प्रधान का ज़िक्र भी इज़्ज़त से करते हैं। लेकिन करोड़ों बल्कि शुरू से आज तक अरबों इंसानों के सभ्य और जान से प्यारे मज़हबी पेशवा का नाम ऐसे शब्दों से लेते हैं कि सुना नहीं जाता। उसके जवाब में अगर हम भी उनके गुरु को मात्र दयानन्द के एक वचन शब्द से याद करते तो हम पर कोई आपत्ति न होती। लेकिन हमने न कभी पहले ऐसा किया है और न इस जवाब में करेंगे। क्यों? इसलिए कि हम जिस रसूल सय्यदुल बशर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वजह से नाराज़ हैं उसी की शिक्षा है कि :

हर इंसान से उसकी इज़्ज़त के लायक़ बर्ताव किया करो। (हदीस)	اَنۡزِلُوا النَّاسَ مَنَازِلَهُمۡ (الحديث)

अर्थात जो किसी क़ौम का बड़ा है, उसके साथ बड़ों का सुलूक किया करो। आर्य समाजी अगर इस नैतिक शिक्षा पर अमल नहीं करते तो वे उसके ज़िम्मेदार हैं। हम क्यों अपने सरदार के हुक्म का उल्लंघन करें।

मुहम्मद (सल्ल०) और स्वामी

तो आगे को हम उच्च आचरण के उस्ताद, महान सुधारक पैग़म्बरे इस्लाम अलैहिस्सलाम की शिक्षा की पाबन्दी में दयानन्द को सिर्फ़ दयानन्द नहीं लिखेंगे, बल्कि अपने दस्तूर के अनुसार उनके सम्मानित लक़ब से स्वामी दयानन्द लिखेंगे ताकि साबित हो कि इस्लाम के हीरो ने दुनिया में नैतिक शिक्षा किस ऊंचाई तक पहुंचाई है।

आर्यों में निकाह का तरीक़ा

रंगीले लेखक की सारी आपत्तियां हुज़ूर अलैहिस्सलाम की घरेलू ज़िंदगी पर हैं। इसलिए सबसे मुक़द्दम आर्यों और इस्लाम की शिक्षा निकाह को देखना है कि इन दोनों में क्या फ़र्क़ है। कौन नहीं जानता कि इस्लाम में निकाह का यही तरीक़ा है कि मर्द औरत की मर्ज़ी से दोनों का समझौता किया जाता है कि तुम एक दूसरे से उम्र भर पाक निबाह करना। अगर कोई पक्ष (मर्द हो या औरत) निकाह करने में नाराज़ हो तो निकाह न होगा। इसके विपरीत, आर्यों के गुरु की शिक्षा है।

विवाह की आठ क़िस्में

विवाह आठ प्रकार का होता है। एक बराहम, दूसरा देव, तीसरा आरश, चौथा प्रजापत, पांचवां आसुर, छठा गांधरप, सांतवां राक्षस, आठवां पीषाच। इन विवाहों का विवरण यह है कि :

1. दूल्हा व दुल्हन दोनों पूरी तरह ब्रह्मचर्य से परिपूर्ण धार्मिक और सदाचारी हों उनकी परस्पर रज़ामंदी से विवाह होना बराहम कहलाता है।
2. भारी यज्ञ करने में यज्ञ का काम करते हुए दामाद को ज़ेवर पहनी हुई लड़की का देना देव।
3. दूल्हा से कुछ लेकर विवाह होना आरश।
4. दोनों का बियाह धर्म की तरक़्क़ी के लिए होना प्रजापत।
5. दूल्हा और दुल्हन को कुछ देकर बियाह करना आसुर।
6. बेक़ायदा बेमौक़ा किसी वजह से दूल्हा और दुल्हन की आपसी इच्छा से मेल जोल होना गांधरप।
7. लड़ाई करके जबरन अर्थात छीन झपट या धोखे से लड़की को

हासिल करना राक्षस।

8. ख़ुफ़्ता (सोई हुई) या शराब पी हुई या पागल लड़की से बलात्कार करना पीषाच विवाह कहलाता है। इन सब विवाहों में बराहम सबसे श्रेष्ठ, देव, आरश और प्रजापत दर्मियाने आसुर और गांधरप, निम्नतम राक्षस निन्दित और पीषाच अत्यन्त ग़लत है।" (सत्यार्थ प्रकाश, पृ० 118, अध्याय 4, नम्बर 41)

ये शब्दं हमने उर्दू सत्यार्थ प्रकाश पहले एडीशन से नक़ल किए हैं। चौथे एडीशन में आर्यों ने एक कमाल किया है। शुरू में यह शब्द बढ़ा दिए हैं। "विवाह (औलाद पैदा करने का तरीक़) आठ प्रकार का होता है।

यह ज़्यादती भी हमें हानिकारक और उनको लाभकारी नहीं बल्कि हमें लाभकारी है। यद्यपि स्वामी जी ने नम्बर 7 और नम्बर 8 को निन्दित और बड़ा अप्रिय लिखा है। लेकिन इतना तो माना है कि निकाह हो जाता है और औलाद जो इन दो क़िस्मों से पैदा होगी जाइज़ वारिस कहलाने की हक़दार है।

पाठको! सोच विचार कीजिए, किस क़दर लज्जाजनक और ख़तरनाक शिक्षा है। किसी की मासूम लड़की को जबरदस्ती या धोखे से छीन कर या धोखे से शराब पिलाकर निकाह कर लें। तो स्वामी जी के अनुसार निकाह जाइज़ होगा। यद्यपि अप्रिय और नापसन्द कहा जाए। लेकिन बीवी बनाकर उस मज़्लूम लड़की को रखने का हक़ तस्लीम है और उससे पैदा हुई औलाद जाइज़ होगी। (उफ़ रे ज़ुल्म!!!) नम्बर 6 भी ख़ास विचार योग्य है जो बेशक जाइज़ है। आर्यों की घरेलू ज़िंदगी की शुरुआत दिखाकर हम असल जवाब पर आते हैं।

जवाब की भूमिका

रंगीले लेखक ने नबी सल्ल० की पहली पच्चीस साला ज़िंदगी को ब्रह्मचर्या (पाक) ज़िंदगी कहकर भी एक ख़ुफ़िया सी चोट की है। अतएव

उसके शब्द यह हैं :

"हम सर्व प्रथम एक नज़र मुहम्मद सल्ल० के ब्रह्मचर्य के ज़माना पर डालना चाहते हैं क्योंकि दुनिया में ऐसे बोसीदा दिमाग़ लोग[1] मौजूद हैं जो बेकार में ही भले मानसों की आदात पर सन्देह करते हैं। हम मुहम्मद सल्ल० को ब्रह्मचारी मानते हैं, क्योंकि उसने इस बारे में अपनी गवाही आप दे रखी है, एक स्थान पर आप फ़रमाते हैं :

"एक रात मैं क़ुरैशी लड़के के साथ मिलकर रेवड़ चरा रहा था। मैंने उस लड़के से कहा कि अगर तू रेवड़ की पासबानी करे तो मैं जाऊं और जिस काम में नवजवान रात का समय गुज़ारते हैं, मैं भी गुज़ार आऊं। यह कहकर मुहम्मद सल्ल० मक्का चला गया, मगर वहां एक शादी की दावत ने उसका ध्यान अपनी तरफ़ कर लिया और उसे नींद आ गई।"

"एक और रात वह फिर इसी इरादे से मक्का पहुंचा। मगर जन्नत के नग़मों ने उसके दिल को बस में कर लिया। वह वहीं बैठ गया और सोते सोते सुबह कर दी। मुहम्मद सल्ल० कहता है कि इन दो घटनाओं के बाद मेरा दिल बुराई की तरफ़ नहीं बढ़ा।" (हयात मुहम्मदी मुअल्लिफ़ा मयूर साहब)

"हमें मुहम्मद (सल्ल०) के कथन पर भरोसा है क्योंकि उसे अमीन कहा गया है, हम मानते हैं कि उसका दिल गुनाह के कामों से बरी था। दो ही बार उसे शैतान ने गुमराह किया, मगर अल्लाह की मदद शामिले हाल हुई और हमारा रंगीला रसूल उस गुमराही के कुएं से बाल बाल बच गया। कम से कम उसने व्यवहार में गुनाह नहीं किया।" (पृ० 7-8)

1. जैसे आर्य समाजी।

इस बयान में सर विलियम मयूर के हवाले में महाशय ने सख़्त बेइमानी की है पहले हम सर विलियम की असल इबारत नक़ल करते हैं। मयूर साहब ने एक सुर्ख़ी मुक़र्रर की है।

मुहम्मद की प्रतिष्ठित व पवित्र जवानी

अनुवाद : जवानी की उम्र में मुहम्मद (सल्ल०) के ब्रर्ताव (आचरण) की सच्चाई और आदतों की पाकी के बयान करने में जो मक्का के लोगों में बड़ी कमयाब थी। सब लेखक सहमत हैं।

(1) All the authorities agree in ascribing to the youth of Mohammad a correctnes of department a purity of manners care enemy the people of macca .

इसकी शर्म व हया सम्पूर्ण तौर पर महफ़ूज़ बयान की जाती है।

(2) his Moderty is said to have been Miraculons by preserieed

पैग़म्बर साहब (सल्ल०) से एक रिवायत यूं है कि मैं एक रात एक क़ुरैश लड़के के साथ बकरियों का गल्ला चरा रहा था।

(3) I was engaged one Night (sarunsa tradition from the prophet) feeding the flocks in company with a bad of Qurriesh

मैंने उस (लड़के) से कहा कि अगर तुम मेरे गल्ले की हिफ़ाज़त करो तो मैं मक्का में जाकर अपना दिल बहला आऊं। जिस तरह कि नव उम्र लड़के रात को अपने दिल बहलाने के आदी हैं।

(4) And I. said to him. If thou with flocks of ofter my flock I will go in to macca and divert my self there ,as youth are went by night to divert him schurs

लेकिन जैसे ही आप शहर की सीमा तक पहुंचे तो एक बारात के उत्सव ने आपका ध्यान अपनी तरफ़ फेर लिया और आप सो गए।

(5) But no roome bed be reached the precinets of the city, them a marrenge feast engaged liis attention, be fat a sleap .

फिर एक और रात को आप शहर में उसी इरादे से दाख़िल हुए तो आप पाक लुक़्मों की वजह से रोके रखे गए आप नीचे बैठ गए और सुबह तक सोए रहे।

(6) One anathere night entention , he was errested by heaveninly srtrains of music and sitting down He slept hill morning

(7)_ Thus he again escaped tempatations

इसी तरह फिर भी आप सांसारिक मनोरंजन की इच्छा से बचे रहे। इसके बाद मुहम्मद (सल्ल०) का कथन है, मैंने फिर कभी भी बुराई का इरादा नहीं किया। यहां तक कि मैं नुबुवत के पद पर पहुंचाया गया।

(8) And after this added mohammad I no more sought aternice even I had attainded I had attainded in to the praphatic office

सर मयूर साहब की यह अंग्रेज़ी इबारत और उसका अनुवाद ही हुज़ूर अलैहिस्सलाम की पाक ज़िंदगी का साफ़ साफ़ ऐलान कर रहे हैं लेकिन दुश्मन का ध्यान दिलाने के लिए हम इसका और स्पष्टीकरण करते हैं।

अरब में मजालिस होती थीं। जैसे आजकल शालीन मुल्कों में क्लब होते हैं। लोग रात के समय वहां बैठकर शेअर व शायरी करते और मुल्की

घटनाओं का वर्णन किया करते थे। इस रस्म का सुबूत किताब "बुलूग़ुल अरब फ़ी अहवालुल अरब" से मिलता है। मयूर साहब ने इस स्थान पर स्वयं तारीख़ तबरी का हवाला दिया है। तारीख़ तबरी को देखें तो उसके दूसरे भाग में ये शब्द मिलते हैं :

حتى أدخل مكة فأسمر بها كما يسمر الشباب (صفحہ ١٩٦)

"अर्थात हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने साथी लड़के को कहा कि मैं चाहता हूं कि मक्का में जाऊं और इस तरह बातें करूं और हिकायतें सुनूं जिस तरह जवान लड़के सुनते हैं।"

ये शब्द बात को बिल्कुल साफ़ कर रहे हैं कि मक्का में जाने से हुज़ूर का कोई बुरा इरादा न था, जैसा कि विरोधी ने इशारा किया है। बल्कि मुल्की रस्म के मुताबिक़ एक मामूली काम था। लेकिन चूंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का समय शुरू से ऐसे मामूली कामों में ख़र्च न होता था। अर्थात महाशय विरोधी भी मानता है :

> "मुहम्मद (सल्ल०) एकान्त पसन्द आदमी था। विचारों की दुनिया में मस्त रहता। पहाड़ों में, मरुस्थल में, मैदानों में, एकान्त के गोशे में जा बैठता और अपने दिल से बातें किया करता था।" (रंगीला, पृ० 12)

इस लिए हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने इस मामूली काम को भी जो मुल्की रस्म के मुताबिक़ हर तरह जाइज़ था, बल्कि आज कल भी लाइब्रेरियों में अख़्बार के अध्ययन के रूप में अच्छा समझा जाता है अपनी ऊंची शान के लिहाज़ से नापसन्द करके फ़रमाया :

ما هممت بعدها بسوء (طبری)

अर्थात मयूर साहब के कथनानुसार "मैंने कभी भी (ऐसे जाइज़) मक्रूह काम का इरादा न किया।"

समाजियो! तुम्हारा रंगीला लेखक सच कहता है।

मुहम्मद (सल्ल०) की ज़िंदगी शिक्षा प्रद ज़िंदगी है। नसीहत भरी, इबरतों से भरपूर, वास्तव में रहनुमा है। वास्तविक मायनों में रहनुमा है।" (पृ० 6)

सच है :

मुझ में एक ऐब बड़ा है कि वफ़ादार हूं मैं
उनमें दो वस्फ़ हैं बद ख़ू भी ख़ुद काम भी हैं

संक्षिप्त जवाब

महाशय लेखक की सारी आपत्तियां और गुस्ताख़ियों का ख़ुलासा यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बहुत सी बीवियां कीं और उन बीवियों से आप रंगरलियां करते। अर्थात बीवियों के अनुसार ख़ुश मिज़ाजी से ज़िंदगी गुज़ारते थे। मज़े की बात यह है कि बड़े गर्व से वह यह भी मानता है कि :

"मुहम्मद (सल्ल०) का पहला निकाह पच्चीस साल की उम्र में हुआ। यहां तो आर्य समाजियों को मानना होगा कि मुहम्मद सल्ल० ने शास्त्र के मुताबिक़ ज़िंदगी का पहला हिस्सा ब्रह्मचारी रहकर गुज़ारा। मुहम्मद सल्ल० ब्रह्मचारी था, उसका हक़ था कि शादी करे।" (पृ० 7)

वह यह भी मानता है कि :

"मुहम्मद सल्ल० ब्रह्मचारी था, उसने पच्चीस साल की उम्र तक शादी नहीं की और जवानी की हालत के अनुभव के बावजूद बदकारी से बचा रहा।" (पृ० 8)

और विरोधी को यह भी तस्लीम है :

"ख़ाना दारी के पच्चीस साल की अवधि में मुहम्मद सल्ल० एक ही बीवी पर आश्रित रहा और वह भी दो पतियों की विधवा

जो निकाह के समय चालीस साल की और देहान्त के समय पैंसठ साल की थी। उस बुढ़िया से उस जवान की निभ गई। यह बात मुहम्मद सल्ल० के पवित्र जीवन पर दलालत करती है।" (रंगीला, पृ० 18)

सच है : श्रेष्ठता वह है जिसका दुश्मन भी क़ायल हो।

यह मान लेने और इक़रार करने के बावजूद आर्य लेखक ने जो कुछ आपत्तियां नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़ानादारी पर की हैं। वे एक उसूली ग़लती की बिना पर हैं। इसलिए इस संक्षिप्त जवाब में हम पहले वे उसूल बताना चाहते हैं जिनकी पाबन्दी करना हर एक धर्मात्मा बल्कि हर एक शरीफ़ आदमी का फ़र्ज़ है।

क़ुदरती उसूल

आर्य समाज इस उसूल को मानती है कि क़ानूने क़ुदरत ख़ुदा का काम है जो काम क़ानूने क़ुदरत के मुताबिक़ हो वह आपत्तिजनक नहीं। उस पर आपत्ति करना स्वयं आपत्ति का निशाना बनना है। तो इस उसूल के मुताबिक़ हम देखते और आर्य समाज को दिखाते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की घरेलू ज़िंदगी बिल्कुल क़ानूने क़ुदरत के मुताबिक़ थी। वे ध्यान से सुनें :

हम इंसान में तीन इच्छाओं का सुबूत देखते हैं। खाने, पीने की इच्छा जो पैदाइश के समय से मौत तक दूध पीते बच्चे, नाबालिग़ और बूढ़े सब को बराबर है। इनके क़ुदरती होने में क्या शक है? (कदापि नहीं)

तीसरी इच्छा मर्द, औरत की है जो इंसानों के अलावा जानवरों में भी बराबर पाई जाती है। बालिग़ होने पर नर को मादा की और मादा को नर की तरफ़ रुची होती है जो पहली दोनों इच्छाओं की तरह बिल्कुल क़ुदरती है इसमें भी पहली की तरह किसी इंसानी काम को दख़ल नहीं। मतलब ये तीनों इच्छाएं बराबर क़ुदरती हैं। पहली दो इच्छाओं को पूरा करने के

लिए जिस तरह इंसान नैतिक और धार्मिक उसूल के मातहत पाबन्द है कि अपनी खाने पीने की इच्छाओं को पूरा करे। तीसरी इच्छा के पूरा करने में भी पाबन्द है कि उन्हीं उसूल के मातहत जिस तरह चाहे उसको पूरा करे अर्थात उसका मादा से मिलाप जानवर की तरह न हो जो बिल्कुल स्वार्थ पर आधारित होता है बल्कि सभ्यता के सही उसूलों पर हो। जिससे दोनों की ज़िंदगी पर कोई ग़ैर मामूली अनुचित असर न पड़े, इसी लिए क़ुरआन मजीद में जहां निकाह का ज़िक्र आता है एक जामेअ बरकात शब्द आता है जो सब ख़ुशियों को शामिल है अर्थात :

مُحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسَافِحِيْنَ

निकाह इस उद्देश्य से करो कि सांस्क्रतिक उसूल के मातहत पाकीज़ा ज़िंदगी गुज़ारे न सिर्फ़ वीर्य निकालने को। स्वामी दयानन्द भी इस उसूल के पाबन्द नज़र आते हैं जो सभ्यता के उसूल के विरुद्ध होने के बावजूद सारी उम्र ब्रह्मचारी रहने के निकाह के ताल्लुक़ से रहना इंसानी तरीक़ा और बेताल्लुक़ निकाह के मिलाप को हैवानी काम बताते हैं।

(सत्यार्थ प्रकाश, अध्याय 4, पृ० 145)

जहां तक देखा जाता है सभ्यता के उसूल के मानने वाले सब सहमत हैं कि क्या इंसानी नफ़्सानी इच्छा के पूरा करने और क्या नस्ले इंसानी के बाक़ी रखने को पति पत्नी का संबंध बहुत ज़रूरी है। चूंकि यह संबंध ख़ास उस तीसरी इच्छा के पूरा करने के लिए है। इसलिए उस इच्छा की जितनी भी सूरतें होंगी उन सबके पूरा करने का ज़रिया यही एक ताल्लुक़ निकाह है जो आदमी अपनी समस्त इच्छाओं को इसी ज़रिए से पूरा करेगा वह सभ्य (भला मानस) है और जो इसके सिवा और किसी ज़रिए की तलाश करेगा वह बुरा और राक्षस है। क़ुरआन मजीद में इस जाइज़ ताल्लुक़ के लाभ बताकर सूचना दी है :

فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعَادُوْنَ۔

"अर्थात जो लोग इस निकाह के ताल्लुक़ के अलावा किसी ज़रिए से इच्छा पूरी करेंगे वही क़ानूने क़ुदरत के विरोधी होंगे।"

विस्तृत जानकारी

ताकि आगे चलकर जवाब समझने में आसानी हो, मुनासिब है कि तीसरी इच्छा की हम थोड़ी विस्तृत जानकारी दें।

कौन नहीं जानता कि मर्द को औरत से और औरत को मर्द से कई प्रकार के ताल्लुक़ात होते हैं, पूरी इच्छा तो किसी से छुपी नहीं। इससे कम दर्जा भी होती है। जिसको साफ़ शब्दों में चूमना चाटना कहो या कुछ और कभी यह भी नहीं मात्र दिल्लगी की बातें ही हुआ करती हैं कभी साथ लेटने में मात्र मुलाक़ात है। मतलब यह कि कभी कुछ कभी कुछ यह हर क़िस्म के ताल्लुक़ात ऐसे हैं कि उनमें किसी क़ौम की ख़ास बात नहीं। बल्कि सब इंसान बल्कि सारे जीव भी इसमें शरीक हैं। कबूतर को देखिए कि कबूतरी के सामने किस मुहब्बत से नाचता है। किस किस तरह उसका दिल बहलाता है। मुर्ग़ा जो कुंबा पालने में सब जानदारों से इंसान के बहुत समान है किस तरह मुर्ग़ी के सामने चहल करता और उसको ख़ुश करने की कोशिश करता है? क्या किसी इंसान की शिक्षा से? नहीं बल्कि क़ुदरती शिक्षा से। यही वजह है कि हर एक कबूतर और हर एक मुर्ग़ा बल्कि एक चिड़ा बल्कि हर एक नर इसी तरह अपनी मादा से दिल बहलाता है। यह सब क़ुदरत के निशान हैं। इन पर आपत्ति करना क़ानूने क़ुदरत पर आपत्ति करने के बराबर है। जिसका किसी नास्तिक को भी साहस नहीं।

इसी मन्शा का नतीजा

यद्यपि आम तौर पर लड़की और लड़के की उम्र का अंदाज़ा लगाया जाता है जैसे लड़की 12 साल की हो तो लड़का 16 साल का या लड़की 15 साल की हो तो लड़का बीस साल का। मगर क़ानूने क़ुदरत हमें बताता

है कि जिस तरह खाने पीने में मनपसन्दी को दख़ल है। इसमें भी दोनों की मनपसन्दी ही एक उसूल सही है, अन्य कम, इसको किसी नेचुरल कवि ने यूं लिखा है :

काले गोरे पे कुछ नहीं मौक़ूफ़
दिल के मिलने का ढंग और ही है

क़ुरआन मजीद ने इस क़ुदरती उसूल के मातहत यह फ़रमाया है :

فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ مِنَ النِّسَاءِ۔

"जिन औरतों को तुम पसन्द करो उनसे निकाह करो।"

हम समझते हैं कि हमारा यह संक्षिप्त जवाब काफ़ी है। अब हम विस्तृत जवाब पर आते हैं।

विस्तृत जवाब

हज़रत उम्मुल मोमिनीन ख़दीजतुल कुबरा रज़ि०

हज़रत ख़जीदा रज़ि० की शादी हुज़ूर अलैहिस्सलाम से उस समय हुई जबकि हुज़ूर सल्ल० की उम्र चढ़ती जवानी (25 साल) की थी और ख़दीजा रज़ि० की उम्र चालीस साल। ऐसी जवान उम्र (25 साल) में कोई नव जवान ऐसी उम्रदार औरत से शादी करना पसन्द नहीं करता। रंगीला लेखक यहां तक मानता है कि :

> "हम ख़दीजा रज़ि० को माई कहेंगे क्योंकि उसकी उम्र चालीस साल की थी। जब वह मुहम्मद (सल्ल०) के हरम में दाख़िल हुई या अगर हक़ीक़त ही का व्यक्त करना ज़रूरी हो तो मुहम्मद (सल्ल०) उसके हरम में दाख़िल हुआ।" (पृ० 9)

आप माई कहें तो आपका सौभाग्य है। इसमें शक नहीं कि हमारी तो माई नहीं बल्कि मां है। मगर तुमको आपत्ति क्या? पाठको! आपित्त सुनिए! रंगीला लेखक क्या मज़े ले लेकर लिखता है :

> "मुहम्मद ने (ख़दीजा को) तिजारत का हिसाब दिया और अपनी मज़दूरी लेकर रुख़्सत हुआ। उसकी शर्मीली आंखें, ज़रूरत से कम गो ज़बान, क़ुदरती सुन्दरता उससे बढ़कर व्यापार का खरापन फिर बेतकल्लुफ़ी और सादगी जो दिल में था वही ज़बान पर जो ज़बान पर था वही अमल में, बुढ़िया पर यह तत्काल असर कर गई। उसे (मुहम्मद को) अपनी अकेली ज़िंदगी का शरीक बनाना चाहा।" (पृ० 10)

बन्दाए ख़ुदा! इतनी लम्बी वार्त्ता की क्या ज़रूरत थी। सार ही में कह दिया होता :

हुस्ने यूसुफ़ दमे ईसा यदे बेज़ा दारी

आंचा ख़ूबां हमा दारन्द तू तंहा दारी

या अगर फ़ारसी शेअर मुंह पर न चढ़ता तो उर्दू शेअर ही लिख दिया होता :

हसीन हो, मह जबीं हो, दिल नशीन हो

लक़ब जिनके हैं इतने वह तुम्हीं हो

हज़रत ख़दीजा ने अगर अपने लिए एकान्त का साथी पसन्द किया और हुज़ूर सल्ल० ने उसको शरीक राज़ बनाया तो इससे भला आपको क्या सवाल? हां एक तारीख़ी घटना आपने मयूर साहब की किताब "हयाते मुहम्मद" से नक़ल की है अर्थात वह हमारे किसी तरह विरुद्ध नहीं। मगर हम उसके बारे में भी पाठकों को सूचना करते हैं कि यह सारा क़िस्सा सिरे से ग़लत है। वह क़िस्सा महाशय जी के शब्दों में यूं है। लिखता है :

"ख़दीजा का बाप भी ज़िंदा था। उसकी तरफ़ से डर था कि वह रास्ते में रोड़ा होगा। इस बीच ख़दीजा ने एक दावत की और उसमें अपने और मुहम्मद (सल्ल०) के ख़ानदान वालों को बुलाया। शराब का दौर चलने लगा। ख़दीजा का बाप उस दौर में बह गया। हद से ज़्यादा पी गया बूढ़ा था। बहक उठा। यही वह मौक़ा था जिसकी सबको ताक थी। उसे शादी के कपड़े पहना दिए गए और ख़दीजा का निकाह हो गया। उसे होश हुआ तो हक्का बक्का रह गया। मगर पंछी पिंजरे से निकल चुका था। बुज़ुर्गों की सी सहनशीलता अपनाई और ख़ामोश रहा।"

(हयाते मुहम्मदी मुअल्लिफ़ा मयूर साहब)

मयूर साहब स्वयं इस रिवायत के बारे में वाक़दी का कथन नक़ल करते हैं कि यह रिवायत ग़लत है इसके अलावा इस्लाम के मशहूर और

प्रमाणित इतिहासकार बल्कि इतिहासकारों के उस्ताद इमाम इब्ने जरीर तबरी ने इस रिवायत को सतर्क यूं झुठलाया है कि :

إِنَّ أَبَاهَا مَاتَ قَبْلَ الْفِجَارِ۔ (طبری جلد دوم صفحہ ۱۹۷)

अर्थात हज़रत ख़दीजा का बाप जंग फ़ुज्जार से पहले मर चुका था। और जंग फ़ुज्जार इस निकाह से पहले की है। (तबरी, भाग 2, पृ० 197)

घर का भेदी

सुनो! तुम्हारे दूसरे भाई पंडित काली चरण ने हवाशी मज़मून पर हिंदी में विचित्र जीवन लिखा है इसमें वह लिखता है कि :

> "हज़रत की निकाह की मन्ज़ूरी को सुनकर ख़दीजा ने अपना सेवक अपने चचा उमर बिन साअद के पास भेजा कि मज्लिस में आए।" (पृ० 144)

इससे साफ़ मालूम होता है कि बाप की मौजूदगी तुम्हारे बड़े भाई को भी मान्य नहीं, ख़दीजा के बाप के शराब पीने और उसके बेहोश होने से न इस्लाम पर, न नबी सल्ल० पर कोई आपत्ति है। इसलिए हम उसके और खंडन में जाने की ज़रूरत नहीं जानते। क्योंकि हमारी मन्शा हुज़ूर अलैहिस्सलाम का बचाव है। किसी और का नहीं और हुज़ूर के बारे में तो महाशय के क़लम से यह शब्द निकल गए या खुदा ने निकलवाए कि :

> "ख़दीजा रज़ि० ने मुहम्मद सल्ल० को मुहम्मद बनाया। पच्चीस साल की अवधि में जब तक वह मुहम्मद सल्ल० की बीवी बनकर ज़िंदा रही, मुहम्मद को दूसरी शादी का ख़्याल नहीं आया।"
>
> "आर्य शास्त्रों में ख़ानादारी की अवधि पच्चीस साल मुक़र्रर है यह अवधि मुहम्मद सल्ल० ने बड़ी पाकीज़गी से बसर की। इसलिए हम इसे आर्य ख़ानादार कह सकते हैं?"
>
> (रंगीला, पृ० 15)

आपकी इतनी सच्चाई से हमें उम्मीद है कि अगर ईमानदारी और ईशभय से हुज़ूर सल्ल० की बाक़ी ज़िंदगी पर सोच विचार करें तो बजाए आराया ख़ानादारी के "आर्य सरदार" कहेंगे इंशाअल्लाह :

राह पर तुमको तो ले आए हैं हम बातों में
और खुल जाओगे दो चार मुलाक़ातों में

नतीजा

ख़ुदा का शुक्र है कि विरोधी की निगाह में भी हुज़ूर सल्ल० की पचास साला उम्र साफ़ सुथरी और बेदाग़ है। बाक़ी भी विरोधी इंसाफ़ से देखेंगे। तो इसी नतीजे पर पहुंचेंगे।

महाशय के तीन झूठ

निकाह ख़दीजा के अन्तर्गत रंगीले लेखक ने तीन घटनाएं ऐसी झूठ लिखी हैं जो कभी माफ़ नहीं हो सकतीं।

पहला झूठ

"मुहम्मद को यक़ीन हो गया कि दुनिया गुमराह हो रही है उसे अपनी क़ौम की हालत पर रोना आता। उसके दिल में गहरा दर्द था। जो अरबी भाषा के बड़े प्रभावी शेअर की सूरत में यदा कदा ज़ाहिर हो रहा था। यही क़ुरआन की पहली आयतें हैं। जो किसी अज्ञात कारण से क़ुरआन के आख़िर में दर्ज की गई हैं। उनमें तड़प है तेज़ी है, सच्ची तलब है। बड़ी आरज़ू है। हक़ीक़त की तलाश है।" (पृ० 13)

प्रभावी शेअर न नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कभी बनाए न क़ुरआन मजीद में कोई शेअर मौजूद है बल्कि शेअर का खंडन है :

مَا عَلَّمْنَاهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْبَغِي لَهُ.

न हम (ख़ुदा) ने इस नबी को शेअर बनाना सिखाया, न उसको लायक़ है।

दूसरा झूठ

"मुहम्मद का दुख बढ़ता गया और तसल्ली की सूरत न देखकर आख़िर उसे ख़्याल हुआ कि आत्महत्या कर लेनी चाहिए। आख़िर इस रोने धोने की ज़िंदगी से फ़ायदा? यहां ख़दीजा का उम्रदार होना काम आया कोई नव जवान औरत होती तो पति को पागल समझती और उसका साथ छोड़ देती। आप डरती और उसे डराती। ख़दीजा ने मुहम्मद को ढारस बंधाई मुहम्मद को शक था कि मुझ पर जिन्नों का जादू है। यह ईश्वरीय संकेत नहीं, शैतान की करतूत है। ख़दीजा ने जिन्नों की परीक्षा की और मुहम्मद को यक़ीन दिलाया कि यह फ़रिश्ते हैं। उनका पैग़ाम सही है और जब मुहम्मद ने कहा कि या तो वह दुनिया को बदल देगा, या अपना ही ख़ात्मा कर लेगा, तो ख़दीजा ने दुनिया के बदलने के इरादे को बल दिया और ख़ुद उस नए मज़हब की जिसके प्रचार का मुहम्मद ने मन्सूबा बांधा था। सबसे पहले अनुयायी हुई।" (क़-स-सुल अंबिया)

क़-स-सुल अंबिया में यह क़िस्सा नहीं है न जिन्नों का जादू, न शैतान की करतूत। बल्कि यह सब हवाला शैतानी संकेत कहें तो सही है। कोई ग़ैरतमंद आर्य हमको क़-स-सुल अंबिया में यह हवाला दिखाए तो इनाम ले।

तीसरा झूठ

"मुहम्मद को ईश्वरीय संकेत के समय सख़्त तकलीफ़ होती थी। उसके मुंह से झाग आने लगती, शरीर पसीना पसीना हो जाता। बाहर की सुध बुध न रहती। कुछ का ख़्याल है कि यह

मिर्गी के दौरे थे। मुहम्मद उस समय मरीज़ हो जाता। ख़दीजा उसकी सेवा करती। उस पर कपड़ा डालती पानी के छींटे देती। मतलब यह कि उसे होश में लाती।" (बुख़ारी, अध्याय वह्य)
(रंगीला रसूल, 14)

बुख़ारी में यह हवाला नहीं जिसमें मिर्गी का ज़िक्र हो और ख़दीजा के पानी आदि डालने का उल्लेख हो। यह सब आर्य महाशय की ईमानदारी का सुबूत है।

हां इन तीन झूठों के सिवा एक सच भी उसके क़लम से निकल गया है।[1] लिखता है :

अरब में पाप होता था। बड़ा भयानक पाप होता था और मुहम्मद का दिल भलाई के विचारों से भर रहा था। अरबी मूर्ति पूजक थे और उसने खुले मैदानों में बिन बादल आसमानों में असीमित रेगिस्तानों में किसी असीमित ताक़त का एहसास किया था उसे यक़ीन हो गया कि परमात्मा एक है और उसकी कोई शक्ल व सूरत नहीं।" (पृ० 13)

महाशय सज्जनो! याद रखना आगे को इस्लाम और मुसलमानों पर यह आरोप न लगाना कि ख़ुदा को शक्ल वाला या शरीर रखने वाला कहते हैं। वरना हमें हक़ होगा कि हम तुम्हें यह शेअर सुनाएं :

क्योंकर मुझे बावर हो कि ईफ़ा ही करोगे
क्या वायदा तुम्हें करके मुकरना नहीं आता

महाशय की माई

हज़रत ख़दीजा रज़ि० के हक़ में रंगीले महाशय ने इन शब्दों में आस्था व्यक्त की है :

---

1. झूठा भी कभी सच बोला करता है।

"इसलिए हम ख़दीजा को माई ख़दीजा कहेंगे कि वह उम्र में, अक़्ल में, सूझबूझ में, तजुर्बा व रख रखाव में माई ख़दीजा हैं।"

(रंगीला, पृ० 16)

इसलिए हम भी आर्यों और मुसलमानों की माई (हज़रत ख़दीजा) की दानिशमंदी, तजुर्बाकारी और सूझ बूझ के बारे में व्यक्त करते हैं जो श्रीमान ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हक़ में उस समय व्यक्त किए थे जिस समय (महाशय के कथनानुसार) वह अपने पति को ढारस बंधा रही थीं। न्याय करने वालों के लिए वे शब्द विचार्णीय हैं।

नबी सल्ल० ने ख़दीजा को कहा :

قَالَ لَقَدْ خَشِيْتُ عَلٰى نَفْسِى فقالت خَدِيْجَةُ كَلَّا وَاللّٰهِ لَا يُخْزِيْكَ اللّٰهُ اَبَدًا اِنَّكَ لَتَصِلُ الرَّحِمَ وَتَحْمِلُ الْكَلَّ وَتَكْسِبُ الْمَعْدُوْمَ وَتَقْرِىْ الضَّيْفَ وَتُعِيْنُ عَلٰى نَوَائِبِ الْحَقِّ۔

(صحیح بخاری)

"मुझे अपनी जान का भय है। ख़दीजा ने कहा कदापि आप भय न करें। खुदा आपको कभी ज़लील न करेगा आप रिश्तेदारों का भला करते हैं लावारिसों का बोझ उठाते हैं। बेकसों की मदद करते हैं। मेहमानों की दावत करते हैं और मुसीबतों में लोगों की मदद करते हैं।"

(सहीह बुख़ारी)

यह है राय महाशय की सर्वमान्य माई की जिसका सारांश यह शेअर है :

ग़ज़ब के दिलरुबा हो ग़मगुसारे बेकसां तुम हो
मईने नातवां हो मेज़बां मेहमां तुम हो!!

माई के सपूतो! क्या कहते हो?

हज़रत उम्मुल मोमिनीन आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा व अन अबीहा

दूसरा हमला विरोधी ने हज़रत सिद्दीक़ा के निकाह पर किया है। रंगीले लेखक के बड़े भाई काली चरण ने भी अपने हिन्दी रिसाला ''विचित्र जीवन'' में हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० के निकाह के बारे में कुछ रिवायतें निराधार लिखी हैं। जिनमें ईमानदारी और अमानत के ख़िलाफ़ अमल किया है। अतएव उसने बड़े व्यंग से लिखा है कि :

> ''जब नबी ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० को आइशा से निकाह करने का पैग़ाम दिया तो उससे पहले अबूबक्र मुतइम बिन अदी से आइशा की बाबत वायदा कर चुका था। मगर हज़रत की ज़िद के कारण वायदा पूरा न कर सका।'' (पृ० 140)

इस दावे पर हवाला दिया है रोज़तुल अहबाब पृ० 151 का जो हक़ीक़त में पृ० 105 है। हम इस स्थान के असल शब्द नक़ल किए देते हैं ताकि न्यायी पाठक महाशय जी की अमानत और ईमानदारी पर सूचित हो सकें :

हिन्दी अनुवाद

अबूबक्र सिद्दीक़ के दिल में शंका हुई क्योंकि उन्होंने मुतइम बिन अदी से आइशा का निकाह करने का वायदा किया था और अबूबक्र ने कभी वायदा ख़िलाफ़ी न की थी। इस सबब से ख़ौला (नबी सल्ल० की दूत) को अबूबक्र ने कहा तू यहां मेरे घर में ठहर, मैं आता

فارسی

در خاطر صدیق خدشه پیدا شد چه مطعم
بن عدی عائشه را برائے پسر خود خطبه نموده
بود و ابوبکر قبول کرده و با وے وعده
درمیان داشت و هرگز خلف وعده نه کرده
بود بداں سبب خوله را گفت تو همیں جا
باش و خود بخانه مطعم رفت زنِ مطعم
چوں ابوبکر را از دور دید گفت اے

हूं। यह कहकर अबूबक्र मुतइम के घर को गए, जब उनके घर में पहुंचे तो उसकी बीवी ने उनको दूर से देखकर कहा, क्या तू ऐ अबूबक्र इस उम्मीद से मेरे लड़के को लड़की देना चाहता है कि उसको मुसलमान कर ले। यह कभी न होगा। अबूबक्र ने मुतइम को पूछा कि आप भी यही कहते हैं। उसने कहा, हां मैं भी यही कहता हूं। (जब उन दोनों की बातें ऐसी व्यंग भरे स्वर में सुनीं तो) अबूबक्र ने उसको बेहतर जाना और अपने घर में आकर ख़ौला (दूत) को कहा कि पैगम्बर अलैहिस्सलाम की सेवा में अर्ज़ कर कि निकाह के लिए तशरीफ़ लाएं। ख़ौला गई और अबूबक्र की तरफ़ से नबी सल्ल० को पैग़ाम दिया। हुज़ूर तशरीफ़ लाए और आइशा के साथ आप सल्ल० का निकाह हो गया।

ابوبکر امید آں داری کہ پسر مارا از دین ما بر
گردانی و مسلمان سازی و دختر خود بود
بوسے دہی۔ ایں ہم نخواہد رسید ابوبکر
از مطعم پرسید تو ہم چنیں میگوئی
گفت آرے، صدیق غنیمت دانستہ
ازانجا بخانہ خویش بازگشت و خولہ را
گفت پیغمبر صلی اللہ علیہ وسلم را بگوئی تا تشریف
فرماید۔ خولہ آمد و آں سرور را از زبان
ابوبکر بخواند، حضرت بخانہ وے تشریف
داد و عائشہ را نکاح کرد۔

(جلدی ا دجلد اوّل صفحہ ۱۰۵)

कौन नहीं जानता कि इस प्रकार की बातचीत लड़के वालों की तरफ़ से रिश्ते का इंकार होता है न कि मुतालबा।

पाठको! सोच विचार कीजिए कि सारी इबारत हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ की सफ़ाई और वायदा वफ़ा करने को कैसे साफ़ शब्दों में व्यक्त कर रही है। मगर विरोधी ने आधी इबारत नक़ल करके अपनी अन्तरात्मा को कैसा गड मड किया।

इसी तरह लेखक विचित्र जीवन (हिन्दी) ने कैसा सफ़ेद झूठ लिख दिया है कि :

"नबी ने अपनी प्यारी बीवी आइशा को नाच दिखाया।"

(पृ० 164)

यद्यपि यह ऐसा ग़लत झूठ है कि लेखक को शर्माना चाहिए कि एक शिक्षित पार्टी (आर्य) का क़ायम मक़ाम होकर ऐसी ग़लत बयानी करता है तो जाहिल लोगों का क्या हाल होगा। घटना यह है कि मस्जिदे नबवी में हबशा के फ़ौजी लोग फ़ौजी करतब करते थे। जिसको आजकल बनावटी जंग कहते हैं। ऐसी बनावटी जंग को देखने का शौक़ हर एक को होता है। हज़रत आइशा सिद्दीक़ा ने भी शौक़ व्यक्त किया। हुज़ूर ने मकान की दीवार पर से उसे दिखाया वह नाच न था (क्योंकि नाच हिन्दुस्तानी मुहावरे में वैश्या रंडियों के गाने बजाने को कहते हैं) न कोई नाजाइज़ काम था। हां उसको नाच कहना आर्य लेखक की बेइमानी और मज़हबी पक्षपात है। जिनकी शिकायत उनके गुरु स्वामी दयानन्द को भी ऐसे मज़हबी पक्षपातियों से है। (देखो सत्यार्थ प्रकाश, भूमिका 7)

रंगीले लेखक ने इस वाक्य में अपना सारा ज़ोर और सारी ताक़त दिल दुखाने में ख़र्च कर दी है। सोच विचार कीजिए किस मिलावट और चर्ब ज़बानी से लिखता है :

> "सिनफ़े नाज़ुक (औरत) का प्यार मुहम्मद के स्वभाव में था, यह उसे मर्दों के लिए और ख़ास कर मुत्तक़ी और परहेज़गार मर्दों के लिए एक बरकत ख़्याल करता था। उसकी राए थी कि औरत का इश्क़ मर्द को भलाई करने का बढ़ावा देता है। मुसीबत में दृढ़ बनाता है, आफ़त में दृढ़ता प्रदान करता है, सीने को उभारे रखता है और रूह को नया करता रहता है।"
>
> (रंगीला, पृ० 118)

क्या आपत्ति? हम भूमिका में इसका जवाब दे आए और बता आए हैं कि औरत मर्द का ताल्लुक़ क़ुदरती है। जो कोई इस क़ुदरती संबंध को अच्छी तरह निभाता है, वही शरीफ़ और ईश्वरवादी है जो नहीं निभाता वह दुराचारी या राक्षस है। महाशय जी सुनिए आपके गुरु ने हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुसरण या हिमायत में इसी प्रकार की

शिक्षा दी है। आपको याद न हो तो कान धरिए!

औरतों की हमेशा पूजा करनी चाहिए

"बाप, भाई, पति और देवर[1] उन (औरतों) का सम्मान करें और ज़ेवर आदि से ख़ुश रखें जिनको बहुत बेहतरी की इच्छा हो वे ऐसा करें। :1:

जिस घर में औरतों का सम्मान होता है उसमें आदमी ज्ञानी होकर देव नाम से प्रसिद्ध होते और आराम से रहते हैं और जिस घर में औरतों का सम्मान नहीं होता वहां सब काम बिगड़ जाते हैं। :2:

जिस घर या ख़ानदान में औरतें दुखी होकर तकलीफ़ पाती हैं वह ख़ानदान जल्द तबाह व बर्बाद हो जाता है और जिस घर या ख़ानदान में औरतें आनन्द से साहस और ख़ुशी से भरी रहती हैं वह ख़ानदान हमेशा बढ़ता रहता है। :3:

इसलिए मान मर्यादा की इच्छा करने वाले आदमियों को चाहिए कि सम्मान और त्यौहार के मौक़े पर ज़ेवरात, वस्त्र और आहार आदि से औरतों का हमेशा सम्मान किया करें। :4:

(सत्यार्थ प्रकाश, पृ० 124, अध्याय 4, नम्बर 48)

समाजी मित्रो! कहिए तो स्त्रियों की पूजा किया करते हो?

हां हम को स्वीकार है

कि हमारे हुज़ूर सल्ल० की औरतों पर बहुत कुछ नज़रे इनायत थी इसलिए तो हुज़ूर सल्ल० ने सारे अरब देश बल्कि सारी दुनिया के विरुद्ध अल्लाह के आदेशानुसार लड़की को मां बाप का बल्कि बीवी को पति का भी वारिस बनाया।

1. समाजियो! पति के साथ देवर की साझेदारी क्यों?

दयानन्दी सज्जनो! इस मुहब्बत और न्याय की मिसाल ज़रा वेदिक धर्म में तो दिखाओ तुम्हारे स्वामी ने तुमको स्त्रियों की पूजा करनी सिखाई। मगर यह न हो सका कि बेचारियों को मर्दों के साथ विरासत में भी शरीक कर जाते। क्या यही इस्लाम की ख़राबी है? सच है :

गुल अस्त साअदी व दरचश्म दुश्मनान ख़ार अस्त

इस संबंध में दूसरा वाक्य महाशय लेखक ने कैसा ग़लत लिखा है। जिससे अपने साथियों की आंखों में मिट्टी नहीं कंकरियां डाली हैं।

समाजियो! ध्यान से सुनो!

1. "मुहम्मद ने शायराना तबीयत पाई थी।" (क्या सफ़ेद झूठ है)

2. "ख़दीजा की अत्यधिक उम्र ने दुनिया में औरत की जवानी की बहार का आनन्द न उठाने दिया इस शक्तिशाली धारणा ने एक और रूप धार लिया दुनिया की औरतें दिमाग़ से उतर गईं। जन्नत की हूरों के सपने आने लगे।" (रंगीला, पृ० 19)

महाशय सज्जनो! देखा इस्लाम का चमत्कार तुम्हारा वकील रंगीला लेखक इतनी सी इबारत में क्या कुछ बहकी बहकी बातें कर रहा है। पहले वाक्य का खंडन तो स्वयं क़ुरआन मजीद ने साफ़ साफ़ और खुले शब्दों में कर दिया है। ध्यान से सुनो!

مَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهٗ-

"हम (खुदा) ने नबी को शेअर कहना नहीं सिखाया और न उसे लायक़ है।"

हदीस की किसी किताब या तारीख़ में सुबूत नहीं मिलता कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने कभी एक शेअर भी बनाया हो।

दूसरे वाक्य का जवाब स्वयं महाशय के कलाम में मिलता है जो पहले भी पृ० 43 पर नक़ल हो चुका है और अब फिर नक़ल है, महाशय लिखता है :

"ख़ानादारी की अवधि के पच्चीस साल मुहम्मद एक ही बीवी पर आश्रित रहा और वह भी दो पतियों की विधवा जो निकाह के समय चालीस साल की और देहान्त के समय 65 साल की थी। उस बुढ़िया की इस जवान से निभ गई, यह बात मुहम्मद के पाकीज़ा स्वभाव पर दलालत करती है।" (पृ० 18)

समाजियो! तुम्हारा महाशय कैसे दिल व दिमाग़ का मालिक है कि पृ० 18 पर तो हज़रत ख़दीजा जैसी बुढ़िया बीवी से निबाह करने को हुज़ूर अलैहिस्सलाम को पाक स्वभाव वाला कहता है, जो बिल्कुल सच है। मगर कुछ पंक्तियों के बाद 19 पर उस बुढ़िया से निबाह करने को दुख व अफ़सोस क़रार देता है। यह किस प्रकार का ज़ुल्म या बदहवासी है? दोनों उल्लिखित इबारतें ध्यान से पढ़ो।

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा के निकाह पर सबसे बड़ी आपत्ति विरोधी को यह है कि दस साल की कमसिन लड़की थी और हुज़ूर की उम्र 53 साल थी। इसलिए महाशय जी मशवरा देते हुए अपनी राए व्यक्त करते हैं :

"मुहम्मद अबूबक्र की लड़की को अपनी लड़की बना लेता। उसकी शादी अपने हाथों से करता, दहेज़ देता और उसका बाप बन जाता तो बड़ी अच्छी बात होती।" (रंगीला, पृ० 21)

अल्लाह रे तेरी शान! यह उस क़ौम की तरफ़ से मशवरा है जो नेचुरल क़ानून को अपना उसूल जानती है। महाशय जी और उनके साथी जानते हैं कि मां बाप और औलाद का संबंध क़ुदरती है। बनावटी नहीं कि किसी के बनाने से बने। इसी लिए क़ुरआन मजीद ने ले पालक को अपना बेटा कहने से मना कर दिया है। ध्यान से सुनो! इरशाद है :

ادْعُوهُمْ لِآبَائِهِمْ هُوَ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ

(ले पालकों को उनके बापों के नाम से बुलाया करो। अल्लाह के

निकट यह बहुत न्याय की बात है)

मगर जिस क़ौम का यह उसूल हो कि नियोग ज़ादा अपने असल बाप (नुत्फ़ा वाले) से कटकर बनावटी बाप का बेटा कहलाए (सत्यार्थ प्रकाश) वह क्यों न ऐसा मशवरा दें।

हम विगत भूमिका में पति पत्नी के संबंधों पर विस्तार से लिख आए। देखिए किताब पृ० 44-46, मगर महाशय विरोधी बे सोचे समझे हास्य से लिखता है :

> ''आइशा अपनी गुड़ियां साथ लाई, तरेपन साल के नोशा भी कभी कभी अपनी इस होनहार बीवी के मासूमाना खेलों में शरीक हो जाते। तरेपन साल के बुड्ढों का बच्चों के साथ खेलना बुराई नहीं। लेकिन किसी और हैसियत में होना चाहिए। पति की हैसियत में नहीं।'' (रंगीला, पृ० 21)

किसी किताब का हवाला नहीं दिया। जिससे यह साबित हो कि हुज़ूर सल्ल० आइशा रज़ि० के साथ गुड़ियां खेला करते हैं। हम हैरान हैं कि इन चालाकियों से आर्य समाज के ख़्याल में विजयी होने का पुलाव पक रहा है :

इसके अलावा हम कहते हैं कौन सी अक़्ली दलील इस बात में बाधक है कि पति अपनी पत्नी की तफ़रीह में शरीक न हो (यह जवाब घटना को मानने के बाद है) यद्यपि आर्यों और हिन्दुओं के सर्वमान्य गुरु मनू जी धर्म शास्त्र के संस्थापक राजा को इजाज़त देते हैं :

> ''राजा खाना खाकर औरतों के साथ महल में बहार करे।''
> (अध्याय 7, श्लोक 221)

महाशय ने हज़रत आइशा सिद्दीक़ा के बारे में दो आरोप अजीब गढ़े हैं :

(1) इफ़क आइशा जो इस्लामी किताबों में ख़ास कर क़ुरआन शरीफ़

में निन्दित है। इसकी सेहत की तरफ़ इशारा करके मुसलमानों के दिलों को घायल किया।

(2) सहाबा किराम के ज़माने में मसला ख़िलाफ़त पर जो लड़ाई हुई उसमें आइशा को भी साझी बनाकर बहु पत्नि विवाह को इस्लाम का विनाश बताया है। अतएव महाशय विरोधी के असभ्य शब्द यह हैं :

> "मुहम्मद सल्ल० की बेटी फ़ातिमा, माई ख़दीजा की यादगार फ़ातिमा अली से बियाही हुई थी उधर फ़ातिमा का पति अपना दामाद अली है, इधर चहेती बीवी आइशा है। मुहम्मद सल्ल० किधर को जाए, घर में गृह युद्ध की बुनियाद पड़ गई। इस गृह युद्ध ने मुहम्मद की वफ़ात के बाद इस्लाम की तारीख़ को निरंतर ख़ून ख़राबे की तारीख़ बना दिया।" (पृ० 24)

मालूम नहीं महाशय जी को यह लिखते हुए कौरवों पांडवों की लड़ाई का नक़शा सामने आ गया या हिन्दुस्तान में मुग़लिया शासन के वारिसों की जंग दिखाई दी। ख़ुदा जाने यह बहकी बहकी बातें क्यों करने लग गए, हमें तो किसी इस्लामी किताब में यह नक़शा गृह युद्ध का दिखाई नहीं देता। हां हम मानते हैं कि ख़िलाफ़त पर लड़ाई हुई। मगर उसका कारण यह न था जिसका विरोधी ने मन्सूबा गढ़ा है, बल्कि सियासत में राय का मतभेद था। हां पहले नम्बर के बारे में जवाब स्वयं क़ुरआन मजीद में मौजूद है :

أُولَٰئِكَ مُبَرَّءُونَ مِمَّا يَقُولُونَ ۔

(आइशा आदि पर जो बोहतान और आरोप लगाया गया है वह उससे पाक हैं)

विरोधियों का आरोप अगर आरोपी पर धब्बा लगा सकता है तो तुमको याद होना चाहिए कि तुम्हारे स्वामी श्रद्धानन्द पर हाल ही में जो घोल माल व अनैतिक आदि के आरोप लगाए गए हैं क्या वे भी सही हैं?

जिनमें से नमूना के तौर पर एक इश्तहार यह है :

श्रद्धानन्द की शर्मनाक नैतिक मौत
रुपये कमाने के लिए संन्यासी होने की हक़ीक़त
(पब्लिक फ़ण्डों का हिसाब पूछने पर बाज़ारी गालियां)

"हमने श्रद्धानन्द से अख़्बार ऐशिया दिल्ली में कई क़ौमी फण्डों के हिसाब का मुतालबा किया था। जिसके जवाब में उसकी तरफ़ से उसके तेज अख़्बार में हमें गन्दी गालियां देकर अपनी ख़ानदानी सभ्यता का सुबूत दिया गया है और जो हिसाब दिया गया वह बड़ा संदिग्ध और जाली है। जिससे साफ़ साबित होता है कि श्रद्धानन्द ने क़ौमी फ़ण्डों का बहुत सा रुपया डकार लिया है। इन जवाबात से श्रद्धानन्द की नैतिक मौत हो गई अब वह तंग आकर हमें कई ज़रिए से बदनाम कर रहा है और अपने चेलों को हमारे विरुद्ध तैयार कर रहा है। लेकिन हम उसको सचेत करते हैं कि आजकल ग़दर का ज़माना नहीं है अगर किसी मौक़े पर हमारा बाल भी बेका हुआ तो श्रद्धानन्द अपने चेलों के साथ बड़े घर में नज़र आएगा। ऐसी धमकियां देकर वह क़ौमी फ़ण्डों का रुपया उगलने से बच नहीं सकता। अब हम मजबूर होकर जनता को यह बतलाते हैं कि यह आदमी संन्यासी क्यों हुआ? हम जो कुछ भी लिखेंगे, हर एक बात का काफ़ी सुबूत हमारे पास मौजूद है। घटनाएं यह हैं कि 1900 ई० में सबसे पहले आर्य समाज कालिज पार्टी वालों ने शेरे पंजाब लाला लाजपत राय जी और महात्मा हंसराज जी के नेतृत्व में इस व्यक्ति पर क़ौमी फ़ण्डों के ग़बन करने का आरोप लगाया था। ये दोनों लोग मामूली आदमी नहीं हैं। इसके बाद 1905 ई० में कई बार प्रतिष्ठित लोगों ने आर्य प्रति मज़हबी सभा

पंजाब में इस श्रद्धानन्द (पूर्व मुंशी राम) पर चौदह हज़ार से अधिक एक रक़म, हज़ार की दूसरी रक़म ग़बन करने की बाबत केस दायर करके उसको एक आरोपी की हैसियत में पेश किया था और उस पर भरी अदालत में यह आरोप पत्र भी लगाया गया था कि :

(1) ''यह व्यक्ति कदापि इस क़ाबिल नहीं कि कोई पब्लिक फ़ण्ड इसके हवाले किया जाए।''

''यह व्यक्ति कदापि इस क़ाबिल नहीं कि इसको ज़िम्मेदारी का पद दिया जाए। क्योंकि मामूली मतभेद होने पर भी यह हर व्यक्ति को कष्ट पहुंचाने और झूठे आरोप लगाकर बदनाम करने से नहीं चूकता।''

जब उल्लिखित ग़बन का केस इस पर चला तो यह उन दिनों गुरुकुल कांगड़ी का मुख्य अधिष्टाता था और इसके साथ एक पार्टी थी। उस समय तो यह कहकर उसने जान बचाई थी कि वह रुपया किसी व्यक्ति को दे रखा है। यह उन दिनों हज़ारों रुपयों का कर्ज़दार भी था। उसका क़र्ज़ा उतारने के लिए उसकी किताबें लेकर एक आर्य कम्पनी क़ायम हुई थी। लेकिन कई साल के बाद जब वह ग़बन शुदा रुपया वसूल न हुआ और स्वयं उसकी पार्टी वालों को मालूम हो गया कि पंद्रह हज़ार से अधिक रुपया यह व्यक्ति स्वयं ही खा गया है तो उसकी पार्टी भी उससे विमुख हो गई। तब उसने घबराकर अपनी पोल खुलती देखकर एक व्यक्ति से यह सलाह की कि :

''धर्म के कामों में तो रुपये का हिसाब पूछा जाता है, लेकिन पॉलिटिकल काम में बड़ी इज़्ज़त है कोई हिसाब किताब पूछता ही नहीं। इसलिए मैं तो संन्यासी होकर पॉलिटिकल काम शुरू करूंगा और तुम भी मेरे साथ रहना।''

अतएव पहली बैसाख 1974 संबत में बग़ैर गुरु के आप से आप सर मुंडा कर और गेरू कपड़े पहनकर अपना नाम श्रद्धानन्द स्वयं ही रखकर शास्त्रों के तरीक़े के ख़िलाफ़ संन्यासी बन गया और रुपया कमाने के लिए दिल्ली को तिजारती शहर देखकर उसने अड्डा जमाया। जिस उपरोक्त व्यक्ति से सलाह ली थी उसको धोखा देकर उसका लगभग चार हज़ार रुपया उसने हज़म किया यह धोखा बाज़ी देखकर वह आदमी उससे अलग हो गया। वह आदमी दिल्ली में ही रहता है। श्रद्धानन्द के इंकार करने पर हम पब्लिक को उसका नाम बताएंगे। संन्यासी होने के बाद श्रद्धानन्द ने ख़ूब जाल फैलाया। गढ़वाल में अकाल पड़ने पर गढ़वाल रिलीफ़ फ़ण्ड खोला उसमें उसके पास रुपया कितना आया था और कितना रुपया किस तरह ख़र्च हुआ था यह बतलाते हुए घबराता है। कहा गया था कि बाक़ी 28 हज़ार रुपया बचाया था। हमने उसका हिसाब मालूम किया तो श्रद्धानन्द ने अपने अख़्बार तेज में कमीनी गालियों के साथ उसका जवाब ऐसा संदिग्ध दिलाया कि वह ऐडीटर तेज सहित जालसाज़ी में फंस गया। अर्थात पहले तो 28 हज़ार रुपया बाक़ी बतलाकर उसका हिसाब (बिला सुबूत) बतला दिया। जब हमने ललकार कर पूछा कि श्रद्धानन्द ने अपने लड़के इंदर को इस फ़ण्ड से जो पांच हज़ार रुपये अवैध तरीक़े से प्रेस और अख़्बार जारी करने को दिया था। वह कहां है तो झूठ बोलते हुए 13 मार्च को तेज अख़बार में घबराहट में लिख डाला कि :

"वह पांच हज़ार रुपये प्रेस में लगा दिया था। लेकिन वह अचनती खाता में पड़ा हुआ है और वह श्री मालवी जी को देना है।" श्री मालवी जी उन दिनों दिल्ली ही में थे मगर उनको यह रुपया नहीं दिया गया और अचनती खाता में ही पड़ा हुआ

हज़्म हो जाएगा। लेकिन अब सवाल यह होता है कि पहले तो 28 हज़ार कुल बाक़ी रुपये का हिसाब तेज में बतला दिया गया था, फिर यह पांच हज़ार कहां से निकल आया और इस तरह 23 हज़ार रुपये होता है। अतः साफ़ साबित होता है कि यह हिसाब जाली है और यह जालसाज़ी धर्म और क़ानून के ख़िलाफ़ है। मानो एक फ़ण्ड के एक ही हिसाब में हमने श्रद्धानन्द को क़ौमी आरोपी की हैसियत से क़ौम के सामने खड़ा कर दिया है। अभी वह उस फ़ण्ड के तमाम ख़र्च किया हुआ और बाक़ी बचे हुए का पूर्ण हिसाब पेश करे तो कई जगह ऐसी ही गड़बड़ मिलेगी। अब हम अन्य फ़ण्डों का ज़िक्र करते हैं :

(2) पॉलिटिकल काम छोड़कर श्रद्धानन्द ने शुद्धि का काम शुरू किया। इस सिलसिले में भारतीय शुद्धि सभा आगरा से श्रद्धानन्द का 9 हज़ार रुपया लेना 13 मार्च तेज अख़बार में दर्ज है और बतलाया है कि सूबा दिल्ली में इस रुपये से श्रद्धानन्द ने एक हज़ार के क़रीब शुद्धियां कीं और दिल्ली के मातहत 45 उपदेशक काम करते रहे। क्या दिल्ली का कोई आदमी बता सकता है कि 45 उपदेशक होते हुए दिल्ली में शुद्धि पर उनके कितने लैक्चर हुए और क्या एक हज़ार शुद्धियां सूबा दिल्ली में कहीं होती हैं? क्या श्रद्धानन्द इस 9 हज़ार रुपये के ख़र्च की जानकारी और 45 उपदेशकों के नाम पता सहित दे सकते हैं?

(3) श्रद्धानन्द नाम व पता विस्तार के साथ बतलाए कि शहर दिल्ली से उसने शुद्धि सभा के लिए किस किस से कितना रुपया चन्दा में लिया है और वह कहां ख़र्च हुआ?

(4) अख़्बार तेज के लिए भी शुद्धि सभा से कितना रुपया लिया है और क्यों लिया है? क्या तेज के प्रथम पृष्ठ पर अपना नाम उसकी

सरपरस्ती पर लिखवाना पब्लिक को खुला धोखा देना नहीं है?

(5) हिन्दू संगठन के लिए श्रद्धानन्द ने दौरा किया था। उस दौरे में कितना रुपया जमा किया है और वह रुपया कहां है? और हिन्दू संगठन का शोर मचाने पर उसने उसका कितना काम किया है?

(6) श्रद्धानन्द की दलित उद्धार सभा में विगत साल एक अख़्बार की ख़बर के मुताबिक़ सात आठ हज़ार रुपये आए थे जो पिछले साल ही न मालूम कौन से अछूतों के कामों में ख़र्च किए गए। नवम्बर 1923 ई० में एक ख़बर प्रकाशित हुई थी कि उस रुपये के ख़र्च के काग़ज़ात श्रद्धानन्द के दामाद, डाक्टर सुखदेव के दवाई ख़ाना में जहां उस सभा का दफ़्तर भी था, मौजूद थे। कोई चोर रात को आकर काग़ज़ात को जला गया। श्रद्धानन्द ने हमारे पूछने पर तेज में उसका ज़िक्र किया है। मगर दलित उद्धार सभा के फ़ण्ड का पूरा हिसाब देने का नाम तक नहीं लिया।

(7) श्रद्धानन्द ने शुद्धि का काम भी अपना मतलब पूरा करके छोड़ दिया और अछूतों का काम उल्लिखित दलित उद्धार सभा के नाम से शुरू कर दिया और उस ख़ाना साज़ सभा के लिए 25 लाख की अपील करके श्रद्धानन्द ने पिछले दिनों ही काठियावाड़ और मुम्बई आदि कई जगह का दौरा किया था। लेकिन अब तक उसने ज़ाहिर नहीं किया कि उन दौरों से उसको कितना रुपया मिला। क्या उस सभा का पहला और अब तक का सब रुपया हज़म? उस सभा का प्रधान स्वयं श्रद्धानन्द है और सेक्रेट्री उसका दामाद सुखदेव है। अर्थात घर ही की सभा है। श्रद्धानन्द घर में बैठकर जब चाहता है रुपया कमाने के लिए कोई न कोई सभा बना लेता है। कभी सभा के नाम से उसको कोई आदमी रुपया आदि न दे।

(8) श्रद्धानन्द ने हाल ही में ऐलान किया है कि एक आदमी ने अछूतों के लिए ढाई हज़ार रुपया माहाना दिया है। श्रद्धानन्द यह बताइए

कि यह रुपया किससे और किस माह से उसको मिलता है और कहां ख़र्च होता है?

(9) गौ रक्षा सब कमेटी के रुपये का भी विस्तृत हिसाब नहीं बतलाया और न बाक़ी मान्दा रुपया हिन्दू महा सभा बनारस को भेजा गया वह गौ माता की रक्षा का रुपया भी हज़म?

(10) दिल्ली के एक जलसे में 24 अक्टूबर 1923 ई० को श्रद्धानन्द ने कहा था कि एक सभा का साढ़े छः हज़ार रुपया था। कुछ भिन्न भिन्न कामों में ख़र्च हो गया और एक हज़ार बाक़ी है वह मैं हिन्दू सभा दिल्ली को दे दूंगा। इसके बाद 22 जनवरी 1924 ई० को श्रद्धानन्द ने अपने मकान ही पर फ़ैसला किया था। जो अख़्बारों में निकल चुका है कि "हिन्दू सभा का काम दिल्ली से बाहर करने के लिए इंदर ऐडीटर अर्जुन और देशबन्धू ऐडीटर तेज को दो सौ रुपया मासिक दे दिया जाए।" क्या इस तरह श्रद्धानन्द घर ही में वह रुपया भी हज़म करना चाहता है और वह साढ़े छः हज़ार रुपये किस सभा का था और श्रद्धानन्द ने कहां पर ख़र्च किया है?

(11) पंडित लक्ष्मी नारायण जी शास्त्री दिल्ली स्वर्गवासी के कई हज़ार रुपये श्रद्धानन्द ने वायदा करके शुद्धि के काम में ख़र्च करा दिए थे कि यह रुपया बाद में शुद्धि सभा से दे दिए जाएंगे। लेकिन बाद में पंडित जी को कोरा जवाब दे दिया। पंडित जी ने शुद्धि के लगन में विश्वासघाती श्रद्धानन्द के कहने में आकर अपनी धर्म पत्नी के ज़ेवरात तक बेच कर लगा दिए थे। क्या पैसे के भूखे श्रद्धानन्द ने पंडित जी के कई कई हज़ार रुपये अपने हिसाब में दिखाकर शुद्धि सभा के हिसाब से स्वयं हज़म तो नहीं कर लिए? पंडित जी से यह विश्वासघात करके श्रद्धानन्द ने महापाप और नैतिक अपराध किया है। श्रद्धानन्द उनको अपना यही पाप छुपाने के लिए हमेशा बदनाम करता रहा है।

(12)श्रद्धानन्द जब संन्यासी हुआ था तो उसके पास कुछ न था और इंदर पढ़ता था। वह भी ग़रीब था, तो अर्जुन और तेज अख़्बारों के ख़र्च और मशीन प्रेस लगाने में हज़ारों रुपये वह कहां से लाया है? और इतने बड़े बड़े मकानों का किराया वह कहां से देता है? क्या उस पर प्रत्यक्ष प्रमाण (सुबूत) का कोई जवाब है और क्या अपने वतन जालंधर में उसने मकानात तो नहीं बनवाए? अगर बनवाए हैं तो वह रुपया कहां से आया?

(13)आर्य समाज का इतिहास लिखने के लिए श्रद्धानन्द ने कई साल हुए दौरा किया था। क्या उस दौरे से भी कुछ रुपया जमा किया था? अगर किया था तो वह कहां है?

(14)श्रद्धानन्द ने रुपये कमाने के लिए एक और अत्याचार और शैतानियत का मठ बना रखा है जहां औरतों के ज़रिए से रुपया पैदा किया जाता है उसको लिखते हुए हमारा क़लम रुकता है, क्योंकि इन हालात के साथ श्रद्धानन्द के लड़के इंदर की बीवी विद्यार्थी का भी ज़िक्र आता है।

(15)श्रद्धानन्द ने रुपये के लालच में संन्यासी होकर पॉलिटिकल काम शुरू किया तो सन्यासवाद व्यक्त करने पर क़ैद हो गया और मशहूर है कि कोई ख़ास सन्धि करके क़ैद से रिहा हुआ है। यही वजह मालूम होती है कि रिहाई के बाद उसने पॉलिटिकल काम को हाथ तक नहीं लगाया और हिन्दू मुसलमानों और हिन्दुओं में भी नाचाती पैदा कर रहा है। बल्कि कांग्रेस और पॉलिटिकल लीडरों का भी विरोध कर रहा है। हाल में उसने महात्मा गांधी के ख़िलाफ़ भी सख़्त हमला किया है। जिनकी जूतियां उठाने के भी यह क़ाबिल नहीं है। यह दूसरा जयचन्द्र राठौर हिन्दू क़ौम और तमाम हिन्द वालों के लिए आस्तीन का सांप और बग़ली घूंसा है। इससे और इसके अख़्बारों से लोगों को बचा रहना चाहिए। अख़्बार वन्दे मातरम दफ़्तर ने भी

इसको बहुत फटकारा है। इस व्यक्ति ने क़ौमी फ़ण्डों का न मालूम कितना रुपया खाया है। यही वजह मालूम होती है कि श्रद्धानन्द का कोई काम भी पूरा नहीं हुआ, क्योंकि रुपया तो ज़्यादा तर यह खा गया। बाक़ी सिर्फ़ दिखावा रहा। हम पब्लिक को होशियार करते हैं कि कोई आदमी गेरुए कपड़ों के धोखे में आकर उसको किसी काम के लिए भी रुपया न दे वरना ऐसे लोगों को दान देने वाला आदमी भी शास्त्रों के मुताबिक़ पापी होता है। उसने अर्जुन और तेज दोनों अख़्बार इसी लिए जारी कर रखे हैं कि उनके द्वारा शोर व शराबा फैलाकर रुपया पैदा किया जाए और अगर कोई आदमी श्रद्धानन्द से क़ौमी फ़ण्डों का हिसाब पूछे तो ये दोनों उसको गालियां देकर बदनाम करना शुरू कर दें। पब्लिक को इन अख़्बारों से भी होशियार रहना चाहिए।

नोट :- हम अख़्बार ऐशिया में लिख चुके हैं कि अगर श्रद्धानन्द कुछ विशिष्ठ लीडरों को प्रस्तावित करे तो उसके सामने हम ये तमाम मामलात सामने पेश करने को तैयार हैं। मतलब यह कि हमने एक ज़रूरी क़ौमी सेवा अदा करते हुए इस क़ौमी ग़द्दार को क़ौम के सामने उसके असली रूप में खड़ा कर दिया है। अब हम देखते हैं कि क़ौम उसको और उसके अख़्बारों को किस प्रकार की क़ौमी सज़ा देती है। श्रद्धानन्द कहीं आर्य समाजी बनता है और कहीं सनातन धर्मी कहकर अपना मतलब निकाल लेता है। असल में यह क़ौम का खत्री और आर्य समाजी है, लेकिन अधिकता से आर्य समाजी भी इससे उन हरकतों के कारण नाराज़ हैं। संन्यासी होकर भी अपने लड़के, बहू और पोतों के साथ रहता है। बाहर जाकर न मालूम क्या कहता है। श्रद्धानन्द ने अपना उल्लू सीधा करने के लिए अपने अख़्बारों तेज और अर्जुन के ज़रिए देश में सख़्त कशमकश पैदा कर रखी है। कुछ दिन हुए इन हरकतों से तंग आकर महात्मा

गांधी को ऐलान करना पड़ा था। तब ही से श्रद्धानन्द और उसके अख़्बारों ने महात्मा जी पर हमला शुरू कर दिया है। इसी तरह यह हर दो तेज और अर्जुन अख़्बार इस उत्पात के अलावा हिन्दू क़ौम में भी आपसी मतभेद को बढ़ा रहे हैं और क़ौमी फ़ण्डों में गड़बड़ी करने और श्रद्धानन्द की अन्य हरकतों पर क़ौम को कमीनी धोखा बाज़ी में लाकर पर्दा डाल रहे हैं। हर तरफ़ श्रद्धानन्द और उनके अख़्बारों पर सख़्त नफ़रत ज़ाहिर हो रही है। श्रद्धानन्द अगर सच्चा आदमी है तो हमारे इस विज्ञापन का जवाब देने से क्यों घबराता है। हर आदमी का क़ौमी कर्तव्य है कि वह ठण्डे दिमाग़ से उस ज्ञापन को पढ़कर सोच विचार करे।" मैं पंडित राज नारायण अरमान दिल्ली (ऐडीटर दैनिक अख़्बार ऐशिया दिल्ली)

यद्यपि आइशा के आरोप का जवाब तो उसी ज़माने में दिया गया। मगर इस ज्ञापन का जवाब आज तक हमने नहीं देखा। तो आइशा पर आरोप का जवाब वही है जो क़ुरआन मजीद में दर्ज है।

इस संबंध में विरोधी महाशय ने मसला बहु पत्नि विवाह का भी उपहास उड़ाया है। उसका जवाब हम रिसाला के अन्त में देंगे। इंशाअल्लाह

महाशय लेखक को इस बात पर भी जलन है कि हज़रत सिद्दीक़ा पर जो यह झूठा आरोप लगाया गया था। क़ुरआन में इसका खंडन क्यों हुआ? अतएव आपने इस दुख को इन शब्दों में व्यक्त किया है :

"सूरह नूर में रसूल और रसूल के खुदा का ग़म व ग़ुस्सा अब तक लिखा चला आता है बदज़बान लोगों की ज़बानें उनके मुंह में घुसेड़ दी गईं, अब ज़रूरत हुई कि हरम की फ़हमाइश की जाए क्योंकि ताली दो हाथों से बजती है। यह सेवा भी अल्लाह तआला ने क़ुबूल की। सूरह अहज़ाब उतरी।

"ऐ पैग़म्बर की बीवियो! तुम और औरतों की तरह नहीं हो

अगर तुम परमात्मा से डरती हो तो अपने कथन से न फिरो, ताकि वह लालच न करे। जिसके दिल में बीमारी है और कहा गया है अपने घरों में रुकी रहो और न दिखाती फिरो सिंगार जैसे अज्ञानता के ज़माने की औरतें करती थीं।"

"आख़िर मुहम्मद का अपनी बीवियों को आप सचेत करना व डांट डपट करना बाकी पत्नियों के लवाज़मात के ख़िलाफ़ था, अल्लाह तआला, पति पत्नी दोनों का बुज़ुर्ग है। इसको बीच में डाला और जो चाहा कहलवा लिया।" (रंगीला, 25-26)

पैग़म्बर इस्लाम अलैहिस्सलाम का हर काम व बात और आपकी घरेलू ज़िंदगी उम्मत के लिए अच्छा नमूना (भला नमूना) है। इसलिए उस घरेलू घटना का ज़िक्र क़ुरआन मजीद में करके सफ़ाई देनी ज़रूरी थी। मगर आर्य समाज के कथनानुसार यह परमेश्वर ने क्या किया कि वह अपने ऋषियों के अलावा एक पति पत्नी के कामों में दख़ल देता हुआ सवाल करता है :

"ऐ बियाहे हुए मर्द औरतो! तुम दोनों रात को कहां ठहरे थे, और दिन कहां बसर किया था, तुमने खाना कहां खाया था। आदि" (ऋग्वेद, अष्टक अध्याय, वर्ग 18, मंत्र 2)

क्या ही बेकार और बेख़बरी के सवाल हैं, तुम दोनों रात को कहां रहे थे क्या ख़ूब? क्या कोई शर्मीला मर्द या औरत रात को रहने का जवाब दे सकते हैं। इसी लिए इस सवाल का जवाब वेद में मौजूद नहीं, शायद सुनने वालों ने शैख़ साअदी मरहूम के मशवरे पर अमल किया होगा।

जवाब जाहिलां बाशद ख़मूशी

इसी संबंध में महाशय ने हज़रत आइशा रज़ि० का एक क़िस्सा सर विलियम मयूर की तारीख़ से नक़ल किया है जो मामूली होने के बावजूद विरोधी इसमें गड़बड़ी करने से नहीं चूका अतएव उसके शब्द यह हैं :

"बीमारी के दौरान मैं मुहम्मद क़ब्रिस्तान को गया और अपने मरने का यक़ीन पुख़्ता करके घर लौटा। आइशा भी इत्तिफ़ाक़ से उस दिन दर्द सर का शिकार थी वह कराह कराह कर कह रही थी "मेरा सर! मेरा सर!" मुहम्मद अचानक बोल उठे "आइशा! यह शब्द मुझे कहने चाहिएं।" कमसिन औरत ने सुना और चुप हो गई। मुहम्मद को मज़ाक़ सूझा, कहा 'आइशा! क्या तुम पसन्द न करोगी कि तुम्हारी मौत मेरे जीते जी हो, ताकि मैं तुम्हें अपने हाथों से दफ़न करूं और तुम्हारी क़ब्र पर दुआ कहूं? आइशा ने नाक भौं चढ़ा ली और जवाब दिया, "यह किसी और को सुनाओ मैं समझ गई, मेरे घर को मुझसे ख़ाली करने और किसी और हुस्न व जमाल की पुतली को इसमें ला बसाने की आरज़ू है।" मुहम्मद को जवाब की फ़ुरसत न थी ताक़त न थी, मुस्कुराकर टाल दिया। (हयाते मुहम्मदी लेखक मयूर साहब) (रंगीला, पृ० 26)

रंगीले लेखक ने इसमें भी गड़बड़ी से काम लिया है। असल घटना बहुत संक्षिप्त है जो टीकाकार अबुल फ़िदा के शब्दों में हम पेश करते हैं :

आइशा सिद्दीक़ा कहती हैं एक दिन मेरे सर में दर्द था। मैं कह रही थी हाए मेरा सर (क्योंकि हुज़ूर स्वयं बीमार थे) फिर (बतौर तसल्ली देने के बीवी आइशा को) कहा, तेरा क्या नुक़सान है अगर तू मेरे सामने मर जाए और मैं तुझे कफ़नाऊं और जनाज़ा पढ़ूं और दुआ करूं। आइशा ने (जैसे कि बीमारी में आदमी सड़ी होकर बोलता है) बोली हां मैं जानती हूं अगर मेरे साथ मौत के

روی عن عائشة رضی اللہ عنہا انہا قالت جاء رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم وبی صداع وانا اقول وارأساہ ثم قال بل انا واللہ یا عائشة وارأساہ ثم قال ما ضرک لو مت قبلی فقمت علیک کفنتک وصلیت علیک و دفنتک قالت فقلت کانی بک واللہ لو فعلت ذلک رجعت الی

बाद ऐसा ही करेंगे तो उसी समय मेरे घर में आवेंगे और अपनी किसी बीवी से दिल बहला लेंगे। यह सुनकर हुज़ूर मुस्कुराए।'' (पहला भाग, पृ० 151)

بیتی و تعزیت ببعض نسائک فتبسم صلی اللہ علیہ وسلم (جلد اوّل صفحہ ۱۵۱)

सर विलियम साहब ने इस स्थान पर स्वयं ही तारीख़ तबरी का हवाला दिया है। तारीख़ तबरी में भी यह क़िस्सा यूं ही आया है। केवल एक शब्द का फ़र्क़ है। अर्थात उसमें यूं है :

لو فعلت ذلك رجعت إلى بيتي فاعرست ببعض نسائك (جلد ۲ صـ ۱۹۱)

तारीख़ अबुल फ़िदा में तअज़्ज़ै-त और तबरी में आरस-त है। दोनों के मायना हैं : ''मर्द का औरत से दिल बहलाना।''

कैसा साफ़ लेख और पत्नी पत्नी का रोज़ाना दिल बहलावा है। इसी लिए सर मयूर ने भी इसी शीर्षक के तहत इस घटना को लिखा है। इस प्रकार की घटनाओं का जवाब हम भूमिका में दे चुके हैं। मगर पत्नी पति के संबंध और मुहब्बत से भरपूर मनोरंजन को वही जानते हैं जो संबंध रखते हों। जिनकी अपनी या उनके गुरु की सारी ज़िंदगी इस क़ुदरती संबंध से बेताल्लुक़ रही हो, वह उस प्यार के मज़ाक़ को क्या जानें।

सिद्दीक़ा के निकाह पर सबसे बड़ी आपत्ति उनकी कम उम्र है। अतएव विरोधी के चुभते हुए शब्द इस बारे में यह हैं :

> ''मुहम्मद ने उस कम उम्र लड़की से जो उम्र में उसकी पोती थी अपनी निस्बत क्यों ठहराई।'' (पृ० 19)

अतः सारे विरोध की जान यही आपत्ति है इसी लिए हम इसी का जवाब विस्तार से देकर इस बहस को ख़त्म करते हैं।

चुटकुला

हज़रत ख़दीजा उम्रदार औरत से शादी पर भी विरोधी को आपत्ति है कि इतनी उम्रदार माई से क्यों शादी की, अतएव महाशय के चुभते हुए इस बारे में ये शब्द हैं :

"ख़दीजा विधवा थी वह भी क़ुरैशी अर्थात मुहम्मद की क़ौम की थी। दो पति मर चुके थे। सन्तान वाली थी। भला मुहम्मद और उसकी उम्र का क्या मुक़ाबला था।" (रंगीला, पृ० 9)

हज़रत ख़दीजा रज़ि० के बाद जब जवान आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० से शादी की तो उसकी कम उम्र पर शिकायत करते हैं।

तो इसी चुटकुले के बाद हम असल बात पर आते हैं।

पति पत्नी की उम्र में क्या हिसाब हो? इसकी बाबत उलमा धर्म शास्त्र के विभिन्न कथन हैं, हिन्दुओं और आर्यों के सर्वमान्य पेशवा मनु जी इस बारे में हिदायत फ़रमाते हैं :

"तीस साल की उम्र का लड़का और बारह साल की लड़की का विवाह करे या चौबीस साल का लड़का और आठ साल की लड़की विवाह करे।" (मनू स्मृति, अध्याय 9, श्लोक 94)

तो एक आदमी अपने चौबीस साला लड़के की शादी किसी आठ साला लड़की से (जो वेदिक धर्म की पाबन्द हो) कर दे तो धर्म शास्त्र के विरुद्ध न होगी। यद्यपि आजकल के अनुभव से यह बड़ा मुश्किल मालूम होता है कि आठ साला लड़की बालिग़ होकर चौबीस साला जवान को सहन कर सके। लाचार यह कहना पड़ेगा कि मनु जी के ज़माने में आठ साल की लड़की इस तरह व्यस्क हो जाती होगी। जिस तरह आजकल बारह साल की लड़की व्यस्क हो जाती है। आठ और बारह के बीच है, दस सम्भव है। बीच के ज़माना में जो कि इस्लाम का ज़माना है। दस साला लड़की व्यस्क हो जाती हो। अतएव हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि०

से स्वयं यह फ़ैसला आता है कि लड़की जब नौ साल की हो जाए तो व्यस्क है। क्योंकि वह स्वयं ऐसी हो गई थीं। दस साला उम्र में सिद्दीक़ा का ज़फ़ाफ़ हुआ। अतएव विरोधी ने पृ० 20 पर स्वयं लिखा है। धर्म शास्त्र आदेश से आठ साला लड़की को चौबीस साला पति मिलना जाइज़ बल्कि श्रेष्ठ है, तो दस साला व्यस्क को तरेपन साला पति मिलने पर क्या आपत्ति? हां आपत्ति हो सकती है तो लड़की की चढ़ती ताक़त और पति की बढ़ती कमज़ोरी की हो सकती है। जिससे लड़की की इच्छा को हानि पहुंचने का अंदेशा है। हम इस आपत्ति की क़दर करते हैं। मगर हम देखते हैं कि ताक़त और कमज़ोरी के लिए उम्र का कोई क़ानून नहीं। बहुत से मर्द छोटी उम्र में कमज़ोर होते हैं और बहुत से आख़िरी उम्र तक भी ताक़तवर रहते हैं। इसकी पहचान कि उस मर्द में ताक़त है या नहीं। बहुत आसान और रौशन दलील से यूं स्पष्ट हो सकती है कि छोटी उम्र की पत्नी और बड़ी उम्र के पति में निकाह के बाद अज्ञात कारण से अगर बिगाड़ रहता है तो समझो कि बुड्ढ़ा मियां कमज़ोर है। और अगर दोनों में मुहब्बत और सुलूक अच्छा बल्कि बहुत अच्छा है तो समझो कि बड़े मियां क़ाबिल हैं। यह एक ऐसी पहचान है कि हर एक अनुभवी ख़ानादार इसको सही जानेगा।

अब सच्ची बात यह है कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम और सिद्दीक़ा के बीच कामिल मुहब्बत थी या नहीं। इससे महाशय विरोधी को भी इंकार नहीं। अतएव इसके संक्षिप्त शब्द ये हैं :

> "मुहम्मद के मरते दम तक मुहम्मद की घर वाली दिल व जान की मालिक हमराज़ आइशा थी।" (पृ० 21)

दूसरी गवाही तुम्हारे बड़े भाई पंडित काली चरण की है। जो हिन्दी रिसाला "विचित्र जीवन" लिखता है :

> "आइशा भी मुहम्मद साहब पर आशिक़ थी।" (पृ० 165)

इसी बड़े भाई ने मदारिजुन्नुबुव्वह के हवाले से लिखा है कि :

"हुज़ूर अलैहिस्सलाम को तीस आदमियों के बराबर ताक़त थी।" (पृ० 147)

तो जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मर्दाना ताक़त का एतिराफ़ स्वयं मुख़ालिफ़ों को भी है तो फिर एक नोउम्र लड़की से शादी करना कौन सी अक़्ली या नक़्ली दलील के ख़िलाफ़ है।

चैलेंज का जवाब

पंडित काली चरण ने अपने रिसाला "विचित्र जीवन" के पृ० 148 पर मुसलमानों को चैलेंज दिया है कि 9 साला लड़की से तरेपन साला मर्द के संभोग को प्राकृतिक उसूल पर सही दिखाएं। शायद उनका ख़्याल है कि इतनी उम्र की लड़की अव्यस्क होती है। इसलिए आइशा सिद्दीक़ा भी अव्यस्क होगी। हम उसूलन उनसे सहमत हैं, कि अव्यस्क लड़की से मिलाप सही नहीं, मगर (9-10) साला लड़की यदि अव्यस्क हो तो आठ साला कैसे व्यस्क होगी। जिसको चौबीस साला ताक़तवर जवान के हवाले किया जाता है। (देखो मनु जी का हवाला) तो अगर आठ साला लड़की का चौबीस साला जवान से मिलाप सही है तो दस साला लड़की का तरेपन साला बूढ़े से मिलना क्यों ग़लत है? ख़ास कर इस हाल में कि दस साला लड़की व्यस्क हो तो तरेपन साला ताक़तवर पीर नव जवान।

समाजियो! शीशे का घर बनाकर दूसरों पर पत्थर बरसाना।

कहो जी कौन सा धर्म है?

नोट :- हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० के ज़फ़ाफ़ के बारे में कुछ उलमा (मौलाना इबराहीम साहब सियालकोटी आदि) की तहक़ीक़ यह है कि उनकी बाबत जो 9-10 साल में हुज़ूर के घर में आने का ज़िक्र आया है। उससे तात्पर्य पति से मिलाप नहीं बल्कि मात्र रुख़्सती है। इस दावे पर उन्होंने बहुत से हवाले शाब्दिक और किताबी पेश किए हैं। मतलब

उनका यह है कि हुज़ूर की बीवी हज़रत ख़दीजा रज़ि० के इंतिक़ाल के बाद हज़रत सौदा ख़ानादारी की ज़िम्मेदार थीं जो बहुत बड़ी बूढ़ी और लम्बी चौड़ी होने की वजह से इंतिज़ाम नहीं कर सकती थीं इसलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बहुत सी ज़रूरतें अधूरी रह जातीं इसलिए हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने आइशा को रुख़्सत किया ताकि हुज़ूर को घरेलू कामों में तकलीफ़ न हो। मिलाप की उम्र वही है जो सामान्यता व्यस्क लड़कियों की होती है। यह लेख उनका कुछ उलमा की पुष्टि के साथ अख़्बार अहले हदीस नवम्बर-दिसम्बर 1924 ई० के अंकों में छपता रहा। तो इस तहक़ीक़ के मुक़ाबले में कोई आपत्ति पैदा ही नहीं हो सकती।

हज़रत उम्मुल मोमिनीन ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा

ज़बां पे बारे खुदाया यह किसका नाम आया
कि मेरे नतक़ ने बोसे मेरी ज़बां के लिए

विरोधी ने पृ० 27 से पृ० 30 तक कोई बात क़ाबिले जवाब नहीं लिखी। पृ० 31 पर हज़रत ज़ैनब के निकाह का ज़िक्र किया है। मगर वही बाज़ारी ठट्ठा मख़ोल जिसका कोई सुबूत विश्वसनीय इस्लामी किताबों से नहीं दिया।

इसमें संदेह नहीं कि इस क़िस्से के बारे में समर्थकों और विरोधियों ने बहुत सी ग़लतियां की हैं। हम चाहते हैं कि इस क़िस्से को इन ग़लतियों से अलग करके उसका असल चेहरा पब्लिक के सामने लाएं यद्यपि उससे पहले भी हम अपनी अनेक किताबों में ज़िक्र कर चुके हैं। लेकिन आज इसको ख़ास सूरत में पेश करते हैं।

अरब देश में हिन्दुस्तान की तरह दस्तूर था कि औलाद न होने की सूरत में दूसरे के लड़के को मुतबन्ना (ले पालक) बना लेते, इसको अपने सगे बेटे की तरह ही जानते। इसी का नतीजा यह था कि इस मुतबन्ना की बीवी को सगी बहू के जैसा समझते, चूंकि यह रस्म क़ानूने क़ुदरत के ख़िलाफ़ थी। क्योंकि बाप बेटे का संबंध बीज और पेड़ की तरह क़ुदरती है जो मुतबन्ना में नहीं पाया जाता। मुतबन्ना को सगे बेटे की तरह जानना क़ानूने क़ुदरत के विपरीत खुली और बुरी रस्म है। पैग़म्बरे इस्लाम जिन बुरी रस्मों का सुधार करने को आए थे। उनमें एक रस्म यह भी थी, जिसको रस्म मुतबन्ना कहते हैं। चूंकि यह एक आम और मक़बूल रस्म थी। इसलिए इसका सुधार भी सिर्फ़ ज़बानी वाअज़ व नसीहत से नहीं हो

सकता था बल्कि वाअज़ व नसीहत के अलावा मिसाल की भी मोहताज थी। अतएव इसके सुधार के लिए दोनों तरीक़े अपनाए गए वाअज़ व नसीहत तो इन शब्दों में बयान किए :

مَا جَعَلَ اَدْعِيَاءَكُمْ اَبْنَاءَكُمْ ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِاَفْوَاهِكُمْ وَاللّٰهُ يَقُوْلُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِى السَّبِيْلَ. اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَائِهِمْ هُوَ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ فَاِنْ لَّمْ تَعْلَمُوْا اٰبَاءَهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ فِى الدِّيْنِ - (پ ۲۱ ع ۱۷)

खुदा ने तुम्हारे ले पालकों को तुम्हारे बेटे नहीं बनाया यह तुम्हारे मुंहों की बातें हैं। अल्लाह सच कहता है और सीधी राह की हिदायत करता है। उनको उनके बापों के नाम से बुलाया करो। अल्लाह के निकट यह बहुत इंसाफ़ है। हां अगर तुम उनके बापों को न जानते हो तो समझो कि वे दीन में तुम्हारे भाई हैं (तो उनको भाई कहा करो, बहरहाल बेटा मत कहा करो)

(पारा 21, रुकूअ 17)

कैसी नेचुरल शिक्षा है कि जिसको क़ुदरत ने नहीं जोड़ा, तुम उसको क़ुदरत की तरह मत समझो बल्कि उसके असल से उसका मिलाप ज़ाहिर करने को उनकी असल वलदियत से बुलाया करो।

यह शाब्दिक शिक्षा इतनी बड़ी बुरी रस्म के सुधार के लिए काफ़ी नहीं हो सकती थी। इसलिए ख़ुदा ने मिसाल क़ायम करने के लिए इसी महान सुधारक (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को चुना। जिसका नाम क़ुरआनी परिभाषा में अच्छा तरीक़ा रखा गया है। नबी को ज़ैद बिन हारिसा से बहुत मुहब्बत थी। यहां तक कि देश की रस्म के मुताबिक़ (मनाही से पहले) लोग उसको ज़ैद पुत्र मुहम्मद कहते थे।

इस ज़ैद (आज़ाद ग़ुलाम) का निकाह भी हुज़ूर ने अपने क़रीबी रिश्तेदारी में एक बड़ी शरीफ़ लड़की ज़ैनब से करा दिया था जो हुज़ूर के हाथों में पली थी। मगर सौभाग्य से पति पत्नी में स्वभाव का फर्क पैदा

हुआ जिसकी इंतिहा यहां तक पहुंची कि पति ने इरादा कर लिया कि मैं उसे छोड़ दूं। चूंकि यह निकाह हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने बड़ी कोशिश से स्वयं कराया था, इसलिए आपने ज़ैद को बहुत समझाया। मगर वह न माना। यहां तक कि उसने ज़ैनब को तलाक़ दे दी। इस सारे क़िस्से का सुबूत क़ुरआन मजीद की आयात बय्यिनात में मिलता है जो ये हैं।

(ऐ पैग़म्बर इस बात को याद करो कि) जब तुम उस आदमी को समझाते थे (ज़ैद बिन हारिसा को) जिस पर अल्लाह ने अपना एहसान किया (कि इस्लाम का सौभाग्य प्रदान किया) और तुम भी उस पर एहसान करते रहे कि अपनी बीबी (ज़ैनब) को अपने निकाह में रहने दे और अल्लाह से डर (उसको छोड़ नहीं) और तुम इस (बात) को अपने दिल में छुपाते थे। जिसको (आख़िरकार) अल्लाह व्यक्त करने वाला था और तुम इस (मामले में) लोगों से डरते थे और ख़ुदा इसका ज़्यादा हक़दार है कि तुम उससे डरो। फिर जब ज़ैद उस (औरत) से अलेहदगी कर चुका (अर्थात तलाक़ दे दी और इद्दत की मुद्दत पूरी हो गई) तो हमने तुम्हारे साथ उस औरत का निकाह कर दिया, ताकि (आम) मुसलमानों के ले पालक जब अपनी पत्नियों से बेताल्लुक़ हो जाएं तो मुसलमानों के लिए उन औरतों के

إِذْ تَقُولُ لِلَّذِيٓ أَنْعَمَ
اللّٰهُ عَلَيْهِ وَأَنْعَمْتَ عَلَيْهِ
أَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ
وَاتَّقِ اللّٰهَ وَتُخْفِي فِي نَفْسِكَ
مَا اللّٰهُ مُبْدِيهِ وَتَخْشَى
النَّاسَ ج وَاللّٰهُ أَحَقُّ
أَنْ تَخْشٰهُ فَلَمَّا قَضٰى
زَيْدٌ مِنْهَا وَطَرًا
زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا
يَكُونَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ
حَرَجٌ فِي أَزْوَاجِ
أَدْعِيَائِهِمْ إِذَا قَضَوْا
مِنْهُنَّ وَطَرًا ط وَكَانَ
أَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُولًا ۔

پ ۲۲ ع ۲

निकाह कर लेने में किसी तरह की तंगी
न रहे। और ख़ुदा का हुक्म तो होकर
ही रहेगा।" (पारा 22, रुकूअ 2)

इन आयात में एक शब्द 'ज़व्वजना-क-हा' आया है। जो विचारणीय है। इसमें सन्देह नहीं कि बहुत से मुसलमान लेखकों से भी इसमें कोताही हुई है कि उन्होंने इस शब्द से यह समझा है कि हुज़ूर सल्ल० का यह निकाह ज़मीन पर नहीं हुआ था, बल्कि आसमान पर हुआ था और बस। यद्यपि असल घटना यह है कि बाक़ायदा निकाह हुआ। ज़ैनब का भाई अबू अहमद उसकी तरफ़ से संरक्षक बनकर शरीक मज्लिस हुआ। अतएव तारीख़ इब्ने हिशाम के शब्द इस घटना के बारे में यह हैं :

नबी सल्ल० ने ज़ैनब बिन्ते जहश के साथ निकाह किया और उसके भाई अबू अहमद ने उसकी वकालत की। नबी सल्ल० ने ज़ैनब को चार सौ दिरहम मेहर दिया। (पृ० 424 बरहाशिया ज़ादुल मआद मिस्री)

تزوج رسول اللہ صلی اللہ علیہ
وسلم زینب بنت جحش وزوجہ ایاھا
اخوھا ابواحمد بن جحش واصدقھا
رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اربع
مائۃ درھم۔ (ص ۴۲۴ برحاشیہ زادالمعاد مصری)

तो घटना की इस गवाही को ध्यान में रखकर आयत (ज़व्वजना-क-हा) के यह मायना हुए कि "हम (ख़ुदा) ने तुझे (ऐ नबी) उस (ज़ैनब) के निकाह की इजाज़त दी।" ताकि बुरी रस्म मुतबन्ना का सुधार हो सके।

कुछ रिवायतों में आता है कि हज़रत ज़ैनब गर्व करती थीं कि मेरा निकाह आसमान पर हुआ है। इसके मायना भी यही हैं। गर्व यह था कि ख़ास ज़िक्र करके निकाह की इजाज़त क़ुरआन के शब्दों में किसी दूसरी पत्नी को नहीं हुई। अतएव हुज़ूर सल्ल० ने ज़ैनब के निकाह का वलीमा आदि निकाह की रस्म जो अदा कीं उनका सुबूत अधिकता से रिवायतों में मिलता है। तो हक़ीक़त इतनी है कि इस बुरी रस्म (मुतबन्ना औलाद होने के जैसे) को मिटाने की मन्शा से यह मिसाल क़ायम की गई। अतएव

स्वयं क़ुरआन मजीद में इसकी हिक्मत इन शब्दों में बयान की गई है।

لِكَيْلَا يَكُونَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ حَرَجٌ فِي أَزْوَاجِ أَدْعِيَائِهِمْ إِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا

(निकाह की इजाज़त आपको) इसलिए दी गई है कि मुसलमानों पर उनके ले पालकों की पत्नियों से निकाह में कोई रुकावट न हो। जब वे ले पालक उन पत्नियों से अपना संबंध विच्छेद कर लें।

अर्थात अगर ऐसा इत्तिफ़ाक़ पैदा हो जाए तो निकाह हराम न जानें। इस हिक्मत और मस्लेहत से साफ़ मालूम होता है कि हर मुसलमान अपने मुतबन्ना की पत्नी से (जब वह तलाक़ दे दे) निकाह कर सकता है तो क्या वह मुसलमान यह कहने का पात्र है कि उस औरत (ले पालक) की पत्नी से मेरा निकाह आसमान पर हो चुका है (नहीं) कदापि कोई मुसलमान इसका हौसला नहीं कर सकता न कोई मुफ़्ती इसका फ़तवा दे सकता है, बल्कि यही फ़तवा है कि इद्दत के बाद बाक़ायदा निकाह करे।

हां हम मानते हैं कि कुछ टीकाओं में यह क़िस्सा यूं आया है कि :

"हुज़ूर सल्ल० ने ज़ैनब को देखा तो उसकी सुन्दरता की वजह से प्यारी मालूम हुई बल्कि आपके दिल में घर कर गई। ज़ैनब ने यह ज़िक्र अपने पति ज़ैद से किया। तो उसने नापसन्द किया कि ऐसी औरत को मैं अपनी पत्नी बनाऊं। जिससे नबी सल्ल० को मुहब्बत हो।"

हमें तस्लीम है कि यह रिवायत कुछ टीकाओं में है। मगर इसी के साथ उसका खंडन भी है। अतएव टीका ख़ाज़िन आदि में इस रिवायत के बारे में ये शब्द हैं :

هذا اقدام عظيم من قائله وقلة معرفته بحق النبي صلى الله عليه وسلم

ऐसा कहना (किं नबी ज़ैनब को देखकर मुहब्बत में डूब गए) इस क़ायल की तरफ़ से उसके अपरिचित होने की

وبفضله وكيف يقال، راها فاعجبته وهى بنت عمته ولم يزل يراها منذ ولدت ولا كان النساء يحتجبن منه صلى الله عليه وسلم وهو زوجها لزيد فلا يشك فى تنزيه النبى صلى الله عليه وسلم ان يأمر زيدا بمساكها وهو يحب تطليقه اياها كما ذكر عن جماعة من المفسرين۔

(تفسير خازن مطبوعه مصر جلد دوم ص ٤٦٨)

वजह से नुबुवत पर सख़्त हमला किया है। किस तरह यह कहा जा सकता है कि ज़ैनब को देखा और आपको पसन्द आई। यद्यपि वह हुज़ूर सल्ल० की फुफेरी बहन थी हमेशा हुज़ूर उसको देखा करते थे और औरतें नबी सल्ल० से पर्दा नहीं करती थीं (पर्दे का हुक्म ज़ैनब के वलीमे के बाद अवतरित हुआ था) हुज़ूर सल्ल० ने स्वयं उसका निकाह ज़ैद से किया था। तो ऐसे बेहूदा आरोप से इससे कि हुज़ूर ज़ैद को ज़ैनब के रखने का हुक्म करते थे और दिल में उसकी तलाक़ चाहते थे हुज़ूर सल्ल० के बरी होने में सन्देह नहीं हो सकता। यह कथन कुछ टीकाकारों से मन्क़ूल है। (तफ़्सीर ख़ाज़िन प्रकाशन दूसरा भाग, पृ० 468)

पंडित काली चरण की ईमानदारी और अमानत

यह वही पंडित जी हैं जिनका ज़िक्र शुरू से आ रहा है कि उन्होंने भी हुज़ूर अलैहिस्सलाम की ज़िंदगी के हालात में एक किताब हिन्दी भाषा (नागरी) में लिखी है जिसका नाम है ''विचित्र जीवन'' आपने वही तरीक़ा अपनाया है जो आम तौर पर आर्य समाजी लेखक ख़ासकर इस्लाम के खंडन में ईसाइयों के अनुयायियों का है कि बिना देखे असल किताब के और बिना समझे असल लेख के अपने शब्दों में घटना बनाकर लोगों को धोखा देकर सच्चे दीन इस्लाम और पैग़म्बरे इस्लाम अलैहिस्सलाम से नफ़रत पैदा करते हैं।

आर्य समाज की शिकायत

और किसी को और तरह की होगी। हो सकता है किसी को शुद्धि में नाजाइज़ कार्रवाई की हो। या किसी को आपत्ति में कड़वी बातों की हो। लेकिन हमें जो बड़ी शिकायत है वह उनके अन्याय की है। जो पक्षपात पर आधारित है।

ख़ुदा गवाह है

मैं अपनी ज़ात से कहता हूं। इस्लाम पर आपत्ति सुनने से मैं कभी नहीं घबराता न नाराज़ होता हूं। न शिकायत करता हूं, क्योंकि क़ुरआन मजीद को मैं एक बड़ी आला दर्जे की मुनाज़रा की किताब पाता हूं जबकि वह बड़े खुले दिल से विरोधियों की आपत्तियां सुनता और जवाब देता है तो फिर मुझे उनकी आपत्तियों से क्यों दुख या मलाल हो मुझे शिकायत है तो यह है कि इस्लाम विरोधी ख़ास कर आर्य समाजी स्वामी दयानन्द का अनुसरण करते हुए असली मफ़्हूम समझने से पहले क़ुरआनी और हदीसी शब्दों में अपना मफ़्हूम दाख़िल करके आपत्ति करने लग जाते हैं। विगत घटनाओं के अलावा पाठक निम्न घटनाएं सुनें। पंडित काली चरण अपने रिसाला "विचित्र जीवन" में हज़रत उम्मुल मोमिनीन ज़ैनब रज़ि० के निकाह की बाबत "मदारिजुन्नुबुव्वह" और "रोज़तुल अहबाब" के हवाले से लिखते हैं :

"मुहम्मद साहब एक दिन ज़ैद के घर गए[1] और बेटे (ज़ैद) की बहू को ऐसे कपड़ों में देखा कि उसका हुस्न न छुप सका,

1. क्या ही अच्छा होता कि बजाए बेटे के मुतबन्ना या ले पालक लिखते। मगर ऐसा कहने से उनका उद्देश्य हासिल न होता और न जानने वालों को धोखा कैसे देते। अतएव आर्य समाजियों ने हिन्दी में एक ट्रेक्ट प्रकाशित किया। जिसका नाम ही उन्हीं शब्दों में है अर्थात "बेटे की बहू से विवाह" कितना ग़लत तरीक़ा और झूठा बयान है कि ले पालकों को बेटा कहा जाए ख़ास कर उस क़ौम के सामने जो क़ानून क़ुदरत की पाबन्दी और धार्मिक शिक्षा के तहत ऐसा कहना जाइज़ जानती हों। (उफ़ रे ज़ुल्म)

पैग़म्बर साहब की तबीयत ने जोश खाया और मज़े में चिल्ला उठे, सुब्हानल्लाह मुक़ल्लिबुल क़ुलूब ज़ैनब ने यह बात सुनी अनसुनी कर दी और अपने पति को यह बात बताई (उसके पति) ज़ैद ने ज़ैनब को तलाक़ दे दी और फिर हज़रत ने उससे शादी कर ली।" (पृ० 176)

हमने इन दोनों हवालों की तलाश पंडित जी की बताई हुई किताबों में की तो उनमें इस क़िस्से का ज़िक्र इस तरह नहीं पाया, बल्कि पंडित जी का पूरा खंडन पाया। अतएव उन किताबों की असल इबारत अनुवाद सहित पाठकों की सेवा में है :-

पंडित जी ने दो किताबों (मदारिजुन्नुबुव्वह और रोज़तुल अहबाब) का हवाला दिया है उनमें से पहली किताब (मदारिज) में स्वयं रोज़तुल अहबाब का हवाला देकर उसकी इबारत नक़ल कर दी है। इसलिए हम भी रोज़तुल अहबाब ही से नक़ल करते हैं। लेखक रोज़ह लिखते हैं।

अनुवाद

रिवायत है कि नबी सल्ल० ने ज़ैनब को ज़ैद के लिए निकाह का पैग़ाम दिया है। ज़ैनब ने समझा कि हुज़ूर सल्ल० ने अपने लिए पैग़ाम दिया है इसलिए उसने पैग़ाम क़ुबूल कर लिया। मगर जब उसे मालूम हुआ कि ज़ैद के लिए पैग़ाम है तो उसने इंकार कर दिया, क्योंकि ज़ैनब बड़ी ख़ूबसूरत और नबी सल्ल० की फुफेरी बहन थी। उसकी तबीयत में ज़रा तेज़ी भी थी इसलिए उसने कहा कि हुज़ूर सल्ल० मैं आज़ाद

اصل عبارت

نقلست کہ آں سرور زینب را برائے
زید خواستگاری نمودہ، زینب پنداشت
کہ برائے خود می خواہد آں خطبہ را قبول نمود
وچوں دانست کہ خواستگاری برائے
زید بودہ اباکردہ وسرباز زد، چہ زینب
صاحب جمال ودختر عمہ آنحضرت
درودے حدت وتندی بود، گفت یا
رسول اللہ من زید را نمی خواہم چرا کہ
وے آزاد کردہ ایست و برادر زینب

किए गए ग़ुलाम के साथ निकाह करना पसन्द नहीं करती इस इंकार में ज़ैनब का भाई भी शरीक था।

एक रिवायत में है कि ज़ैनब ने कहा कि यह काम आप का मनपसन्द है कि ज़ैद मेरा पति हो? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया हां! ज़ैनब ने कहा, जब ऐसी बात है तो मैं भी अल्लाह के रसूल की अवज्ञा नहीं करती। अतः मुझे भी यह पैगाम स्वीकार है। तो हुज़ूर सल्ल० ने ज़ैनब को ज़ैद से बियाह दिया। निकाह के बाद अल्लाह तआला ने हुज़ूर सल्ल० को कश्फ़ द्वारा ख़बर दी कि हमारे ज्ञान में यह बात मुक़द्दर है कि ज़ैनब आपकी पत्नी होगी। इसके बाद निश्चित रूप से पति पत्नी (ज़ैद और ज़ैनब) में कुछ स्वभाव की कड़वाहट पैदा हुई। यहां तक कि ज़ैद तंग आ गया और हुज़ूर सल्ल० की सेवा में हाज़िर होकर बोला :

हुज़ूर मैं इरादा कर चुका हूं कि ज़ैनब को तलाक़ दे दूं, क्योंकि वह मेरे साथ बहुत दुर्व्यवहार और कड़वाहट का व्यवहार करती है। हुज़ूर ने फ़रमाया, अल्लाह से डर लेकिन चूंकि ख़ुदा के इल्म में था कि ज़ैनब हुज़ूर की पत्नियों में दाख़िल होगी। इसलिए हुज़ूर के दिल

عبداللہ بن حجش دریں ابا با خواہر متفق بود۔

درروایتے آنکہ زینب گفت:۔
یارسول اللہ بتحقیق کہ خاطرت میخواہد کہ زید شوہر من باشد فرمود آرے گفت چنیں ست من نافرمانی رسول خدا نمی خواہم ایں خطبہ را قبول کردم پس حضرت وے را بزنی بزید داد و باسم مہر دہ دینار در سرخ و شصت درہم و مقنعہ و چادرے و پیراہنے و پنجاہ مد گندم و ده صاع خرما برائے زینب فرستاد و مدت یکسال یا بیشتر زینب با زید بود۔ القصہ بعد از تزویج ایشاں حق تعالیٰ پیغمبر خویش را اعلام کرد کہ در علم قدیم ما چنیں مقرر شدہ کہ زینب داخل زنان تو گردد۔ پس میان زید و زینب ناسازگاری پیدا شد چنانچہ میاں بعض ازواج می باشد تا بغایتے کہ زید بہ تنگ آمد و بہ نزد آں سرور رفت و از زینب شکایت کرد و گفت یا رسول اللہ میخواہم کہ زینب را طلاق دہم کہ با من بسیار تند خوئی می کند و زبانش بر من دراز گشتہ حضرت فرمود زن خود را نگاہدار و از خدا بترس فاما چوں از حق تعالیٰ معلوم کردہ بود کہ زینب داخل زوجات وے

में आया कि ज़ैद इसको तलाक़ दे दे लेकिन उसको तलाक़ का हुक्म देने से शर्म आती थी कि लोग कहेंगे कि अपने ले पालक बेटे की पत्नी से शादी कर ली है। यद्यपि अरब में अज्ञानता काल में ले पालक की पत्नी को सगी बहू की तरह जानते थे,

خواہد بود خاطر مبارکش میخواست کہ زید وے را طلاق دہد لاکن شرم داشت کہ اورا امر کند بطلاق زینب و نیز ازاں می اندیشید کہ مردم گو یند زن پسر خواندہ خود را ی خواہد و حال آنکہ در جاہلیت زن کسے را کہ بہ پسرے قبول کردہ بودند حرام می دانستند ہمچو زن پسر صلبی خود۔

एक रिवायत में है :

ज़ैद के तलाक़ देने के बाद जब ज़ैनब की इद्दत पूरी हो गई तो पैग़म्बर साहब ने ज़ैद ही को ज़ैनब के पास अपना निकाह का पैग़ाम देकर भेजा। ख़ास कर ज़ैद को इसलिए यह काम हवाले किया था कि लोगों को मालूम हो जाए कि ज़ैनब को तलाक़ देना हुज़ूर सल्ल० के बलपूर्वक न हुआ था। यद्यपि ज़ैद राज़ी न था और मालूम हो जाए कि ज़ैद के दिल में ज़ैनब की मुहब्बत न रही थी। इसी वजह से वह यह काम करने पर राज़ी न था।

نقل ست کہ چوں عدت زینب منقضی شد پیغمبر صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم زید را گفت بر و زینب را برائے من خواستگاری نماد و حکمت د تخصیص زید باں کار تواند بود کہ مردم گماں نبر دند کہ آں قصہ بر سبیل قہر واقع شدہ و بے رضائے زید معلوم شود کہ د. دل زید حُبّ زینب باقی نہ بودہ باں معنی خوشنود بود۔

नोट :- इस इबारत में जो यह ज़िक्र है कि हुज़ूर दिल में चाहते थे कि ज़ैद तलाक़ दे यह क़ायल का अपना ख़्याल है। वरना असल में सही बात जो सही क़रीना से मालूम होती है यह है कि हुज़ूर के दिल में यह था कि मेरे ही ज़ोर देने से ज़ैनब ने ज़ैद से निकाह करना मन्ज़ूर किया था। अब ज़ैद के तलाक़ देने से जो तकलीफ़ ज़ैनब को होगी उसकी ज़िम्मेदारी मुझ पर लागू होगी। इसलिए यदि ज़ैद तलाक़ देने से बाज़ न आया तो

उसकी क्षतिपूर्ति मैं यूं करूंगा कि ज़ैनब के साथ स्वयं निकाह कर लूंगा, लेकिन ऐसा करने से मुल्की रस्म रोक थी। क़ुरआन मजीद की आयत "व तख़्फ़ी फ़ी नफ़सि-क मल्लाहु मुबदीहि" यही मतलब बता रही है। जो हमने बताया है।

समाजी मित्रो! इस इबारत को ध्यान से पढ़ो और बताओ कि पंडित काली चरण ने जो दावा किया है कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने ज़ैनब को बारीक लिबास में देखा। जिससे दिल क़ाबू में न रहा और ज़ैनब ने ज़ैद से इस घटना का ज़िक्र किया आदि आदि। इस दावे का सुबूत इस इबारत में है? अगर है तो हमें ख़बर दो नहीं तो पंडित जी से पूछो कि आर्य धर्म के मुताबिक़ झूठ बोलने और लिखने वाला किस जून में जाएगा?

हां तुम समाजी मित्रों से हम सिर्फ़ यह निवेदन (अर्ज़) करते हैं कि अपने चौथे[1] उसूल को याद करके उस पर अमल करो। वरना आलिमुल ग़ैब ख़ुदा (अंतरयामी परमात्मा) के सामने जवाबदेही के लिए तैयार हो जाओ।

अजब मज़ा हो कि महशर में हम करें शिकवा
वह मिन्नतों से कहें चुप रहो ख़ुदा के लिए

शोधपूर्ण बात

यह है कि ज़ैनब को देखने या उसकी मुहब्बत दिल में रखने और छुपाने का क़िस्सा न तो हुज़ूर सल्ल० ने बताया है, न किसी सहाबा से रिवायत आई है यद्यपि यही वे दो ज़रिए सत्यता मालूम करने के थे। यह रिवायत पिछले लोगों में से दो लोगों से आई है। जिनके नाम हैं मुहम्मद बिन याहया बिन हिबान और इब्ने ज़ैद और दोनों निचले तबक़े के हैं। जिनको असल हाल का पता नहीं मात्र अपने दिल से ऐसी बात कह दी

1. आर्यों का चौथा उसूल है कि सच को मानिए और झूठ को छोड़ने के लिए हर समय तैयार रहना चाहिए।

जो स्वयं नबी से या किसी सहाबी से उन्होंने नहीं सुनी थी, अतः मुहद्दिसीन के उसूल के तहत यह बात सनद नहीं हो सकती, इसी लिए उलमा मुहक़्क़िक़ीन ने इसका खंडन ज़ोरदार तरीक़े से लिखा है जो तफ़्सीर ख़ाज़िन से ऊपर नक़ल हुई है।

संक्षिप्त

यह है कि मुतबन्ना (ले पालक) की रस्म जिससे अरब वासी और हिन्द वाले असली मायना में ले पालक को बेटा जानते थे। क़ानून क़ुदरत के बिल्कुल ख़िलाफ़ है। इसलिए दुनिया के "महान सुधारक" सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से खुदा ने उसका सुधार कराया। मगर जो लोग इस रस्म से भी ज़्यादा नापसन्दीदा रस्मों के क़ायल बल्कि पाबन्द हैं उनके स्वभाव के ख़िलाफ़ हुई।

इस रस्म से ख़राब रस्म वह है जिसका नाम नियोग है। जिसकी सूरतें दो हैं :

(1) कोई मर्द अपने में मर्दान्गी ताक़त न पाए तो अपनी स्त्री (पत्नी) को इजाज़त दे कि तू किसी और से बच्चा पैदा करा।

(2) दूसरी सूरत यह है कि कोई मर्द बे औलाद मर जाए तो उसकी विधवा औरत किसी जवान से नियोग करके औलाद पैदा करे उस औलाद की बाबत आर्यों के गुरु स्वामी दयानन्द लिखते हैं :

"लड़के वीरज दाता (वीर्य वाले बाप) के न बेटे कहलाते हैं न उसका गोत्र होता है और न उसका अधिकार उन लड़कों पर रहता है, बल्कि वे मृत पति (जिससे उनको वीर्य का संबंध नहीं उस) के बेटे कहलाते हैं उसका गोत्र रहता है और उसी की जायदाद के वारिस होकर उसी के घर में रहते हैं।"

(सत्यार्थ प्रकाश, अध्याय 4, नम्बर 111)

माशाअल्लाह क्या ही नेचुरल शिक्षा है। बीज किसी का और फल

किसी को!

समाजियो! धर्म से कहना, यही शिक्षा है जिसकी बाबत तुम कहा करते हो कि जहां सांस जाएगा वेदिक झंडा वहां पहले लहराएगा।

चूंकि आर्य समाजी इस प्रकार की नापसन्दीदा रस्म के पाबन्द हैं इसलिए उनको यह सख़्त बुरा लगा कि रस्म मुतबन्ना का विरोध क्यों किया गया। अतएव रंगीले महाशय ने ज़ैनब के निकाह के बारे में जो कुछ लिखा है वह देखने व सुनने योग्य है। पाठक हमारी उपरोक्त उल्लिखित तक़रीर को ध्यान में रखकर रंगीला महाशय की सुनिए, जिसके शब्द ये हैं :

> ''एक दिन मुहम्मद ज़ैद की ग़ैर मौजूदगी में उसके घर जा निकला। चिलमन के पीछे ज़ैनब बैठी थी। उसने रसूल की आवाज़ सुनी तो जल्दी से उसे अंदर लाने का आयोजन करने लगी, मुहम्मद की निगाह उसके सुन्दर शरीर पर पड़ी। दिल पर बिजली सी गिरी मुंह से निकला, सुब्हानल्लाह! तू कैसी ख़ूबसूरती की रचना कर्त्ता है। ज़ैनब ने ये शब्द सुन लिए और दिल ही में पैगम्बर के दिल पर क़ाबू पा जाने की ख़ुशियां मनाने लगी। ज़ैद से शायद उसकी न बनती थी। लाख मुहम्मद का मुतबन्ना हो, आख़िर ग़ुलाम था और यह पूरी तरह क़ुरैश। ज़ैद आया तो उससे ज़ैनब ने उस घटना का ज़िक्र किया, मुहम्मद से अक़ीदत समझो या शायद उसका दिल पहले से ही ज़ैनब से खट्टा हो, दौड़ा दौड़ा मुहम्मद के पास गया और अपनी पत्नी को जिस पर अब मुहम्मद का दिल आ चुका था। तलाक़ देने की बात व्यक्त की। मुहम्मद ने रोका और कहा आपस में ख़ुशी ख़ुशी गुज़ारा करो। लेकिन ज़ैद को उस पत्नी का पति रहने से क्या हासिल? जो दिल दूसरे को दे चुकी है? उसने ज़ैनब को तलाक़ दे ही दी। अब ज़ैनब मुहम्मद के सर हुई कि मुझे अपनी सेवा में लीजिए।

मुहम्मद को संकोच हुआ कि बेकार में बदनामी होगी। आख़िर वह्य ने मुश्किल हल कर दी और सूरह उतरी "ख़ुदा ने इंसानों को दो दिल नहीं दिए.....न तुम्हारे गोद लिए बेटे अपने बना दिए हैं, जो तुम कहते हो। यह तुम्हारे मुंह से निकलता है। मगर अल्लाह हक़ीक़त से अवगत है वह सीधी राह दिखाता है, तुम्हारे ले पालकों को चाहिए कि वे अपने बाप के नाम से मशहूर हों और जब तूने एक ऐसे बन्दे से जिस पर अल्लाह की कृपा भी है और तेरी भी कृपा है कहा कि तू अपनी पत्नी अपने पास रख और अल्लाह का भय कर और तूने अपनी छाती में छुपाया, जो अल्लाह की मर्ज़ी थी कि प्रकट हो और तू इंसान से डरा, यद्यपि अल्लाह ज़्यादा क़ाबिल है डरने के, और जब ज़ैद ने तलाक़ की रस्म पूरी कर दी, हमने तुझे उससे बियाह दिया ताकि मोमिनों को उसके अपने ले पालकों की पत्नियों से शादी करना बुरा न हो, बशर्ते कि उनकी तलाक़ की रस्म पूरी हो चुकी हो। और अल्लाह का हुक्म ज़रूर पूरा होगा, मुहम्मद तुममें से किसी का बाप नहीं। वह अल्लाह का रसूल है और ख़ातिमुल मुरसलीन है और अल्लाह सब कुछ जानता है।"

(सूरह अहज़ाब, रुकूअ 5)

ये शब्द हमने इसलिए नक़ल किए कि मुहम्मद के दिल की हालत का पता पाठक को लग सके। ज़ैनब की ज़ियारत के बाद मुहम्मद ने झूठ मूठ का संकोच प्रकट किया वरना दिल में इश्क़ की आग अपना असर कर चुकी थी और दम बदम भड़क रही थी। वह्य होती गई और मुहम्मद ने तुरन्त ज़ैनब के पास पैग़ाम भेजा, कि परमात्मा ने तुझे मुझसे मिला दिया। फिर तो निकाह की ज़रूरत[1] न रही। जहां अल्लाह दिल मिला दे वहां

---

1. मात्र झूठ (लेखक), निकाह का पैग़ाम दिया और बाक़ायदा निकाह हुआ। देखो पृष्ठ 6 किताब उपरोक्त।

क़ाज़ियों और निकाह ख़्वानों का बीच में पड़ना उस पाक निकाह का मखोल नहीं तो और क्या है? लोगों की तसल्ली करना ज़रूरी था। तो कह दिया, अल्लाह ने निकाह पढ़ाया है और जिबरील गवाह[1] हैं और इन दो शर्तों के अलावा निकाह की और शर्त भी क्या है?

> "रंगीले रसूल का यह रंग बड़ा अजीब है, बेटा बेटा न रहा। बहू बहू न रही।" (पृ० 21-34)

जवाब

विरोधी की इस सारी तक़रीर का जवाब हम पहले ही दे चुके हैं पाठक ध्यान से देखें और उसका अपना स्वीकार करना दोबारा पढ़ें जो यह है :

> "आर्य शास्त्रों में ख़ानादारी की अवधि पच्चीस साल निर्धारित है। यह अवधि मुहम्मद ने बड़ी पाकीज़गी से बसर की इसलिए हम उसे आर्य ख़ानादार कह सकते हैं।" (पृ० 15)

समाजी सज्जनो! इंसाफ़ करो, जो आदमी पचास साल की उम्र तक ऐसा पाकीज़ा आचरण का रहा हो जिसकी पाकीज़गी पर तुम भी गर्व करो तो वही (तुम्हारा आर्य ख़ानादार) पचास से ऊपर (58) सालों की उम्र को पहुंचे तो नफ़्सानी भावना से वशीभूत हो जाए?

असल बात

वही है जो हमने बताई है कि देश में एक बुरी रस्म क़ानूने क़ुदरत की मन्शा के विरुद्ध जारी थी। अर्थात दूसरे के बेटे को अपना बेटा बनाने और कहने की इस बुरी रस्म के सुधार के लिए ख़ुदा ने अपने नबी को नमूना बनाया। चूंकि आर्यों में भी वही बल्कि उससे भी बुरी रस्म मौजूद है। इसलिए वह इस निकाह पर आपत्ति करते हैं और हुज़ूर अलैहिस्सलाम

1. मात्र झूठ कहते हो। (लेखक)

की शान में तरह तरह की गुस्ताख़ी के शब्द ज़बान और क़लम से निकालते हैं। यद्यपि बात असल यह है कि :

उन्होंने ख़ुद ग़र्ज़ शक्लें कभी देखी नहीं शायद
वे जब आईना देखेंगे तो हम उनको बता देंगे

विचार योग्य बात

हज़रत ज़ैनब के निकाह में बहस योग्य बात सिर्फ़ एक है वह यह कि मुंह बोला बेटा क़ुदरती बेटा हो सकता है? मुसलमान उसके इन्कारी हैं। उनका बयान है कि बेटे बाप का ताल्लुक़ क़ुदरती है। इसी लिए बच्चा बाप का बेटा तो कहलाता है। मगर चचा का बेटा नहीं कहलाता। न बेटे की तरह चचा का वारिस होता है इसके विपरीत आर्य और अन्य इस्लाम विरोधी क़ानूने क़ुदरत के विरुद्ध उसको बेटे की तरह जानते हैं। दिल में नहीं तो इस्लाम के मुक़ाबले में मात्र विरोध व्यक्त करने को ऐसा करते हैं। इसलिए न्यायी लोगों के सामने हम इस समस्या को पेश करके मालूम करते हैं कि कहीं ऐसा हुआ है कि बनावटी गुलाब क़ुदरती गुलाब की तरह आनन्द देने वाला हो सके? अगर नहीं तो रंगीले महाशय का यह कहना कैसा धोखा बल्कि फ़रेब है कि "बेटा बेटा न रहा, बहू बहू न रही।"

हां यूं कहना चाहिए था कि क़ुदरती और बनावटी बेटे और असली और नक़ली बहू में फ़र्क़ हो गया। क्या सच है :

बस हो रहेगा इश्क़ व हवस में भी इम्तियाज़
आया अब मिज़ाज तेरा इम्तिहान पर!!

आरोप नए रंग में

(हज़रत रीहाना रज़ियल्लाहु अन्हा)

रंगीले महाशय

की पक्की आदत है कि अपने दिली विचारों को घटनाओं की शक्ल में पेश करता है जो एक ईमानदार लेखक से बहुत दूर है। हमने उसके रिसाले में कई एक जगह ऐसा देखा अर्थात निम्न शब्द इसके इसी प्रकार के हैं। लिखता है :

"हिजरत के बाद मुहम्मद को यहूदियों से तरह तरह की उम्मीदें थीं। उसने उनसे दोस्ती का रिश्ता गांठा। उनके मज़हब की प्रशंसा की और अपने मज़हब की प्रशंसा की, और अपने मज़हब की सच्चाई का सर्टिफ़िकेट भी उन्हीं से हासिल किया। बाद में जब उसके अनुयायियों की संख्या बढ़ गई तो वही यहूद मुहम्मद के लिए दुश्मनी का कारण हुए। कांटा बनकर उसकी आंखों में खटकने लगे। एक दिन आया जब उनका घेराव किया गया और जब वे क्षमा के तलबगार हुए तो फ़ैसला हुआ कि उन्हें क़त्ल कर दिया जाए। सैकड़ों यहूदी आन की आन में तलवार के घाट उतर गए एक औरत को भी उसकी अपनी विनती पर क़त्ल किया गया।" (पृ० 37)

पाठको! इतने बड़े दिल दुखाने वाले और अपमान जनक दिल तोड़ने वाले दावे का हवाला किसी विश्वसनीय इस्लामी तारीख़ से नहीं दिया। इसलिए इसका असल जवाब वही था जो उनके गुरु स्वामी[1] दयानन्द और

---

1. सत्यार्थ प्रकाश, अध्याय 10, नम्बर 3, वाक्य 7

एशिया के उस्तादुल अख़्लाक़ शेख़ साअदी मरहूम ने लिखा है कि :

जवाब जाहिलां बाशद ख़मूशी

लेकिन हम इसी जवाब पर बस नहीं करते बल्कि इसको खोल कर बताते हैं :

पैग़म्बरे इस्लाम अलैहिस्सलाम ने यहूदियों के मज़हब की कभी प्रशंसा नहीं की। न क़ुरआन में न हदीस में न उनसे कोई भलाई की उम्मीद रखी बल्कि क़ुरआन मजीद में साफ़ साफ़ ऐलान है कि यहूदी मुसलमानों के सख़्त तरीन दुश्मन हैं। ध्यान से पढ़िए :

وَلَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الْيَهُوْدَ وَالَّذِيْنَ
اَشْرَكُوْا (پ)

(अनुवाद) तुम यहूद और मुश्रिकीन को मुसलमानों के हक़ में सख़्त तरीन दुश्मन पाओगे।" यह है महाशय का पहला झूठ।

हां आर्यों के गुरु

स्वामी दयानन्द ने ऐसा काम किया था कि पहले पहल सत्यार्थ प्रकाश में हिन्दुओं को गांठने के लिए उनकी रस्म श्राद्ध आदि को जाइज़ बताया देखिए सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन 1875 ई० इसके बाद जब आर्यों की संख्या कुछ नज़र आने लगी तो उस रस्म का बड़ा भारी खंडन कर दिया। शायद महाशय को शीशे में अपना चेहरा नज़र आया होगा।

घेराव की हक़ीक़त यह है कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम जब मदीना तय्यिबा तशरीफ़ ले गए तो मदीना के यहूदियों से आपसी सहयोग की सन्धि हुई थी। हिजरत के चौथे साल मशहूर जंगे ख़न्दक़ के मौक़े पर मुश्रिकीन मक्का ने जब मुसलमानों पर चढ़ाई की तो मदीने के यहूदियों की दोनों क़ौमें वचन तोड़कर उनसे मिल गईं। अतएव उसके बारे में टीकाकार इब्ने ख़ुलदून के शब्द यह हैं :

كان بنو قريظة معاهدين
رسول الله صلى الله عليه وسلم
فاتاهم حيى فاغراهم فنقضوا
العهد وما لوا مع الاحزاب۔
(البقیہ جزو ثانی صفحہ ۲۹)

यहूद बनी क़ुरैज़ नबी सल्ल० की सन्धि के पाबन्द थे उनके पास एक क़बीला आया उसने उनको बहकाया तो उन्होंने वायदा तोड़ दिया। और विरोधियों की जमाअत में मिल गए। (बक़िया दूसरा भाग पृ० 29)

टीकाकार अबुल फ़िदा के शब्द यह हैं :

كان بنو قريظه قد عاهدوا النبى
صلى الله عليه وسلم فما زال عليهم
اصحابهم من اليهود حتى نقضوا
العهد وصاروا مع الاحزاب (ص ۱۳۵)

क़बीला बनू क़ुरैज़ा (यहूद) ने हुज़ूर सल्ल० के साथ सन्धि कर रखी थी। फिर उन्होंने सन्धि का उल्लंघन किया और (जंगे अहज़ाब में) दुश्मन जमाअतों के साथ मिल गए।

इस ग़द्दारी और वचन तोड़ने और मुख़ालिफ़ाना जंग की सज़ा में हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने उन लोगों का घेराव किया और स्वयं उनकी प्रार्थना से साअद बिन मुआज़ जज मुक़र्रर हुए। जिन्होंने फ़ैसला दिया कि उन लोगों में जो लड़ने के क़ाबिल हैं वे क़त्ल किए जाएं और औरतों व बच्चों को लौंडी ग़ुलाम बनाया जाए। जिस औरत के क़त्ल का ज़िक्र महाशय ने किया है उसका नाम बनाना था अपराध उसका यह था कि उसने ख़ल्लाद बिन सुवैद सहाबी पर मकान पर से चक्की का पाट (पत्थर) दे मारा था। जिससे वह मर गया था। (इब्ने खुलदून तैमा दूसरा भाग पृष्ठ 32) उसकी ख़्वाहिश पर उसको क़त्ल नहीं किया बल्कि ख़ून के बदले में क़त्ल हुई।

हां रीहाना रज़ि० की बाबत महाशय को बहुत रहम आया है। मगर अफ़सोस कि उसकी असलियत भी छुपाकर। इसमें शक नहीं कि वह एक प्रतिष्ठित ख़ानदान की लड़की थी। हुज़ूर सल्ल० के हिस्से ख़ास में लौंडी होकर आई थी। हुज़ूर सल्ल० ने उसकी इज़्ज़त अफ़ज़ाई करने को

फ़रमाया, मैं तुझे आज़ाद करके निकाह करना चाहता हूं। उसने कहा, मैं हुज़ूर सल्ल० की लौंडी रहना पसन्द करती हूं। अतएव वह लौंडी ही रही। (तारीख़ इब्ने असीर कामिल भाग 2, पृ० 89)

पाठको! यह है वह घटना जो विरोधी ने बिल्कुल उलट पलट कर अपने मतलब की बनाकर पेश की ताकि स्वामी दयानन्द के कथन की पुष्टि हो कि :

> ''मज़हब के पक्षपात में फंसे हुए अक़्ल को ख़राब करने वाले व्यक्ति के ख़िलाफ़ बात की मंशा के मायना किया करते हैं।''
>
> (दीबाचा सत्यार्थ प्रकाश, पृ० 7)

हां यह ख़ूब कहा कि यहूदियों से सर्टिफ़िकेट लिया, मेहरबानी करके उस सर्टिफ़िकेट की इबारत तो ज़रा नक़ल की होती।

समाजियो! झूठ बोलना, झूठ फैलाकर देश में उत्पात मचाना कहो जी कौन सा धर्म है?

आगे चलिए : महाशय जी लिखते हैं :

> ''बनी मुसतलिक़ की मुहिम में अन्य माल व सामान के साथ जुवैरिया नामी एक यहूदी औरत हाथ आई। उसकी क़ीमत उसके विजेता ने ज़्यादा लगाई और मुहम्मद के पास फ़रियादी बनकर गई। मुहम्मद ने क़ीमत घटाने की बजाए वह पहली क़ीमत स्वयं अदा कर दी और उसे अपने निकाह में क़ुबूल कर लिया।'' (पृ० 38)

इस घटना की असलियत भी महाशय ने छुपा रखी या उसे स्वयं ख़बर नहीं। असल यह है कि आज कल के जितने महाशय लेखक इस्लाम के विरुद्ध लिखते हैं उनका प्रत्यक्ष ज्ञान पंडित लेखराम और ईसाई पादरियों की किताबें तवारीख़ मुहम्मदी, तक्ज़ीब बुराहीन अहमदिया आदि

हैं। इसलिए ये बेचारे स्वयं भी गुमराह हुए हैं और अपनी क़ौम और पाठकों को भी गुमराह करते हैं :

ضَلُّوا وَاَضَلُّوا كَثِيرًا

अगर इस घटना की सही जानकारी होती, इसी के साथ उसके साथ इंसाफ़ भी होता तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम की ग़रीब परवरी की दाद देते।

اللّٰهم صلّ على محمد وّعلى اٰله واصحابه اجمعين-

सुनिए! असल क़िस्सा तो यूं है कि बनी मुसतलिक़ की लड़ाई में जुवैवरिया क़ैद होकर आई जो साबित बिन क़ैस के हिस्से में आई उसने उससे किताबत[1] की। किताबत की रक़म अदा करने में मदद मांगने को हुज़ूर सल्ल० की सेवा में आई चूंकि वह दुश्मन के सेनापति की बेटी थी। इसलिए हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, किताबत में मदद देने से भी अच्छी बात तुमको बताऊं? उसने अर्ज़ किया, इरशाद। फ़रमाया, मैं तुझसे निकाह कर लूं? उसने बड़ी ख़ुशी से हां कर ली। हुज़ूर सल्ल० ने जब उससे निकाह किया तो मुसलमान फ़ौज में यह ख़बर बिजली की तरह फैल गई। फ़ौज ने कहा :

हैं? बनी मुसतलिक़ से हुज़ूर सल्ल० ने सुसराल का रिश्ता कर लिया तो हम उनके क़ैदियों को लौंडी ग़ुलाम बनाकर रखें? अतएव उस निकाहे नबवी का असर जो हुआ वह टीकाकार अबुल फ़िदा के शब्दों में दर्ज है :

अर्थात हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने जुवैवरिया	فادى عنها رسول الله كتابتها و
की तरफ़ से उसकी रक़म किताबत	تزوجها فقال الناس اصهار
अदा की और उससे निकाह कर लिया।	رسول الله صلى الله عليه وسلم
सहाबा ने कहा, अब तो ये लोग हुज़ूर	فاعتق بتزوجه اياها مائة اهل

1. मालिक ग़ुलाम या लौंडी से इक़रार करे कि तू इतनी रक़म अदा कर दे तो मैं तुझे आज़ाद कर दूंगा इसको इस्लामी परिभाषा में किताबत कहते हैं।

के सुसराली बन गए। तो हुज़ूर सल्ल० के इस निकाह करने से बनी मुसतलिक़ के एक सौ घराने जो मुसलमानों के ग़ुलाम बन चुके थे आज़ाद हो गए तो यह औरत जौवरिया अपनी क़ौम के हक़ में बड़ी बरकत वाली साबित हुई।

بیت من بنی المصطلق فکانت عظیمۃ البرکت علی قومھا۔
ابوالفدا جلد اوّل صـ ۱۳۷۔ ابن خلدون جلد اوّل صـ ۱۳۔ ابن اثیر صـ ۹۱، ۹۲۔

पाठको! क्या यह क़िस्सा हुज़ूर की कमाल मेहरबानी का सुबूत है या बे मुरव्वती का।

हज़रत उम्मुल मोमिनीन सफ़िया
(रज़ियल्लाहु तआला अन्हा)

महाशय विरोधी ने हज़रत सफ़िया की बाबत लिखा है :

"ख़ैबर भी यहूदियों की एक बस्ती थी उस पर मुहम्मद ने छापा मारा और फ़तह कर लिया उस बस्ती का सरदार कनआन मारा गया और उसकी पत्नी हाथ आई। मुहम्मद ने उससे भी निकाह की इच्छा व्यक्त की। वह राज़ी हो गई। अब मदीने वापस जाने तक की ताब किसे? मिट्टी के ढेर लगा लगाकर दस्तरख़्वान बनाए गए और उन पर खजूरों, मक्खन और दही की दावत की गई। नई दुल्हन को संवारा गया और मुहम्मद उसे एकान्त में ले गए। अक़ीदतमंदों ने एहतियातन रसूल के ख़ेमों का पहरा दिया कि कहीं अधर्मी औरत अपने पति के क़त्ल का बदला न चुकाए मगर यह सावधानी ग़ैर ज़रूरी साबित हुई।"

(पृ० 38)

अपनी मामूली आदत से महाशय ने असल घटना को छुपाकर बल्कि तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत किया है कमाल साहस यह है कि आदत के अनुसार

हवाला किसी किताब का नहीं दिया। हम असलियत बताते हैं और विश्वसनीय टीकाकार "इब्ने ख़ुलदून" के शब्द सामने रखते हैं।

असल घटना यह है कि ख़ैबर की जंग में उनके सरदार कनआन की पत्नी सफ़िया लौंडी होकर मुसलमानों के क़ब्ज़े में आईं जो एक सहाबी के हाथ पहुंचीं। रिपोर्ट हुई कि हुज़ूर सल्ल० वह बड़े सरदार की पत्नी है। हुज़ूर ने उससे उसे ख़रीद कर आज़ाद फ़रमाया। जब उसकी इद्‌दत पूरी हो गई तो उसकी मर्ज़ी से उसका मान बढ़ाने को आपने निकाह कर लिया। टीकाकार इब्ने ख़ुलदून के शब्द इस बारे में ये हैं :

واصيبت منهم سبايا كانت
منهن عروساً عند كنانة بن الرَّبيع بن ابى
الحقيق فوهبها عليه السلام لدحية
ثُمَّ ابتاعها منه بسبعة اروس
ووضعها عند ام سلمة حتّى اعتدت
واسلمت ثُمَّ اعتقها وتزوجها
(صفحہ ۳۹ تتمہ جزو ثانی)

बहुत से क़ैदी आए उनमें सफ़िया थी जो कनआन की पत्नी थी। बस वह हुज़ूर ने वहबिया सहाबी को प्रदान कर दी फिर उसको उससे ख़रीद लिया और उसकी बीवी उम्मे सलमा के पास रखा। यहां तक कि उसकी इद्‌दत पूरी हो गई। फिर हुज़ूर सल्ल० ने उसे आज़ाद फ़रमाया और निकाह किया। (पृ० 39 ततिम्मा दूसरा हिस्सा)'

अल्लाह रे किस क़दर मान बढ़ाना है एक औरत का जो हस्बे क़ानून जंग में लौंडी बनकर मामूली सिपाही के हिस्से में आए और हिन्दू धर्म शास्त्र[1] के आदेशानुसार उस सिपाही के पास रहने पर मजबूर हो। उसको बादशाहे वक़्त बल्कि सरदारे दो जहां मेहरबानी के तौर पर आज़ाद करके अपने निकाह में लाए। मगर "दुश्मन बात करे अनहोनी"। उनको कौन समझाए जिनको ख़ुदा का भय न हो। अक़ीदत मंदों के पहरा देने और पति के क़त्ल का बदला लेने और पेशानी पर घाव आदि का सुबूत विरोधी के ज़िम्मे हैं। जिसकी बाबत उम्मीद नहीं कि वह उस फ़र्ज़ से फ़ारिग़ हो सके।

1. मनु स्मृति, अध्याय 7, फ़िक़रा नं. 96

हज़रत उम्मुल मोमिनीन उम्मे हबीबा

(रज़ियल्लाहु तआला अन्हा)

इस संबंध में रंगीले महाशय ने चलते चलते उम्मे हबीबा के निकाह का भी ज़िक्र किया। मगर आदत के अनुसार पोशीदगी से काम लिया है। अतएव उसके शब्द यह हैं :

> "ख़ैबर से मदीना वापस आए, फिर मुहम्मद ने अबू सुफ़ियान की लड़की उम्मे हबीबा को पत्नी का गौरव बख़्शा। उस निकाह की कार्रवाई हबशा में स्वयं शाह हबशा की तरफ़ से हुई थी।"
>
> (पृ० 39)

जवाब : इस निकाह की हिक्मत तो स्वयं लड़की के बाप के शब्दों में मिलती है। महाशय क्या जाने भला, उसे तो आपत्ति करने से मतलब है।

सुनिए! काफ़िर विरोधी अरब में अबू सुफ़ियान एक बड़ा सरदार था। वही जंग ख़न्दक़ में फ़ौज का सरदार बनकर आया था। यह उम्मे हबीबा उसकी लड़की थी जो अपने पति के साथ हबशा में गई थी। उसका पति वहां मर गया। वहां के बादशाह ने हुज़ूर अलैहिस्सलाम के साथ उसका निकाह कर दिया। उस निकाह की ख़बर सुनकर अबू सुफ़ियान के मुंह से आप से आप निकला :

ذلك الفحل لا يقدع انفهٗ
(تاریخ کامل ابن اثیر مطبوعہ مصر جلد ۲ صفحہ ۱۰۳)

"इस बहादुर (नबी) को कहीं भी नाकामी नसीब नहीं हुई।" (तारीख़ कामिल इब्ने असीर प्रकाशन मिस्र, तीसरा भाग, पृ० 103)

अबू सुफ़ियान का यह एक वाक्य हुज़ूर की आइंदा सियासी और मज़हबी कामयाबियों के लिए भविष्यवाणी थी जो बिल्कुल पूरी हुई।

हज़रत उम्मुल मोमिनीन मैमूना

(रज़ियल्लाहु तआला अन्हा)

रंगीले महाशय ने चलते चलते हज़रत मैमूना के निकाह का भी ज़िक्र किया है जिसमें कोई ख़ास बात आपत्ति जनक नहीं बताई। अतएव उसके शब्द यह हैं :

> "मैमूना नाम से उसके चचा अब्बास की विधवा बहू मौजूद थी। उसकी उम्र 26 साल की थी और वह रिश्ते में भी मुहम्मद के नज़दीक की थी इसलिए अपने चचा के कहने सुनने पर मुहम्मद ने उसे अपने हरम में ले लिया। मदीना की मस्जिद[1] में जहां पहले 9 हुजरे थे अब दसवां तैयार हुआ।" (पृ० 40)

हां मालूम होता है

कि महाशय के ज़ेहन में मसला बहु पत्नी विवाह का ग़लत होना बैठा हुआ है। इसलिए सारी कार्रवाई इस आधार पर किए जाता है। अतः हम भी इस मसले का अन्त में ज़िक्र करेंगे। इंशाअल्लाह।

हज़रत मारिया रज़ियल्लाहु अन्हा

मारिया हुज़ूर अलैहिस्सलाम की लौंडी (बांदी) थी पत्नियों के अलावा बांदियां रखने पर महाशय को आपत्ति है। अतएव उसके चुभते हुए शब्द यह हैं :

> "मारिया के बारे में मुहम्मद पर एक आरोप लगाया जाता है। लौंडियां रखना क़ुरआन करीम की रू से जाइज़ है, मुहम्मद के घर में लौंडियां थीं। उन पर न मुहम्मद की पत्नियों ने आपत्ति

1. मस्जिद में न थे बल्कि मस्जिद के आस पास थे।

की न मुहम्मद के अनुयायियों ने।" (पृ० 41)

जवाब

बेशक आपने सच कहा क़ुरआन की रू से जाइज़ और उस ज़माने के क़ानून की रू से जाइज़। हां एक शब्द आप छोड़ गए वह यह कि धर्म शास्त्र की रू से भी जाइज़ है। विश्वास न हो तो सुनो, वेदों के बड़े उस्ताद वेदिक धर्म के सर्व मान्य ऋषि मनु जी फ़रमाते हैं :

"रथ घोड़ा, चार पाया, औरत आदि इन सब को जो फ़तह करे वही उसका मालिक होता है।" (अध्याय 7, वाक्य 96)

ग़ुलामों को यहां तक महत्वहीन किया गया है कि उनकी कमाई पर भी उनको अधिकार नहीं। सुनो!

"अपनी औरत के लड़के व ग़ुलाम यह सब जिस दौलत को जमा करें वह सब दौलत उनके मालिक की है। यह उसके हक़दार मालिक की ज़िंदगी में नहीं।"

और सुनो!

"राजा ब्रहम्मण, ग़ुलाम और शूद्र से दौलत ले लेवे और उसमें कुछ संकोच न करे क्योंकि वह दौलत कुछ उसकी मिल्कियत नहीं, वह धनहीन है।" (मनु स्मृति, अध्याय 8, वाक्य 416-417)

तो जो काम क़ुरआन की रू से जो काम धर्म शास्त्र की रू से जाइज़ हो उस पर आपत्ति करना नास्तिक (अधर्मी) का काम है, किसी आस्तिक का नहीं।

महाशय की अनभिज्ञता

हम तो शुरू से कहते आए हैं कि रंगीला रिसाला की लेखक पार्टी इस्लामी तारीख़ से प्रत्यक्ष में अवगत नहीं। उनकी जानकारी का माध्यम इस्लाम दुश्मनों की किताबें तवारीख़ मुहम्मदी, तक्ज़ीब बुराहीन, तारीख़

विलियम मयूर आदि है। इसका सुबूत स्वयं उन्हीं के क़लम से यहां हम देते हैं। लिखते हैं :

> "एक बार कहीं से तीन लौंडियां आईं तो मुहम्मद ने वे एक एक करके अपने खुसरों अबूबक्र और उसमान और अपने दामाद अली को प्रदान कर दीं। आज दुनिया इसे शर्मनाक ढिठाई कहेगी कि अपने दामाद और ख़ुसरों के साथ यह याराने मज्लिस का सा सुलूक।" (पृ० 41)

इस पृष्ठ पर और इसके अलावा पृ० 44 पर भी हज़रत उसमान को हुज़ूर के ख़ुसरों में शुमार किया है, यद्यपि तारीख़ इस्लाम में हज़रत उसमान हुज़ूर के दामाद तो हैं ख़ुसर नहीं।

समाजियो! इंसाफ़ से कहना अपने चौथे उसूल को सामने रखकर कहना इस दावे के सुबूत में (कि हुज़ूर ने अबूबक्र और उसमान को लौंडियां दीं) तुम्हारे रंगीले महाशय ने कोई हवाला दिया?

बताओ : अगर तुम किसी मज्लिस की गुफ़्तुगू में यह पेश करो और मुसलमान तुमसे सुबूत मांगें और तुम न प्रस्तुत कर सको तो तुम्हें कितनी नदामत होगी।

कोई महाशय बुज़ुर्ग औलाद की प्राप्ती के लिए स्वामी जी के हुक्म से अपनी स्त्री का किसी जवान आदमी से नियोग कराए वह बेचारी साल दो साल तक उस जवान की सेवा में रहे। मगर परमात्मा के हुक्म से औलाद न हो तो वह बेचारा और बेचारी किस क़दर शर्मिन्दा होंगे।

सच कहना! तुम विरोधी के सामने हवाला पेश न कर सकने पर उससे ज़्यादा शर्मिन्दा होगे या नहीं? फिर क्यों ऐसे लेखकों को तुम लोग मजबूर नहीं करते कि हर दावे का सुबूत दिया करें।

तो हम माने लेते हैं कि हुज़ूर ने अपने खुसरों को लौंडियां दीं तो क्या

अपराध किया तुम समझते हो कि लौंडियों से सिर्फ़ पत्नी का काम लिया जाता है। यद्यपि लौंडी घर की सेविका भी होती है। अच्छा सुनो! मनु जी ने जो कहा कि लूट में औरत को जो लूटे राजा उसी को दे दे। भला लूटने वाला कोई राजा का खुसर हो या दामाद बल्कि बाप भी हो तो उसे भी औरत दे दे। हे राम! इतना पाप?

आर्य सज्जनो!

संभल के रखना क़दम दश्ते ख़ार में मजनूं
कि इस नवाह में सौदा बरहना पा भी है

रंगीले लेखक का नया रंग

क़िस्सा तहरीम

आगे चलिए! रंगीले महाशय ने नया रंग निकाला है। लिखते हैं :

"हदीसों की रिवायत यह है कि एक दिन जब हफ़सा की बारी थी हफ़सा मुहम्मद से छुट्टी लेकर मैके चली गई और उसके घर को मुहम्मद ने मारिया से बसा लिया इतने में हफ़सा आ गई वह देखकर जल भुन गई कि उसकी आरामगाह आज एक ग़ैर मन्कूहा लौंडी की ख़्वाबगाह बनी हुई है। इस ग़ुस्से को मुहम्मद ताड़ गया। और कहा भाग्यवान! अगर मारिया की इस घटना का ज़िक्र किसी से न करो तो मैंने यह वायदा किया कि आइंदा मारिया से मुबाशरत न होगी और मेरे बाद ख़िलाफ़त का हक़ तुम्हारे बाप का होगा।" (पृ० 43)

बेशक क़ुरआन मजीद में यह आयत है :

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ ـ

"ऐ नबी जो ख़ुदा ने तुम्हारे लिए हलाल किया है तुम उसको

हराम क्यों करते हो क्या पत्नियों को राज़ी करने के लिए ऐसा करते हो।"

इस आयत के बारे में अनेक रिवायतें आई हैं कि कौन सी चीज़ हुज़ूर ने अपने हक़ में हराम की थी, जिसका ज़िक्र इस आयत में नापसन्दीदगी के तौर पर आया है एक रिवायत है कि मारिया लौंडी को हराम कर दिया था। दूसरी और भी है मगर ज़्यादा सहीह रिवायत यह है कि हुज़ूर शहद का शरबत पिया करते थे, किसी ने ग़लत कह दिया कि आपके मुंह से मोम की गंध आती है। आपको बदबू से सख़्त नफ़रत थी। आपने फ़रमाया, मैं शहद कभी न पियूंगा। इसमें शक नहीं कि ऐसा कहने वाली पत्नियां थीं। यह रिवायत सहीह है। अतएव उच्च कोटि के मुहद्दिस टीकाकार हाफ़िज़ इब्ने कसीर फ़रमाते हैं :

والصحیح ان ذالك كان فی تحریمه العسل كما قال البخاری
عند هٰذا لایة الخ۔

अर्थात सहीह बात यह है कि आयत शहद पीने पर उतरी है। जैसा कि इमाम बुख़ारी ने रिवायत किया है। बस असल जवाब तो आ गया है। रहा यह सवाल कि जिन पत्नियों ने ऐसी ग़लत बात की उनकी बाबत क्या सज़ा। जवाब यह है कि वही सज़ा जो क़ुरआन मजीद में मौजूद है :

إِنْ تَتُوْبَا إِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوْبُكُمَا۔

(तुम्हारे दिल बिगड़ चुके हैं तौबा करोगी तो तुम्हारे हक़ में बेहतर होगा बेशक जो करे वह भरे।)

महाशय का इससे आगे का नोट इससे भी ज़्यादा धोखा देने वाला है जो इसी क़िस्से मारिया की घटना को कारण मानकर लिखा है :

"बात थी टल गई। लेकिन हफ़सा से अपने पर क़ाबू न रखा जा सका। उसने इस घटना का आइशा से ज़िक्र किया। वह स्वाभिमान औरत थी अतः आइशा के तत्वाधान में मुहम्मद की

पत्नियों की एक मीटिंग हुई। सब ने मुहम्मद से मुंह फेर लिया, मुहम्मद पैग़म्बर मदीना का सर्व मान्य बादशाह! ये पत्नियां कौन हैं ज़ो उससे रुखाई का बर्ताव करें। तुरन्त वह्य अवतरित हुई और उन अवज्ञाकारी पत्नियों का बायकाट कर दिया। महीना भर मारिया के डेरा लगा दिया, कि बिगाड़ लो, जो बिगाड़ सको। इधर अबूबक्र नाराज़ उसमान नाराज़ कि लौंडी की ख़ातिर हमारी बेटियों से ताल्लुक़ छोड़ रखा है। महीना भर की जुदाई के बाद मुहम्मद का दिल भी मुलायम हुआ, कहा अल्लाह ने सिफ़ारिश की है हफ़सा की ग़लती माफ़ और उसके साथ उसकी सब बहनों की ग़लती माफ़।" (पृ० 44)

जवाब

आह! स्वामी दयानन्द होते तो महाशय की दाद देते कि सारे हिन्दुस्तान में हमारी शिक्षा से यही एक लायक़ चेला निकला है जो हमारे मिशन (इस्लाम से नफ़रत दिलाने) को पूरा करने वाला है।

सुनिए! असल क़िस्सा यूं नहीं, जो तुमने लिखा है। बल्कि बात यह है कि इधर शहद की घटना घटी। इत्तिफ़ाक़ से उन्हीं दिनों हुज़ूर अलैहिस्सलाम के पैर में चोट आई जिससे आप चलने फिरने से रुक गए। इसलिए आप एक महीना के लिए अलग मकान में एकान्त वास हो गए। मगर आपके एकान्त वास होने से लोगों में मशहूर हो गया कि हुज़ूर ने पत्नियों को तलाक़ दे दी। इस पर हज़रत उमर आए और मालूम किया तो पता चला कि असल वजह हुज़ूर की बीमारी है। तुमने तो आर्यों को गुमराह करने की ठान रखी है। इसलिए किसी किताब का हवाला नहीं देते। मगर हम हवाला दिए बिना नहीं रह सकते। तो सुनो!

हज़रत सल्ल० के सुसर हज़रत उमर कहते हैं कि मेरे पास मेरा एक दोस्त आया उसने कहा :

طلق رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم لنسائہ۔ (بخاری جلد اول ص۳۳۴)

अर्थात हुज़ूर ने औरतों को तलाक़ दे दी है।

यह सुनकर मैं घबराया हुआ सही जानकारी के लिए निकला तो हुज़ूर को चोबारे में अकेले पाया। क्योंकि आपके पांव में चोट आई थी जिसके बारे में सहीह बुख़ारी के शब्द यह हैं :

اٰلیٰ رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم نسائہ وکانت انفکت رجلہ۔ فاقام فی مشربۃ لہٗ تسعا وعشرین (صحیح بخاری جلد دوم ص۹۱)

अर्थात हुज़ूर ने पत्नियों से अलेहदगी की। आप सल्ल० के पैर में घाव था। तो आप सल्ल० चोबारे में उन्तीस दिन अलेहदा ठहरे रहे।

समाजी मित्रो! अपने चौथे उसूल पर तुमको अगर पक्का यक़ीन है तो रंगीले महाशय और उसकी कम्पनी से इस दावे का सुबूत हमको लेकर दो कि :

> "इधर अबूबक्र नाराज़, उमर नाराज़, उसमान[1] नाराज़ कि एक लौंडी की ख़ातिर हमारी बेटियों को छोड़ रखा है।"
>
> (रंगीला, पृ० 43)

अगर वह इसका सुबूत न दे सके और हम कहते हैं कि निश्चय ही न देगा तो क्या फिर तुम्हारा फ़र्ज़ नहीं? कि जिस तरह तुमने गांधी जी के ख़िलाफ़ प्रस्तावों की भरमार की है ऐसे हानिकारक, समाज को बदनाम करने वाले, तुम्हारी जेबों से पैसे निकालने वाले लेखकों के विरुद्ध भी प्रस्ताव पास कर दो, याद रखो कि अगर ऐसा न करोगे, तो तुम्हारी सारी समाज में बदनामी हो जाएगी। जैसी कि हो रही है। क्यों?

---

1. पहले भी पृ० 41 पर हज़रत उसमान को हुज़ूर का ख़ुसर लिखा है। 12

बहुपत्नि विवाह

मुहम्मद पत्नियों वाला

मरहबा सय्यदे मक्की मदनी अरबी
दिल व जान बादे फ़िदायत चे अजब खुश लक़बी

रंगीले महाशय ने आख़िर अपने दिल का बुख़ार किताब के अन्त में निकाला कि सारा ग़म व ग़ुस्सा उसको हुज़ूर के बहुपत्नि विवाह पर है अर्थात उसने जो नतीजा निकाला उससे भी यही प्रकट होता है कि इसको न बूढ़ी पत्नी का दुख है, न जवान का सदमा, बल्कि दुख है तो बहुपत्नी विवाह का है। इसी लिए वह अपने दिल का बुख़ार इन शब्दों में निकालता है :

> "मुहम्मद को ऐसा कौन सा नाम दूं जिससे मुहम्मद की ज़िंदगी का फ़ोटो आंखों में उतर आए, पचास साल का था, जब ख़दीजा ने इंतिक़ाल किया। बासठ[1] साल का था जब स्वयं इंतिक़ाल किया। इस बारह साल की अवधि में दस औरतें कीं अर्थात सवा साल में एक। इन हालात में अगर मैं अपने रंगीले रसूल को पत्नियों वाला कह दूं तो क्या उचित न होगा, पत्नियों वाला कहा और मुहम्मद को पा लिया मुहम्मद के दिल को पा लिया। मुहम्मद की रूह को पा लिया।" (पृ० 28, 49, 51)

बहु पत्नी विवाह के मसले की फ़लासफ़ी हम तफ़्सीर सनाई भाग 2 में ज़ेरे आयत मुसन्ना व सलास विस्तार से लिख चुके हैं। इसका सारांश यह है कि क़ुदरती तौर पर मर्द और औरत में एक निस्बत है कि मर्द औरत को इस्तेमाल करने वाला और औरत इस्तेमाल की चीज़ है। इसके

1. महाशय की तारीख़ी जानकारी है कि तरेसठ साल को बासठ साल में ख़त्म करता है।

साइंटिफ़िक (फ़लसफ़ियाना) तर्क इसी जगह मौजूद हैं। तो जिस इस्तेमाल की चीज़ को जितनी और जैसी इस्तेमाल की चीज़ों की ज़रूरत हो, यथा शक्ति उतनी रख सकता है लेकिन आर्य महाशय को साइंटिफ़िक तर्कों से क्या काम, उनको उनके धर्म शास्त्र से मसला बहु पत्नी विवाह का हल हो जाना चाहिए।

तो वे सुनें

आर्यों और हिन्दुओं में मनु जी एक ऐसे बुज़ुर्ग, मज़हबी पेशवा गुज़रे हैं, जिनकी सेवा में इस ज़माने के बड़े बड़े ऋषियों ने हाज़िर होकर प्रार्थना की थी :

"ऐ भगवान इन सब वर्णों (ज़ातों) और वर्ण संकरों का धर्म ठीक ठीक हमसे कहिए क्योंकि

ऐ प्रभु! ख़्याल से बाहर और असीमित और प्राचीन वेद में बयान किए हुए जो अनेक प्रकार के कर्म हैं उनके असल मतलब के जानने वाले एक आप ही हैं।

(मनु स्मृति, अध्याय 1, वाक्य, 1-3)

आर्यों में मनु स्मृति की इतनी क़दर है कि स्वामी दयानन्द की सत्यार्थ प्रकाश इसी के हवालों से भरी पड़ी है। अगर मनु स्मृति के हवालों को अलग कर दिया जाए तो सत्यार्थ प्रकाश के पृष्ठ मुश्किल से इतने रह जाएंगे कि कुछ पतंग बन सकें।

मनु जी की सुनो!

यही मनु भगवान बहु पत्नी विवाह को ऐसी ख़ूबी से हल फ़रमाते हैं कि शायद, राजा की बाबत हिदायत है कि :

"राजा खाना खाकर औरतों के साथ महल में बहार करे।"

(अध्याय 7, वाक्य 221)

और सुनो!

"एक की दो पत्नियां हैं और छोटी पत्नी से लड़का पहले पैदा हुआ और बड़ी पत्नी से पीछे हुआ तो इस मक़ाम पर तक़्सीम हिस्सा किस तरह करना चाहिए। आगे के श्लोक में लिखेंगे।" (अध्याय 9, वाक्य 122)

और सुनो!

पहली औरत मौजूद हो और भिक्षा से दौलत उपलब्ध करके उस रुपये से दूसरी शादी कर ले तो उसको सिर्फ़ संभोग का आनन्द (समाजियो! सुनते हो) मिलता है और औलाद उसी की है, जिसने दौलत दी।" (अध्याय 11, वाक्य 50)

इन सब से अलग सुनो!

"अगर एक आदमी की चार पांच औरतें हों और उनमें से एक संतान वाली हो तो बाक़ी भी संतान वाली हैं। यह मनु जी का हुक्म है।" (अध्याय 9, वाक्य 183)

महाशय सज्जनो! धर्म शास्त्र को मानने वाला इस हुक्म के अन्तर्गत बहुपत्नी विवाह पर अगर अमल करे तो उसको भी वही नसीहत करोगे जो रंगीले महाशय ने की है। जिसके कठोरतम शब्द यह हैं :

"बहुत पत्नियां करने वालो देखो पैग़म्बरों की ज़िंदगियां शिक्षाप्रद हैं। अगर इस महानता के लोग अपनी ग़लत कारियों के बुरे अंजामों से नहीं बचे तो तुम अपनी करतूत के कड़वे फलों से अपने आपको महफ़ूज़ समझते हो। दशरथ का घर बर्बाद हुआ, मुहम्मद का दीन[1] बर्बाद हुआ। क्यों! इसी लिए कि बूढ़े होकर नई नवेलियों से शादियां कीं।" (रंगीला, पृ० 24)

---

1. अरब से चलकर पवित्र भूमि आर्यव्रत (हिन्द) में चला आया। यही तो बर्बादी का सुबूत है।

किस क़दर पागल है अल्लाह की शान! ऐसे लोग भी लेखक बन जाते हैं जो बयान का विषय भी नहीं जानते। शुरू बयान में ख़राबी की वजह बहु पत्नी विवाह को बताया है। अन्त में नई नवेली से शादी को कारण बनाया है। पहले बयान के मुताबिक़ अगर बूढ़ी औरतें भी अनेक होतीं तो हानिकारक था। आख़िरी बयान के मुताबिक़ एक नई नवेली पत्नी भी हानिकारक है क्या इतनी सी इबारत में इतना बड़ा उसूली मतभेद किसी सही दिमाग़ का काम है?

ख़ैर यह तो है लेखक की दिमाग़ी योग्यता का ज़िक्र अब हम उसके दावे की पड़ताल करते हैं "मुहम्मद का दीन बर्बाद हुआ।" दस्तूर है, इंसान दिन को जो इच्छा करता है रात को वही नज़र आती है। चाहे घटना में न हो। चूंकि ये लोग इस्लाम की दिल से बर्बादी चाहते हैं। इसलिए उसकी बर्बादी के सपने इनको आते हैं, वही उनके मुंह और क़लम से निकल जाते हैं। वरना दीने मुहम्मदी अगर निकाह नई नवेली (आइशा) से बर्बाद हुआ होता तो हिन्दुस्तान हां आर्यव्रत, हां हां पवित्र भारत भूमि मुसलमानों के क़दम क्यों चूमती और सच तो यह है कि तुम्हारे स्वामी को सत्यार्थ प्रकाश जैसी ज़बरदस्त किताब इस्लाम के विरुद्ध लिखने की ज़रूरत हुई? और तुम भी आज यह दिल शिकन रिसाला क्यों लिखते? कोई तुमसे यह न कहता कि भले आदमी! इस्लाम तो पैग़म्बर इस्लाम के बाद निरंतर बर्बाद हो चुका है। फिर तुम यह बेकार की हरकत क्यों करते हो? क्या सच है :

इस सादगी पर कौन न मर जाए ऐ ख़ुदा
लड़ते हैं और हाथ में तलवार भी नहीं

महाशय जी का इतिहास ज्ञान

इस पृष्ठ पर आप लिखते हैं :

"(मुहम्मद के) इसी गृह युद्ध ने मुहम्मद की वफ़ात के बाद

इस्लाम की तारीख़ को निरंतर रक्त पात की तारीख़ बना दिया।" (पृ० 24)

क्या कहते हैं? ख़िलाफ़त की बाबत लड़ाई न पहली ख़िलाफ़त में हुई, न दूसरी में, न तीसरी में। हां चौथी ख़िलाफ़त में हुई। तो इसकी वजह तीसरे हज़रत उसमान रज़ि० ख़लीफ़ा रज़ि० का क़त्ल था न कि घरेलू विवाद।

आख़िर आप स्वामी दयानन्द के चेले हैं, जिन्होंने सत्यार्थ प्रकाश प्रथम एडीशन 1875 ई० में लिख मारा था कि :

"महमूद ग़ज़नवी हिन्दुस्तान को लूटकर मक्का गया था।" (पृ० 321)

यद्यपि सुल्तान महमूद न मक्का गया न मदीना गया। इसी लिए आर्यों ने स्वामी जी की इस ग़लती का सुधार करने को प्रथम संस्करण के बाद के सारे एडीशनों में यह वाक्य ही उड़ा दिया बहुत अच्छा किया।

दूसरी मिसाल

स्वामी जी का इतिहास ज्ञान तो यह है कि आपने अमेरिका के अभिलाशी कोलम्बस को जो इटली का नागरिक था, इंगलिस्तान का नागरिक लिखा। अतएव आपके शब्द यह हैं :

"इंगलिस्तान के कोलम्बस आदि लोग जब तक अमेरिका में नहीं गए थे।" (सत्यार्थ प्रकाश उर्दू पहला एडीशन, पृ० 268)

आर्यों की होशियारी

आर्य समाजी चूंकि शिक्षित हैं उनको मालूम हो गया कि स्वामी जी ने सुने सुनाए ऐसा लिख दिया। इसलिए बाद के एडीशन में उसका सुधार यूं किया, बजाए इंगलिस्तान ख़ास के एक व्यापक शब्द लिख दिया। अर्थात यूं लिखा कि :

"यूरोप के कोलम्बस आदि लोग जब तक अमेरिका नहीं गए थे।" (सत्यार्थ चौथा एडीशन, पृ० 235)

हमारा रंगीला लेखक भी आख़िर स्वामी जी का चेला है। उन्होंने सुल्तान महमूद को मक्का शरीफ़ पहुंचाया तो महाशय ने ख़िलाफ़त पर घरेलू विवाद का असर पहुंचाया। (चश्मे बद्दूर) सच है :

लुत्फ़ पर लुत्फ़ है इमला में मेरे यार के यार
हा हुत्ती से गदह लिखता है हव्वज़ से हिमार

बहु पत्नी विवाह के बारे में हमारी हैरानी की कोई हद नहीं रहती जब हम इन वेदिक धर्म के श्रद्धालुओं से विरोध सुनते हैं। यद्यपि उनकी सर्वमान्य किताब धर्म शास्त्र में बहु पत्नी विवाह की इजाज़त मिलती है। जिसके सुबूत में हम कई एक हवाले ऊपर लिख चुके हैं।

आह! कैसा कलजुग है कि हिन्दू रक्षक कहलाकर धर्म शास्त्र का ऐसा अनादर करते हैं कि गौ भक्षक भी न करे। मनु जी महाराज तो चार पांच औरतों का ज़िक्र भी मिसाल के तौर पर बताते हैं। वरना उनके यहां तो कोई संख्या निश्चित नहीं। मगर आर्य महाशय हैं कि बहु पत्नी विवाह से डराते हैं। आह! इन हिमायतियों की हिमायत से हिन्दू धर्म ऐसा दुखी हो रहा है कि उसकी ज़बाने हाल से यह शेअर निकल रहा है :

दोस्त ही दुश्मने जान हो गया अपना हाफ़िज़
नोशदारो ने किया असरे सिम पैदा

हमारी दरिया दिली

महाशय सज्जनो! हमारी दरिया दिली देखो कि हम तुम्हारे असल दावे की पुष्टि करते हैं कि हमारे हुज़ूर पुर नूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम बड़े मर्द थे। मर्दान्गी के काम करते थे। चूंकि आप सल्ल० कामिल मर्द थे इसलिए निश्चय ही पत्नियों वाले थे। स्वयं क़ुरआन मजीद न सिर्फ़ हुज़ूर

को पत्नियों वाला बल्कि कुल अंबिया को पत्नियों वाला कहता है। ध्यान से सुनो!

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً (پ ۱۳، ع ۱۲)

हम (खुदा) ने (ऐ नबी) तुमसे पहले कई रसूल भेजे और उनको पत्नियां और औलादें दीं। (पारा 13, रुकूअ 12)

इसलिए कि समस्त अंबिया अलैहिमुस्सलाम मानव जाति के लिए नमूना बनकर आए हैं। वे अगर पत्नियां न करें तो सारी उम्मत न करेगी। जिससे नस्ले इंसानी का सिलसिला रुक जाएगा। तो पत्नियों वाला होना नबी के लिए ज़रूरी है। वरना दुनिया की तबाही व बर्बादी है :

हुस्ने यूसुफ़ दमे ईसा यदे बेज़ा दारी
आंचे ख़ूबां हमा दारन्द तू तन्हा दारी

दयानन्द वेदों वाला

रंगीले महाशय ने अपने गिर्द (स्वामी दयानन्द) को एक सम्मानित उपाधि दी है अर्थात वेदों वाला। अतएव उसके शब्द यह हैं :

> ''ऋषि दयानन्द का नाम पंजाब में वेदों वाला पड़ने लगा है। ऋषि का काम वेद, ऋषि का पैग़ाम वेद, ऋषि का जीवन, ऋषि की मौत, वेद के प्रकाशन का माध्यम हुई। ऋषि का सांस सांस वेद की क़िरअत थी। वेदों वाला मन भावना नाम है। यह नाम लिया और ऋषि के दिल को पा लिया। ऋषि की रूह को भांप लिया।'' (पृ० 48)

आर्य लेखक अपने अक़ीदे के बयान करने का हक़ रखता है। मगर जनता की राए की नियाबत करने का उसको कोई हक़ नहीं। आज तक किसी किताब या किसी अख़्बार या किसी ज्ञापन में स्वामी दयानन्द को

वेदों वाला नहीं लिखा गया। वेदों के इन्कारियों (देव समाजी और सिक्खों) की तरफ़ से जो दयानन्द जी के हक़ में विचार प्रकाशित हुए हैं उनका तो हमने जान बूझकर ज़िक्र नहीं किया। मगर वेदों के मानने वाले हिन्दुओं की राए व्यक्त करने से तो हम रुक नहीं सकते। क्योंकि महाशय जी ने उन सब (वेदों के मानने वालों) की तरफ़ से नियाबत की है। इसलिए आपको दिखाना है कि आपकी यह व्यक्तिगत राए है। क़ौमी और मुल्की नहीं। हिन्दुओं की तरफ़ से जो दयानन्द जी के बारे में लेख निकलते रहे हैं। उनमें बताया गया है कि स्वामी दयानन्द जी वेदों बल्कि वेदों के अलावा अन्य मज़हबी किताबों के हवाले भी ग़लत दिया करते थे। अतएव सनातन धर्म प्रचारक अमृतसर की तरफ़ से ट्रेक्टों के सिलसिले में ट्रेक्ट नम्बर 23 से हम दस गवाहियां नक़ल करते हैं। जिनसे मालूम हो सकेगा कि रंगीले महाशय का दयानन्द जी को वेदों वाला लिखना इस पद के चरितार्थ है :

समाजी दोस्तो! सनातन धर्मी पंडितों का लेख सुनो और ध्यान से पढ़ो!

(1) "पृ० 294, पंक्ति[1] 15

सवाल : दुनिया के आरंभ में एक या कई इंसान पैदा किए थे। या क्या?

जवाब : कई, क्योंकि जिन जीवों के कर्म ईश्वरीय स्रष्टि में पैदा होने वाले थे। उनकी पैदाइश शुरू दुनिया में परमेश्वर ने की।

<u>मन्शिया ऋषि असचा ये तत्व मन्शिया अजानीत</u> : यह यजुर्वेद में लिखा है।" (सत्यार्थ प्रकाश पृ० 294) यह प्रमाण जिस पर हमने लकीर खींच दी है। स्वामी साहब लिखते हैं कि :

---

1. ये पृष्ठ उर्दू सत्यार्थ प्रकाश प्रथम एडीशन के हैं।

यह यजुर्वेद में लिखा है, हमारा दावा है कि यजुर्वेद तो क्या चारों वेदों में नहीं। तो या तो समाजी यह प्रमाण यजुर्वेद में दिखा दें वरना स्वामी साहब को झूठा ठहरा दें। तो आर्य समाजियों को यह प्रमाण या शहादत यजुर्वेद में दिखलानी होगी। वरना स्वामी दयानन्द का वेद मन्त्र के शब्दों को उलट पलट कर एक मन्त्र बना लेना यह कौन सा ऋषिपन है? महर्षि मनु जी लिखते हैं कि वेद की निन्दा करने वाला नास्तिक है लेकिन जो वेद के नाम से बनावटी मन्त्र बनाता है, वह कौन है, बुद्धिमान समझ लें।

(2) पृ० 295 पंक्ति 20।

सवाल : इंसानों की पैदाइश किस स्थान पर हुई?

जवाब : त्री दस्टप में, जिसको तिब्बत कहते हैं।

स्वामी साहब का यह लिखना कि इंसान त्री दस्टप अर्थात तिब्बत में पैदा हुए ग़लत है। आर्य समाजियों का यह ख़्याल है कि जो बात वेद में लिखी गई होगी वह मानने योग्य, (क़ाबिले क़ुबूल) है तो हमारा दावा यह है कि स्रष्टि का तिब्बत में पैदा होना वेद तो अलग रहे किसी हमारे ऋषि ने भी नहीं लिखा, ऋषि तो अलग रहे बल्कि उसके बारे में कोई पुराना इतिहास या सुबूत जो आप्त परषों ने कहा हो। समाजियों के पास नहीं है। दूसरी बात जो स्वामी साहब ने लिखी है। वह और भी तनिक सोचने के लायक़ है। इसके अलावा झूठ कहने की पंडित, दयानन्द की कोष के बारे में भी अनभिज्ञता मालूम होती है। हमारा दावा है कि कुल संस्कृत की कोषों की पड़ताल कर लो तो त्री दस्टप के मायना तिब्बत कोष से न निकलेंगे।

(3) प्रहलाद की कथा भागवत से लिखते हुए पृ० 437 पंक्ति 8 में स्वामी साहब यूं लिखते हैं :

"तब उसने एक लोहे का सुतून आग में गर्म करके उससे कहा कि अगर तेरा उपास्य सच्चा है तो इसके पकड़ने से न जलेगा। प्रहलाद पकड़ने लगा दिल में सन्देह हुआ कि जलने से बचूंगा या नहीं।"

नारायण ने इस सुतून पर छोटी छोटी चींटियों की लाइन चला दी।"

हमारा यह दावा है कि श्री मद्भागवत में यह कदापि नहीं कि प्रहलाद को सन्देह हुआ और नारायण ने छोंटी छोटी चींटियों की लाइन चला दी। इससे साफ़ मालूम होता है कि स्वामी दयानन्द ने कदापि श्री मद्भागवत को नहीं पढ़ा।

(4) पृ० 437 पंक्ति 26 : पोतना और अकरूर के बारे में देखो।

(1) रथीं बायोबीगीन (2) जगाम गो कलिन्ग प्रति।

(नागरी बार द्वितीय तृतीय) सत्यार्थ प्रकाश में यह एक श्लोक है। उर्दू की दूसरी धारा में हवाला कोई नहीं है, तीसरी बार उर्दू में अलग अलग टुकड़े करके हवाला दिया है। लेकिन हमारा दावा सिर्फ़ यह है कि नागरी बार द्वितीय तृतीय में जो श्लोक है भागवत के नाम से (रथीं बायोबीगीन जगाम गो कलिन्ग प्रति) पर लिखा है। यह श्लोक भागवत में नहीं है।

(5) पृ० 404 पंक्ति 2। "वेद पढ़त ब्रहम्मा मरे चारों वेद कहानी। सन्त की महावेद न जाने ब्रहम ज्ञानी आप परमेश्वर।"

गुरु नानक जी को वेदों का दुश्मन क़रार देते हुए निम्न "तुक" उनकी तरफ़ से लिखी है। लेकिन हमारा दावा है कि गुरु नानक जी ने यह कदापि नहीं कहा और न गुरु ग्रंथ साहब या किसी विश्वसनीय ग्रंथ में यह तुक है।

(6) पृ० 104 पंक्ति 17 "वधुवानी चे रतनानी दोकते सो पावेत" तरह

तरह के जवाहिरात सोना आदि दोलत वोकत अर्थात सन्यासियों को देवें। मनु अध्याय 11। यह टुकड़ा जो मनु जी के नाम से लिखा है। कदापि मनु स्मृति में नहीं है चूंकि स्वामी साहब संन्यासी थे और वेदिक धर्म के अनुसार संन्यासी को दौलत आदि रत्न रखना मना है इसलिए स्वामी जी ने अपना मतलब सीधा करने के लिए महर्षि मनु जी के नाम से यह श्लोक लिखा। लेकिन हमारा दावा है कि इस तरह यह श्लोक मनु स्मृति में कदापि नहीं है।

(7) पंज महायुग बुद्धि में स्वामी साहब गायत्री मंत्र की निस्बत लिखते हैं कि यह मंत्र उसी प्रकार चार वेद में है। लेकिन हमारा दावा है कि मंत्र इस प्रकार अथर्वेद में नहीं है।

(8) पृ० 254 पंक्ति 23।

सवाल : आर्यव्रत की हद कहां तक है?

जवाब : मनु स्मृति के दो श्लोक दिए हैं। जिससे आर्यव्रत की सीमाओं को बतलाया गया है। अफ़सोस उसके दूसरे श्लोक में स्वामी जी ने ग़लत लेखनी से काम लिया है। पाठक तनिक ध्यान से देखें। मनु स्मृति निकालिए और स्वामी जी की पुस्तक भी निकालें। पहला श्लोक (22) जो आर्यव्रत की व्यापकता दिखलाने वाला है, वह अक्षर सही और ज्यों का त्यों ठीक ही है। लेकिन अगला श्लोक जो लिखा है उसमें आख़िरी हिस्सा श्लोक का फ़र्ज़ी बना दिया है। मनु स्मृति में शब्द ब्रहम्मा दरतम था। जिसकी जगह स्वामी दयानन्द ने आर्य दरतम बनाकर उस श्लोक को ही आर्यव्रत की व्यापकता दिखलाने वाला बना दिया है। जिससे स्वामी जी की धर्म के प्रति सच्चाई और ईमानदारी का पूरा सुबूत है।

(9) पृ० 55 पंक्ति 6, "पंज व नसत्ते तत्व दरशे पोमान नारी तो शोड़शे"। यह सुशरत के शरीर स्थान का लिखा है। हमारा दावा है

कि श्लोक सुशरत स्थान में नहीं है।

(10) पृ० 327 पंक्ति 15, "जब वेद मत को स्थापित कर चुके और ज्ञान फैलाने का विचार करने ही वाले थे कि इतने में दो अजनबी बाहर से नाम मात्र को वेद मत के हामी और अंदर से पक्के जैनी अर्थात कपटी मुनी थे। शंकराचार्य उन से अत्यन्त खुश थे। उन दोनों ने मौक़ा पाकर शंकाराचार्य को ऐसी ज़हरीली चीज़ खिला दी कि उनकी भूख कम हो गई। इसके बाद जिस्म में फोड़े होकर छः माह के अंदर मर गए।"

यह बात किसी विश्वसनीय इतिहास में नहीं है। किसी शंकर दिग्विजिए से यह साबित नहीं होता कि दो जैनियों ने स्वामी शंकाराचार्य को ज़हरीली चीज़ खिला दी। आर्य समाज को चाहिए कि ऐसी शंकर दिग्विजिए का पता लगाएं, वरना स्वामी दयानन्द जी को झूठा जान कर उससे किनारा करें। (सनातन धर्मी ट्रेक्ट नं. 23) मौसूमा, "स्वामी दयानन्द जी की दस बड़ी भारी ग़लतियां" लेखक महंत गोकुल दास मैनेजर सनातन धर्म प्रचारक मण्डल अमृतसर। (प्रकाशन सनातन धर्म प्रेस, अमृतसर)

यह तो हिन्दुओं की राए है जिसके हम ज़िम्मेदार नहीं। अब हम वेदों के बारे में स्वामी दयानन्द का बर्ताव अपनी ज़िम्मेदारी पर सुनाते हैं, ताकि मालूम हो सके कि महाशय की राए कहां तक सही है।

हिन्दुओं का प्राचीन काल से यह अक़ीदा चला आया है कि वेदों के दो हिस्से हैं (1) संगता (2) ब्रहम्मण। मगर स्वामी दयानन्द ने ब्रहम्मण हिस्से को वेदों से अलग करके ग़ैर इल्हामी क़रार दिया। देखो ऋग्वेद भूमिका लेखक दयानन्द जी, बहस "इस्तिलाह वेद"। तो क्या हिन्दुओं के अक़ीदे के अनुकूल वेदों को आधा करने वाला भी वेदों वाला कहला सकता है? हां "वेदों वाला" शब्द से अगर यह तात्पर्य हो कि वेदों को ख़राब करने वाला तो हिन्दुओं को भी शायद इस उपाधि पर आपत्ति न होगी।

स्वामी दयानन्द ब्रह्मचारी नस्ल विच्छेदक और क्रोध वाले थे

यह तो हिन्दुओं और आर्यों की आन्तरिक हालत है। अब हम अपनी तहक़ीक़ से एक नमूना स्वामी दयानन्द जी के बारे में बताते हैं। स्वामी जी की ज़िंदगी का प्रमुख तत्व यह है कि आप सारी उम्र ब्रह्मचारी रहे। मज़हबी रहनुमा अपने अनुसरण के लिए नमूना होते हैं। अगर सारे आर्य उनकी तरह ब्रह्मचारी रहें तो उनकी नस्ल का ख़ात्मा मालूम है। इसलिए हमारे शीर्षक का एक अंश आम सहमति से साबित है कि स्वामी दयानन्द नस्ल विच्छेदक थे। कौन नहीं जानता कि मज़हबी पेशवा वही हो सकता है जो अपने नफ़्स पर क़ाबू रखता हो। ख़ास मज़हबी और नैतिक मामलों में उस समय उसकी राए डगमगाए नहीं। यही समय उसकी परीक्षा का है। उन्हीं मायना में किसी अहले दिल ने ख़ूब कहा है :

अर्थात जिस तरह जोश मारने वाला दरिया मामूली कंकरियां मारने से मैला नहीं होता इसी तरह खुदा का आरिफ़ क्रोध में लिप्त नहीं होता। अगर हो तो समझो कि छोटे पानी में है।

महाशय सज्जनो! आओ इस पाक उसूल के मातहत हम स्वामी दयानन्द की ज़िंदगी का जायज़ा लें। स्वामी जी की आत्म कथा बड़ी सोच विचार करके लिखी गई है लेकिन उसमें स्वामी जी की ज़िंदगी के दो हिस्से हमको नज़र आते हैं। पहला हिस्सा शिक्षा से पूर्व जवानी का है उसकी बाबत तो कुछ कहने की ज़रूरत ही नहीं। कौन सी नैतिक बुराई है जो उस उम्र में स्वामी जी के ज़िम्मे नहीं हुई। ग़लत बयानी, बुरी संगत, यहां तक कि भंग आदि का अधिकता से इस्तेमाल, अतएव वह आप कहते हैं कि :

> "इस जगह मुझे बड़ा ऐब लग गया, अर्थात मुझे भंग के इस्तेमाल करने की आदत हो गई।" (सवानेह कलां, पृ० 19)

रंगीले महाशय ने हमारे हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम की नुबुवत से पहले पच्चीस साला ज़िंदगी पर भी आपत्ति की है। जिनकी वजह स्वयं

उसके दिल व दिमाग़ की ख़राबी है (देखें पृ० 38-39 उपरोक्त किताब) मगर हम उसके गुरु की पहली ज़िंदगी पर आलोचना नहीं करते। क्योंकि वह तो स्वयं अपने कथनानुसार स्वामी और आर्य इस क़ाबिल नहीं कि आलोचना हो बल्कि इस पद की तरह है :

तन हमा दाग़ दाग़ शद पिन बह कुजा कुजा नहम

इसलिए हम इस विषय के नीचे उनकी ज़िंदगी का वह हिस्सा लेते हैं जो उनकी रिफोर्मरी और धर्म के प्रचार का ज़माना है।

हमारा शीर्षक है कि स्वामी जी क्रोधित अर्थात ग़ुस्से वाले थे। इस दावे का सुबूत सुनिए, स्वामी जी की आत्म कथा में लिखा है :

> "दूसरे दिन स्वामी जी ने मूर्ति पूजा के खण्डन पर लैक्चर दिया। इसी में महमूद ग़ज़नवी का आना और उसके हमलों से देश के धन की हानि का विस्तार से वर्णन किया और मन्दिरों में औरतों के जाने और वहां की दुर्दशा का बयान किया जिसमें किसी व्यक्ति ने मकान की छत पर पश्चिम दिशा से यह सवाल किया कि आपने फ़रमाया कि स्त्री को चाहिए कि एक ही बार अपने पति के पास जाए अर्थात व्यभिचार न करे। मगर जिस का पति तवाइफ़ (कंजरी) के पास जाए उसकी औरत क्या करे। उन्होंने कहा कि उसकी औरत भी एक और मज़बूत सा आदमी रख ले।" (पृ० 355)

आर्य सज्जनो! स्वामी जी का वचन (कथन) मज़हबी हुक्म है? या गुस्से का प्रकटन। क्या कोई मज़हबी पेशवा, सच्चा रिफोर्मर, मार्ग दर्शक, क़ौम का नायक, ग़ुस्से में धर्म के ख़िलाफ़ ऐसा चरित्रहीन हुक्म दे सकता है। इसके अलावा हम नहीं जान सकते कि स्वामी जी को ग़ुस्सा किस बात का आया। सवाल बिल्कुल मामूली है इससे सख़्त और पेचीदा सवाल हम उपदेशकों और मौलवियों पर होते रहते हैं। मगर स्वामी जी के प्रकोपी

स्वभाव की एक मिसाल हम पहले इस किताब के पृ० 29 पर बता आए हैं। दूसरी यह है। आश्चर्य है स्वामी जी कितने प्रकोपी हैं।

ख़ुदा की क़सम हम हैरान हैं कि एक पाकदामन औरत को मात्र उसके पति की बेवक़ूफ़ी से मज़बूत सा आदमी रखने की इजाज़त बल्कि हुक्म देते हैं। दुनिया के सुधारने के इतिहास में हमें इसकी मिसाल नहीं मिलती। क्या सच है :

क़त्ल आशिक़ किसी माशूक़ से कुछ दूर न था
पर तेरे अहद से पहले तो यह दस्तूर न था

तो इन हवालों की बिना पर अगर स्वामी दयानन्द जी को नस्ल विच्छेदक और ग़ुस्से वाला कहा जाए, तो बेजा न होगा। ग़ुस्से वाला कहा और स्वामी जी को पाया :

इस नाज़नीन को देखना जोदत न छेड़ना
गर रूठ भी गया तो मनाया न जाएगा

मुनाजात बदरगाहे मुजीबुद्दावात

ऐ ग़फ़ूरुर्रहीम खुदा! तू जानता है कि मेरा ईमान है। हज़रत पैग़म्बरे खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हुज़ूर की पाक पत्नियां सब तेरे नज़दीक सच्चे बन्दे हैं इसलिए मैंने तेरे हुक्म :

كُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ

के अन्तर्गत तेरी ही मदद से उनकी तरफ़ से बचाव किया है तो तू ऐ मेरे दिल के हाल को जानने वाले खुदा इस सेवा के बदले में मुझे और जिन लोगों ने इसमें मेरी किसी प्रकार की मदद की है। हम सबको उन सच्चों के साथ मिला दे।

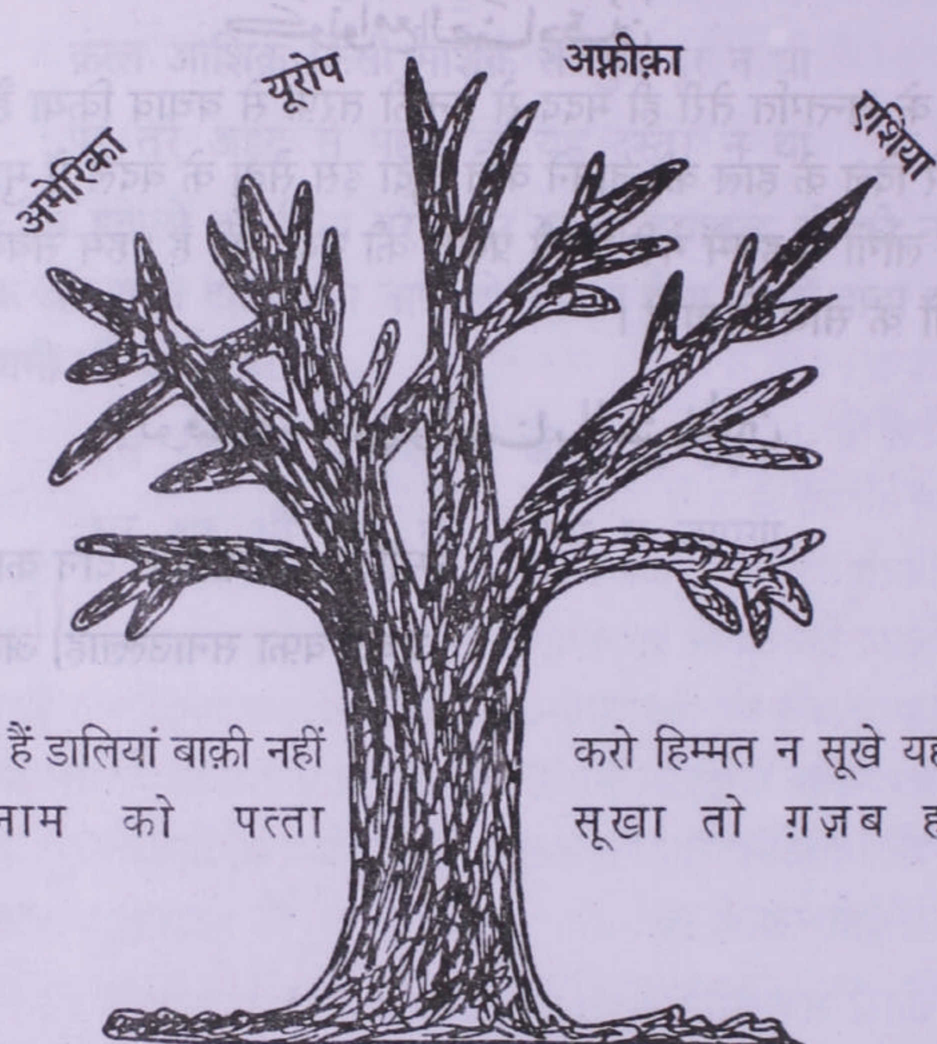
توفنا مسلمين والحقنا بالصّالحين

उम्मीदवाद मग़फ़िरत दीन का सेवक

अबुल वफ़ा सनाउल्लाह, अमृतसरी

मुसलमान भाइयों से संबोधित

इस्लाम का पेड़



फ़क़त हैं डालियां बाक़ी नहीं है नाम को पत्ता
करो हिम्मत न सूखे यह जो सूखा तो ग़ज़ब होगा

كشجرة طيبة اصلها ثابت وفرعها في السماء

(इस पवित्र पेड़ के बारे में अगले पृष्ठ पर देखिए)

पवित्र पेड़ से संबधित कविता

वह इस्लामी शजर जिसको पयम्बर ने लगाया था
वह इस्लामी शजर जिसको सहाबा ने बढ़ाया था
वह इस्लामी शजर सारे जहां पर जिसका साया था
रहा बाक़ी न जिसके फ़ैज़ से अपना पराया था
अब उसकी डालियों में एक भी बाक़ी नहीं पत्ता
करो हिम्मत न सूखे यह जो सूखा ग़ज़ब होगा
है उसकी बीख़ मक्का में हैं शाख़ें ता बिलोचिस्तां
जज़ाइर और हिन्द व चीन व जावा और तुर्किस्तां
बमुल्क रूस व ईरान व शाम और मिस्र व इंगलिस्तां
बचा हो कोई मुल्क उससे बताए तो कोई इंसां
वही तो है यह इक आलम ने जिससे फ़ैज़ पाया था
क़रीबुल मर्ग है, जिसने कि मुर्दों को जिलाया था
रहे ताइफ़ में हज़रत[सल्ल०] थक गए चलने से आरी
उहुद में दांत टूटे और दहन से ख़ून था जारी
कभी फ़ाक़ा में पत्थर पेट पर बांधे बिना चारी
उगाया उसको हज़रत ने उठाकर सख़्तियां सारी
सिखाए देती है अब उम्मत ख़ैरुल उमम देखो!
उसी के वारिसों से इस पर यह कैसा सितम देखो!
नहीं यह वह शजर जिसने कि पानी से ग़िज़ा पाई
सहाबा ने पिलाया ख़ून इसने परवरिश पाई!

बने माली अइम्मा इस लिए इस पर बहार आई!
हुए हम नाख़ल्फ़ ऐसे कि इसकी शक्ल मुरझाई
न वह ज़ीनत रही इसकी न वह इसका रहा साया
हमारी ग़फ़लतों ने इसकी पलटी इस क़दर काया
है इस नख़्ले मुक़द्दस को निकम्मों से पड़ा पाला
करो हिम्मत कि हो सब्ज़ फिर हो फूल फल वाला
जो होगी मुत्तफ़िक़ कोशिश खिलेगा फिर गुले लाला
हज़ारों ऐसी दुनिया में बहारें फिर के आई हैं
खिले हैं और खिल कर फिर घटाएं घिर के आई हैं
लगाएं बाग़ बाग़ीचे अलम इसका नहीं कुछ भी
उड़ाएं ख़ूब गुलछर्रे अलम इसका नहीं कुछ भी
हों लाख इस्लाम पर हमले अलम इसका नहीं कुछ भी
कहां तक यह शुतर ग़मज़े अलम इसका नहीं कुछ भी
न लेंगे हम ख़बर इसकी रहेंगे कब तलक ग़ाफ़िल
पशेमानी हो आख़िर में चरा कारे कुनद आक़िल
बताओ तो सही लिल्लाह इसका कौन वाली है!
नज़र जिस सिम्त करते हैं उधर मैदान ख़ाली है
तवज्जोह इस तरफ़ से हमने अब बिल्कुल उठा ली है
गए हम भूल चाल अपनी वह औरों ने उड़ा ली है
हमें तो अब फ़क़त बाहम जिदाल व जंग आती है
हमारे नाम से मज़हब को आर व नंग आती है
कहीं फ़रमान बारी भी किसी सूरत से टलते हैं

Muqaddas Rasool



एस0 एन0 पब्लिशर्स
मुरादी रोड, बटला हाउस
जामिया नगर, नई दिल्ली–110025
Ph.: 26986973 M. 9312508762

ISBN 81-922739-5-4
9788192273952

आर्यसमाज के सम्बन्ध में
इन्टरनेट पर उपलब्ध हिन्दी पुस्तकें

Hindi books
1. हक प्रकाश बजवाब सत्यार्थ प्रकाश : मौलाना सनाउल्ला अमृतसरी
2. सत्यार्थ प्रकाश समीक्षा की समीक्षा : सतीश चंद गुप्ता (New)
3. वेद और स्वामी दयानंद–हिन्दी : गाजी महमूद धर्मपाल
4. दयानंद जी ने क्या खोजा क्या पाया : डाक्टर अनवर जमाल
5. मुबाहिसा–ए–गोश्तखोरी हिन्दी: डाक्टर बशीर अहमद
6. चौदहवीं के चांद पर एक दृष्टि Article

Urdu books
1. हक प्रकाश बजवाब सत्यार्थ प्रकाश : मौलाना सनाउल्ला अमृतसरी
2. मुकददस रसूल : मौलाना सनाउल्ला अमृतसरी
3. तबर्रे इस्लाम बजवाब नखले इस्लाम : मौलाना सनाउल्ला अमृतसरी
4. तुर्के इस्लाम बजवाब तर्के इस्लाम : मौलाना सनाउल्ला अमृतसरी
5. स्वामी दयानंद और उनकी तालीमः खाजा गुलाम मुहम्मद हस्नेन (की 45 साल की महनत का नतीजा)
6. मुबाहिसा–ए–गोश्तखोरी उर्दू: डाक्टर बशीर अहमद
7. वेद का भेद : मौलाना सनाउल्ला अमृतसरी
8. कुफर तोड : गाज़ी महमूद धर्मपाल
9. बुत शिकन : गाजी महमूद धर्मपाल
10. वेद और स्वामी दयानंद–उर्दू: गाजी महमूद धर्मपाल
11. स्वामी दयानंद का इल्मो अकल : मौलाना सनाउल्ला अमृतसरी
12. मुनाजरा हैद्राबाद (आर्य समाजी विद्वानों से सनाउल्ला और दूसरे उलमाओं का सात दिन का मुनाजरा)
13. मुबाहिसा–ए– शाहजहांपुर (मौलाना कासिम साहब का स्वामी दयानंद और इसाई पादरियों से 3 दिन का एतिहासिक मुनाजरा)
14. यजुर्वेद के दर्शन–यानि यजुर्वेद का 24वां अध्याय : अब्दुल कबीर खान (पूर्व धर्मवीर जी आर्य) ने टाइटिल पर छपी जानकारी के मुताबिक कुरबानी के मुखालफीन के इत्मिनान के वास्ते 1926 में छपवाया।

सतीश चंद गुप्ता के ब्लाग पेर भी

Satishchandgupta.blogspot.in

उपरोक्त पुस्तकों के टार्गेट लिंक उपलब्ध हैं